जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

चूरू

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 17 संख्याः 27 प्रभात चूरू, रविवार 25 मई, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

थरूर विवाद पीछा नहीं छोड़ रहा, कांग्रेस का केरल में

विवाद की जड़, पीढ़ी परिवर्तन भी लगती है

- पुरानी पीढ़ी के नेता थरूर के वक्तव्यों को, पार्टी के परम्परागत, ''कमांड स्ट्रक्चर'' को चुनौती मानते हैं और पार्टी की एकता को चुनौती करार देते हैं।
- पर, नई पीढ़ी के नेता थरूर के आकर्षण को एक ''एसैट'' (ताकत) मानते हैं।
- केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के. सुधाकरण का मत है, ''कांग्रेस के हाईकमान ने गलती की, थरूर का नाम अपनी लिस्ट में नहीं दिया, जो उन्होंने सरकार को सौंपी थी, पार्टी के प्रतिनिधि के चयन के लिए। थरूर ने सदा देश के हित को ध्यान में रखकर काम किया है। अतः उनका नाम नहीं देना, थरूर के साथ अन्याय था।
- दूसरी ओर केरल कांग्रेस के अधिकांश परम्परावादी नेता मानते हैं कि थरूर का बार-बार मोदी व उनकी नीतियों की बढ़ाई करना, पार्टी के भाजपा के विरूद्ध एक ''युनाइटेड फ्रंट'' पेश करने के प्लान को कमज़ोर करता है।
- एक वरिष्ठ नेता, अपना नाम न देने की शर्त पर बोले कि बिहार के चुनाव की दृष्टि से बनाई गई पार्टी की रणनीति का आधार, मोदी की छवि को चुनौती देना है। विशेषकर ऑपरेशन सिंदूर के बाद जब मोदी ऑपरेशन सिंदूर को चुनाव का मुख्य मुद्दा बनाना चाहते हैं।
- मोदी बार-बार राहुल गांधी का मखौल बनाते हैं, केन्द्रीय सरकार के ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल उठाने की वजह से। इस मौके पर थरूर का सरकार की नीति से जुड़ना, भाजपा के हाथों में खेलना है।

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। भारत-पाक सीमा पर तनाव फिलहाल के लिए स्थिर नज़र आ रहा है, लेकिन कांग्रेस पार्टी के शशि थरूर द्वारा मोदी सरकार के एक आउटरीच मिशन के निमंत्रण को तुरंत स्वीकार किए जाने को लेकर कांग्रेस पार्टी में एक राजनीतिक तूफ़ान उठ खड़ा हुआ है। थरूर के इस कदम से पार्टी में उनके भविष्य को लेकर अटकलें शुरु हो गई हैं, खासकर केरल और दिल्ली में, जहाँ यह चर्चा जोरों पर है कि वे केन्द्र की भाजपा सरकार के साथ किसी संभावित समीकरण की दिशा में बढ़ रहे हैं।

तथापि, थरूर के समर्थक उनके बचाव में उतर आए हैं। केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष के. सुधाकरन ने सार्वजनिक रूप से थरूर का समर्थन किया और थरूर का नाम पार्टी प्रतिनिधियों की आधिकारिक सूची से हटाने को लेकर कांग्रेस नेतृत्व की आलोचना की। सुधाकरन ने कहा, ''थरूर ने हमेशा राष्ट्रीय हित में काम किया है और उन्हें दरकिनार करना अन्यायपूर्ण है।'' उन्होंने यह भी कहा कि पार्टी को ऐसे नेताओं को अलग-थलग नहीं करना चाहिए, जिनके पास जन समर्थन और अंतरराष्ट्रीय पहचान है।

इस मामले ने कांग्रेस की केरल इकाई के भीतर बढ़ती फूट को उजागर किया है। वरिष्ठ कांग्रेस नेता और केरल विधानसभा में विपक्ष के नेता वी. डी. सतीसन ने टिप्पणी करते हुए कहा, ''यह मामला पार्टी के केन्द्रीय नेतृत्व द्वारा सुलझाया जाना चाहिए। आंतरिक मतभेदों को सही मंचों पर हल करना आवश्यक है।''

पार्टी के भीतर के सूत्रों का कहना है कि केरल में कांग्रेस के एक बड़े वर्ग को थरूर द्वारा बार-बार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार की नीतियों की सार्वजनिक सराहना से नाराजगी है। उनका मानना है कि इस तरह की गतिविधियाँ भाजपा के खिलाफ कांग्रेस की एकजुट रणनीति को कमज़ोर करती हैं। एक वरिष्ठ कांग्रेस नेता ने, नाम न

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नाबालिग से दुष्कर्म : दो अभियुक्तों को 20 साल की सजा

जयपुर, 24 मई। जिले की पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने नाबालिग किशोरी से तीन साल के अन्दर दुष्कर्म करने वाले दो अभियुक्त दीपक और जगदीश को बीस साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही, अदालत ने दोनों अभियुक्तों पर कुल पांच लाख रुपए का जुर्माना भी लगाया है। पीठासीन अधिकारी केसी अटवासिया ने अपने आदेश में कहा कि एक अभियुक्त ने पीड़िता से दुष्कर्म कर उसे गर्भवती किया और दूसरा उससे तीन साल पहले दुष्कर्म कर चुका था। यौन अपराध का बाल मन पर गहरा असर होता है। ऐसे

- पॉक्सो मामलों की विशेष अदालत ने सांभर लेक के मामले में निर्णय सुनाया।

में अभियुक्तों के प्रति नरमी का रुख नहीं अपनाया जा सकता।

अभियोजन पक्ष की ओर से विशेष लोक अभियोजक विजया पारीक ने अदालत को बताया कि घटना को लेकर पीड़िता के पिता ने 12 फरवरी, 2022 को सांभर लेक थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। रिपोर्ट में कहा गया कि उसके 17.5 साल की बेटी पिछले कुछ माह से गुमसुम रहने लगी और उसका शरीर भी भारी लग रहा था। इसके साथ ही वह बार-बार उल्टियां भी कर रही थी। ऐसे में उसने अपनी भाभी के जरिए पुछवाया तो पीड़िता ने बताया कि उसके साथ दुष्कर्म हुआ है। पीड़िता ने कहा कि करीब तीन साल पहले जब वह पशु चरा रही थी तो जगदीश ने उसके साथ दुष्कर्म

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हार्वर्ड युनिवर्सिटी को अस्थायी राहत मिली

अन्य देशों के विद्यार्थियों को एडमिशन न देने के ट्रम्प के आदेश पर अस्थायी प्रतिबंध लगा

- अब, युनिवर्सिटी व अन्य देशों के लगभग सात हजार विद्यार्थी, जो हार्वर्ड में पढ़ रहे थे या रिसर्च कर रहे थे, को तुरन्त वापस नहीं जाना पड़ेगा। इनमें 700 विद्यार्थी भारतीय हैं।
- हार्वर्ड में कई दशकों से कैंसर पर रिसर्च चल रही है तथा मरीज़ों के मूत्र व खून के ''सैंपल'' प्रिज़र्व करके रखे गये हैं। ये सैंपल इस बीमारी पर रिसर्च करने के लिये अमूल्य निधि हैं। पर, इनको अशुद्ध न होने के लिये करोड़ों रूपए खर्च होते हैं।
- पर, अब हार्वर्ड की ''फण्डिंग'' कम कर देने से इन ''सैंपल'' का प्रिज़र्वेशन खतरे में पड़ जायेगा, जो मानव जाति के लिये असहनीय नुकसान होगा।
- दशकों पुराने इन सैंपल्स की कमी अब बहुत खलेगी, क्योंकि आधुनिक साधनों, जैसे ए.आई. से अब मौका मिला है मानव जाति के लिए अबूझ पहेली बनी, बीमारियों पर और गहराई से रिसर्च करने का।

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 24 मई। अंतरराष्ट्रीय छात्रों को शैक्षिणक पाठ्यक्रमों में दाखिला देने पर अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा लगाए गए प्रतिबंध से हार्वर्ड विश्वविद्यालय को अस्थायी राहत मिल गई है। यह खबर वर्तमान वर्ष के लगभग 7,000 छात्रों के लिए बड़ी राहत लेकर आई है, जो हार्वर्ड के विभिन्न कोर्सों में पढ़ रहे हैं। इनमें लगभग 700 छात्र भारतीय हैं, जो अपने छात्र वीज़ा खोने और देश लौटने की आशंका से जूझ रहे थे।

हालांकि विश्वविद्यालय और इसके अध्यक्ष के लिए यह एक तरह की जीत है, लेकिन युनिवर्सिटी और विदेशी छात्रों के लिए भविष्य की अनिश्चितता बरकरार है। संकेत मिल रहे हैं कि नए शैक्षिणक सत्र के लिए दाखिलों की संख्या में भारी गिरावट आई है।

चिंता यह भी है कि फिलहाल यह प्रयास विफल होने के बावजूद, ट्रंप प्रशासन अपने उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए फिर से कोई नया आदेश ला सकता है। छात्र समुदाय का कहना है कि इस तरह की कार्रवाई के बाद हार्वर्ड या अन्य अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जारी रखना कठिन हो सकता है।

कई छात्र हैरान और परेशान हैं कि हार्वर्ड में दाखिला लेना, जो जीवन भर का सपना होता है, शायद अब पूरा न हो पाए।

दाखिलों के अलावा, ट्रंप प्रशासन द्वारा शीर्ष अमेरिकी विश्वविद्यालयों के विरूद्ध उठाए गए अन्य कदम विज्ञान और वैज्ञानिक शोध परियोजनाओं के लिए बड़ा झटका साबित हो सकते हैं। इससे कुछ बुनियादी अनुसंधानों और विज्ञान के भविष्य को नुकसान होगा।

पूरी मानवता के लिए बेहद अहम एक अध्ययन दांव पर है। हार्वर्ड

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दोनों देशों ने ऑपरेशन पहलगाम के मुख्य ''नायकों'' को सम्मानित किया

पाकिस्तान ने जनरल असीम मुनीर को ''फील्ड मार्शल'' बनाया। भारत ने आईबी चीफ को एक साल का ''एक्सटैंशन'' दिया

- जाल खंबाता -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 24 मई। युद्ध मानवता के लिए सदैव नुकसानदायक ही रहा है। भारत और पाकिस्तान - दोनों ही पहलगाम हमले के बाद चार दिन चले संघर्ष में अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं।

इस बीच, आई बी चीफ तपन डेका को मोदी सरकार ने 1 वर्ष का सेवा-विस्तार (एक्स्टेन्शन) दे दिया है, जबकि कुछ लोग उन पर पहलगाम-नरसंहार में खुफिया तंत्र की असफलता का दोषारोपण कर रहे हैं। उन्हें एक्स्टेन्शन का यह पुरस्कार दूसरी बार दिया गया है और इस प्रकार वे इंटेलिजेंस ब्यूरो (आई बी) के सबसे ज्यादा लम्बे समय तक रहने वाले निदेशक बन गये हैं।

उधर, पाकिस्तान ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद हुई पाकिस्तान की शर्मनाक स्थिति के बाद, जनरल आसिम मुनीर को पदोन्नत कर दिया है। जिन्हें बर्खास्त किया जाना चाहिए था, वे पदोन्नत कर दिये गये हैं।

डेका के एक्स्टेन्शन के लिए सिफारिश करने वाले लोग बार-बार यह कहते रहे हैं कि तपन कुमार डेका क्रॉस-बॉर्डर टैररिज़्म के विशेषज्ञ हैं, उन्हें कश्मीर का लम्बा अनुभव है तथा पहलगाम आतंकी हमले के बाद की परिस्थिति में उनकी सेवाएं बहुत ज्यादा जरूरी हैं। लेकिन डेका के आलोचकों का कहना है कि आतंकवाद के एक ऐसे विशेषज्ञ, जिन्हें कश्मीर के आतंकी स्थलों की गहन जानकारी एवं समझ है, के होते हुए पहलगाम में इतना घातक नरसंहार कैसे हो गया?

ये लोग यह आरोप भी लगा रहे हैं कि डेका उन 26 निर्दोष लोगों की मौतों के लिए सीधे जवाबदेह हैं, जिन्हें सीमा-पार के आतंकियों ने नृशंसतापूर्वक गोलियों से उड़ा दिया। ये हत्यारे जबरदस्त संरक्षित नियंत्रण रेखा को पार कर पाकिस्तान से भारत में आखिर घुस कैसे आये, यही नहीं, उन्होंने भारत-भूमि पर करीब 200 किलोमीटर की दूरी भी तय करली, और तपन डेका नामक इस तथाकथित सुपर स्पाई की सीधी देख-रेख में काम कर रहे दुर्जेय बल को उनके बारे में पता नहीं चला?

पहलगाम दुखान्तिका के एक महीने बाद भी, भारतीय जमीन पर मौजूद ये पाकिस्तानी आतंकी ढूढ़े नहीं जा सके हैं। क्या यह एक बहुत ही बड़े स्तर एवं आकार की लापरवाही, अक्षमता नहीं है, जिसकी कीमत 26 निर्दोष भारतीयों ने अपनी जान देकर चुकाई है?

गाँव को नगर पालिका की सीमा से बाहर करने का आदेश स्थगित

जयपुर, 24 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने राज्य सरकार के गत 27 मार्च के उस आदेश को स्थगित कर दिया है, जिसके तहत राजस्व ग्राम तोडिया का बास को बानसूर नगर पालिका की सीमा से बाहर किया गया था। इसके साथ ही, अदालत ने मामले में प्रमुख स्वायत्त

- हाईकोर्ट में पेश याचिका के अनुसार नगर पालिका की सीमा में शामिल ग्राम को सीमा से बाहर करने की शक्ति नगर पालिका अधिनियम में नहीं है।

शासन सचिव, डीएलबी निदेशक, पंचायती राज सचिव, कोटपूतली-बहरोड़ कलेक्टर और नगर पालिका बानसूर सहित, अन्य को नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। जस्टिस अनिल उपमन की एकलपीठ ने ये आदेश स्थानीय निवासी बंसी राम व अन्य की ओर से दायर याचिका पर प्रारंभिक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

राहुल गांधी अस्पताल में भर्ती जे. एण्ड के. के पूर्व गवर्नर से मिलने गए

सतपाल मलिक 11 मई से अस्पताल में हैं तथा आजकल डायलिसिस पर चल रहे हैं

- राहुल गांधी ने कुछ देर सतपाल मलिक से बात की और कहा, सच के लिए लड़ाई में वे सतपाल मलिक के साथ हैं।
- 22 मई को सीबीआई ने तीन साल की जाँच-पड़ताल के बाद सतपाल मलिक के खिलाफ चार्जशीट पेश की न्यायालय में 2200 करोड़ रूपए की लागत से बनने वाले किरू हाइड्रो पावर प्रोजैक्ट में सिविल काम का ठेका देने के मामले में।
- राहुल गांधी ने पुंछ में पाकिस्तान के आतंकी हमले में मरे तेरह जनों के परिवार से भी मुलाकात की। कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष ने कहा, वे राहुल गांधी को पहले ही बुलाना चाहते थे, पर, उन्हें आने की इजाज़त नहीं मिल पाई थी।

- डॉ. सतीश मिश्रा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 24 मई। कांग्रेस नेता तथा लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कल शाम जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक की कुशल-क्षेम पूछने गये। ज्ञातव्य है कि मलिक काफी बीमार हैं तथा दिल्ली के आर एम एल अस्पताल में भर्ती हैं। आज सुबह राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में गये तथा इस महीने के शुरू में भारत-पाक संघर्ष के दौरान पाकिस्तान की गोलाबारी से प्रभावित परिवारों से मिले।

कल शाम साढ़े पांच बजे राम मनोहर लोहिया अस्पताल जाकर, राहुल गांधी ने मलिक की स्वास्थ्य संबंधी जानकारी ली तथा उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों से चर्चा की। मलिक 11 मई को अस्पताल में भर्ती हुए थे तथा इस समय डायलसिस पर हैं।

गांधी ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''आज मैं राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल में जम्मू-कश्मीर के पूर्व राज्यपाल सत्यपाल मलिक जी से मिला तथा उनकी स्वास्थ्य संबंधी जानकारी ली। आशा करता हूं कि वे शीघ्र ही ठीक हो जायेंगे। मैं सत्य की इस लड़ाई में उनके साथ खड़ा हूं।''

सूत्रों ने कहा, ''मलिक आज चार दिन बाद होश में आये। वे आई सी यू में भर्ती हैं तथा राहुल ने कुछ मिनट उनसे बातचीत की।''

22 मई को सी बी आई ने मलिक तथा पांच अन्य के खिलाफ किरू हाइड्रो पावर प्रोजेक्ट के लिए दिये गये 2200 करोड़ रु. के सिविल वर्क्स के ठेके में कथित अनियमितताओं को लेकर चार्जशीट पेश की। तीन साल तक की जांच-पड़ताल के बाद, एक विशेष अदालत में मलिक तथा अन्य आरोपियों के खिलाफ यह चार्जशीट पेश की गई है।

कांग्रेस सांसद राहुल गांधी आज सुबह जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में गये तथा वहां इस महीने के शुरू में भारत-पाक संघर्ष के दौरान पाकिस्तानी गोलाबारी से प्रभावित हुए परिवारों से मिले।

विदित ही है कि जम्मू-कश्मीर के पर्यटन केन्द्र पहलगाम के पास बैसारण में इस्लामाबाद समर्थित आतंकियों द्वारा पर्यटकों पर किये गये एक घातक हमले के बाद, भारत और पाकिस्तान बड़े और पूर्ण युद्ध के कगार पर पहुंच गये थे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सेवारत कोटे से पीजी करने वालों का ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन क्यों नहीं

जयपुर, 24 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने सेवारत कोटे में मेडिकल पीजी डिप्लोमा कर रहे प्रार्थी का ऑनलाइन पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन नहीं करने पर प्रमुख चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सचिव और निदेशक, नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जाम सहित अन्य से जवाब तलब किया है। जस्टिस समीर जैन ने ये आदेश डॉ. संजय

- हाईकोर्ट ने प्रमुख चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सचिव तथा निदेशक नेशनल बोर्ड ऑफ एग्ज़ाम से जवाब मांगा।

शर्मा की याचिका पर दिए। याचिका में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि याचिकाकर्ता ने इन सर्विस अभ्यर्थी के तौर पर साल 2023 में नीट पीजी परीक्षा दी थी। उसे मेरिट में आने पर काउंसलिंग के जरिए अक्टूबर 2023 में राजकीय सामान्य चिकित्सालय सवाई माधोपुर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'विकसित राजस्थान 2047 का विज़न डॉक्युमैंट तैयार हो रहा है'

मुख्यमंत्री भजनलाल ने नीति आयोग में जल व ऊर्जा सुरक्षा के लिए अधिक सहयोग का अनुरोध किया

- मुख्यमंत्री ने ऊर्जा सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए बैट्री स्टोरेज के लिए 5000 मेगावॉट आवर का अतिरिक्त लक्ष्य आवंटित करने तथा 40 गीगावॉट अतिरिक्त ऊर्जा के इवेक्युएशन हेतु प्लान तत्काल बनाने का अनुरोध किया।
- उन्होंने कहा कि पौंग बाध में पूर्ण क्षमता तक जल भराव के लिए शीघ्र निर्णय लिया जाये तथा 51.5 किलोमीटर लम्बी फिरोजपुर फीडर की लाइनिंग के लिए स्वीकृति प्रदान की जाये।

नई दिल्ली/जयपुर, 24 मई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा शनिवार को नई दिल्ली के भारतमंडपम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में नीति आयोग की शासी परिषद की दसवीं बैठक में शामिल हुए। मुख्यमंत्री शर्मा ने बैठक में विकसित राजस्थान के संकल्प को पूरा करने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की विस्तार से चर्चा की और प्रदेश में जल और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए केन्द्र सरकार से अधिक सहयोग का भी अनुरोध किया।

बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार विकसित राजस्थान का लक्ष्य हासिल करने के लिए हर पहलू पर तेजी से काम कर रही है। इसी दिशा में आर्थिक समृद्धि, सतत् विकास और समावेशी प्रगति को केन्द्र में रखते हुए नीति आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुरूप 'विकसित राजस्थान 2047' विजन डॉक्यूमेंट तैयार किया जा रहा है। उन्होंने रामजल सेतु लिंक परियोजना तथा यमुना जल समझौते को मूर्त रूप देने के लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ये जल परियोजनाएं विकसित राजस्थान के संकल्प को साकार करने में अहम भूमिका निभाएंगी।

मुख्यमंत्री ने बैठक में केन्द्र सरकार से अनुरोध करते हुए कहा कि पोंग बांध की कुल भराव क्षमता 1400 फीट ऊंचाई तक अनुमत है, लेकिन पर्याप्त वर्षा के दौरान भी इस बांध में अधिकतम सीमा तक जल भराव नहीं किया जा रहा है। पोंग बांध को पूर्ण क्षमता तक जल भराव करने के संबंध में शीघ्र निर्णय लिया जाए, जिससे भागीदार राज्यों को

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित नीति आयोग की शासी परिषद की दसवीं बैठक में शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने राजस्थान से जुड़े मुद्दों और मांगों को रखा।

सायबर ठगी में बैंक खाता नहीं विवादित राशि फ्रीज़ करें

जयपुर, 24 मई। राजस्थान हाईकोर्ट ने कहा है कि साइबर ठगी के मामले में उपभोक्ता के पूरे बैंक खाते को फ्रीज करने के बजाए खाते में आई विवादित राशि को ही फ्रीज किया जाना चाहिए। इसके साथ, ही अदालत ने आईसीआईसीआई बैंक को निर्देश दिए

- हाईकोर्ट ने आई.सी.आई.सी.आई. बैंक को याचिकाकर्ता के बैंक खाते को डीफ्रीज़ करने के निर्देश दिये।

हैं कि वह याचिकाकर्ता के बैंक खाते को डीफ्रीज करे और सिर्फ खाते में आए विवादित 55,141 रुपए की फ्रीज करे। अदालत ने कहा कि याचिकाकर्ता जांच में बैंक और अनुसंधान अधिकारी का सहयोग करें। वहीं, जांच लंबित रहने के दौरान खाते को बंद भी नहीं किया जाए।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

वह जो अपने प्रियजनों से अत्यधिक जुड़ा हुआ है। उसे चिंता और भय का सामना करना पड़ता है। क्योंकि सभी दुःखों कि जड़ लगाव है। इसलिए खुश रहने कि लिए लगाव छोड़ दीजिये। –चाणक्य सुविचार

व्याधिक्षमत्व क्या है?

लगभग 5000 वर्ष पूर्व की बात है। भगवान आत्रेय के शिष्य अग्निवेश ने अपने गुरु से एक प्रश्न किया: भगवन! देखने में आता है कि हितकारी आहार का उपयोग करते हुये भी कुछ लोग रोगी हो जाते हैं, जबकि अहितकारी आहार लेते हुये भी कुछ लोग निरोगी देखे जाते हैं। ऐसी स्थिति में क्या अच्छा है और क्या बुरा इसकी पहचान कैसे की जाये? इस प्रश्न का जो उत्तर आत्रेय ने दिया, वह आज भी यथावत विज्ञान-संगत है। आत्रेय का उत्तर था:–अग्निवेश! हितकारी आहार करने वाले लोगों में आहार के कारण होने वाले रोग उत्पन्न नहीं होते और हितकारी आहार लेने मात्र से समस्त रोगों का भय दूर नहीं हो जाता। हानिकारक भोजन के अलावा भी रोगों के तमाम कारण, जैसे ऋतुओं का विपरीत होना, प्रज्ञापराध या जानबूझकर गलती करना, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध का अतियोग, मिथ्या योग एवं विषम योग आदि ऐसे कारण हैं जो उचित भोजन लेने के बावजूद भी मनुष्य को बीमार कर देते हैं। इसीलिये हितकारी आहार लेने वाले रोगी हो जाते देखे जाते हैं। हानिकारक आहार का उपयोग करने वालों में पथ्य, आहार, व शरीर की स्थिति में भिन्नता होने से हानिकारक आहार तुरन्त हानि नहीं पहुंचा पाते। सभी अपथ्य बराबर दोष वाले नहीं होते, न ही सभी दोष बराबर बलवान होते, और न सभी शरीर व्याधिक्षमत्व या रोग प्रतिरोधक क्षमता से संपन्न होते (न च सर्वाणि शरीराणि व्याधिक्षमत्वे समर्थानि भवन्ति। च.सू.28.7)। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि एक ही अपथ्य आहार जगह, समय, संयोग, वीर्य, व मात्रा की भिन्नता के कारण या ज्यादा खा लेने से और अधिक अपथ्य हो जाता है। वही दोष विविध कारणों से, विरुद्ध चिकित्सा वाला, धातुओं में पहुंचा हुआ, शरीर के प्राणायतनों में उत्पन्न, मर्म पर चोट करने वाला, अत्यंत कष्टदायी अतिशय जल्दी रोगों को उत्पन्न करने वाला होता है। अंत में आत्रेय यह भी बताते हैं कि मूल रूप से शरीर की बनावट भी नैसर्गिक व्याधिक्षमत्व पर प्रभाव डालती है। बहुत मोटे या बहुत दुबले लोग, रक्त, मांस, व अस्थियों के सुसंगठित न होने के कारण बेडौल शरीर वाले लोग, दुर्बल, अल्पसत्त्व या कमजोर मनोबल वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता नहीं होती। जबकि इनके उलट लक्षणों वाले लोगों में रोगों को सहने की क्षमता होती है। इन अपथ्य आहारों, दोषों व शरीर की भिन्नता के कारण बीमारियाँ भी कम या ज्यादा, जल्दी या देर से उत्पन्न होती हैं।

अब आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि क्यों कुछ लोग प्रायः कभी बीमार नहीं पड़ते। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जिनमें जीवन के अंतिम दिन तक लगभग सभी क्लिनिकल पैरामीटर्स सामान्य बने रहते हैं। जैसा कि आपने पूर्व में पढा, वस्तुतः इस चमत्कार के पीछे कोई चमत्कार नहीं बल्कि व्याधिक्षमत्व है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक व्याधिक्षमत्व सिद्धांत-प्रिन्सिपल ऑफ़ इम्यूनिटी-के जनक माने जाते हैं।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है। मानसिक बीमारियों के सन्दर्भ में सत्त्व गुण जितना अधिक होगा, व्याधिक्षमत्व उतना ही बेहतर होगा। शरीर में सहज व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में यह बात महत्वपूर्ण है कि शरीर में दुरुस्त मांसपेशियों, संरचना, स्वरुप व मज़बूतइन्द्रियों वाला व्यक्ति रोगों के बल से कभी प्रभावित नहीं होता। भूख, प्यास, ठंडी, गर्मी, व्यायाम को ठीक से सहन करने वाला, सम अग्नि वाला, बुढापे की उम्र में ही बूढा होने वाला, मांसपेशियों के सही चय वाला व्यक्ति ही स्वस्थ है (च.सू.21.18): सममांसप्रमाणस्तुसमसंहननोनरः। दृढेन्द्रियोविकाराणां न बलेनाभिभूयते।।क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्तासमजरः सममांसचयोमतः।।

आधुनिक वैज्ञानिक संदर्भ में व्याधिक्षमत्व को इम्यूनिटी कहा जाता है। यह प्रतिरक्षा तंत्र संक्रमण, बीमारी या अन्य अवांछित तत्वों के आक्रमण से बचने के लिये शरीर को सुरक्षा प्रदान करता है। किसी व्यक्ति में व्याधिक्षमत्व में कमी होने से शरीर इम्यूनो-कॉम्प्रोमाइज्ड स्थिति में आ जाता है। ऐसी स्थिति में शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगजनन आसानी से होता है। इम्यूनिटी किसी व्यक्ति के शरीर में विशिष्ट एन्टीबॉडी या श्वेत रक्त कौशिकाओं की क्रिया से किसी विशेष संक्रमण, विषाक्त पदार्थ या हानिकारी जीवन-शैली से होने वाले रोगों का प्रतिरोध करने की क्षमता के रूप में समझा जाता है।

जिस व्यक्ति का सहज (इनेट) या युक्तिकृत (डेराइव्ड) व्याधिक्षमत्व मज़बूत है वह मुश्किल से ही बीमार पड़ता है। यदि बीमार पड़ भी जाये तो बीमारी अपना बल मुश्किल से ही दिखा पाती है। व्याधिक्षमत्व में दो शब्द निहित हैं, व्याधि एवं क्षमत्व। व्याधि का तात्पर्य शरीर की धातुओं (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र) में विषमता उत्पन्न होना है। क्षमत्व से तात्पर्य इस विषमता को न होने देने की क्षमता है।

व्याधिक्षमत्व को परिभाषित करते हुये चरकसंहिता के दिग्गज टीकाकार आचार्य चक्रपाणि ने लगभग 900 साल पहले लिखा (च.सू. 28.7 पर चक्रपाणि): व्याधिक्षमत्वं व्याधिबलविरोधित्वं व्याध्युत्पादप्रतिबन्धकत्वमिति यावत्। तात्पर्य यह है कि व्याधिबल की विरोधिता व व्याधि की उत्पत्ति में प्रतिबंधक होना व्याधिक्षमत्व है। अभिप्राय यह है कि शरीर में उत्पन्न बीमारी केबल या तीक्ष्णता को रोकने और बीमारी की उत्पत्ति को रोकने वाली क्षमता को व्याधिक्षमत्व कहा जाता है।

व्याधिक्षमत्व को बल, ओज और प्राकृत श्लेष्मा के रूप में भी जाना जाता है। बल वह शक्ति है जिसके द्वारा शरीर विभिन्न चेष्टाओं से कार्य संपन्न करता है। इस कार्योत्पादक शक्ति को व्यायाम-शक्ति से जाना देखा जाता है। बल के तीन प्रकार हैं (च.सू.11.36): त्रिविधंबलमिति- सहजं, कालजं, युक्तिकृतं च। सहजंयच्छरीरसत्त्वयोः प्राकृतं, कालकृतमृतुविभागजंवयः कृतं च, युक्तिकृतंपुनस्तद्यदाहारचेष्टायोगजम्। बल तीन प्रकार के होते हैं। सहज बल शरीर और मन पर आधारित होता है। उम्र के साथ शरीर की वृद्धि से प्राप्त बल को कालज बल कहा जाता है। खान-पान, जीवन-शैली और व्यायाम आदि की युक्ति से प्राप्त बल को युक्तिकृत बल कहा जाता है। रोग से रक्षा करने वाले को बल कहा जाता है। व्याधिक्षमत्वको ओज और ओज को बल के रूप में भी समझा जाता है (सु.सू.15.19) रसादीनांशुक्रान्तानां धातूनांयत्परंतेजस्तत्खल्वोजस्त देवबलमित्युच्यते स्वशास्त्रसिद्धान्तात्। रसादिक तथा शुक्रान्त धातुओं के उत्कृष्ट सार भाग को ओज कहते हैं तथा आयुर्वेद के अनुसार उसी का दूसरा नाम बल है। यही बल व्याधियों से शरीर की रक्षा करता है। यहाँ एक बात समझना आवश्यक है ओज और बल हालाँकि एक कहे गये हैं किन्तु ओज को कारण और बल को कार्य माना जाता है। ओज का रूप, रस और वर्ण होने से द्रव्य है जबकि बल इसका कार्य है। यहाँ व्याधिक्षमत्व के सन्दर्भ में बल (कार्य) और कारण (ओज) को एक मान लिया जाता है। इसी सन्दर्भ में प्राकृत कफ को बल या व्याधिक्षमत्व का कारण माना जाता है (च.सू.17.117): प्राकृतस्तुबलं श्लेष्मा विकृतो मल उच्यते। स चैवौजःस्मृतःकाये स च पाप्मोपदिश्यते।। यही कारण है कि कफज प्रकृति में उत्तम बल, पित्तज प्रकृति के व्यक्तियों में मध्यम बल तथा वातज प्रकृति के व्यक्तियों में अवर बल होता है।

इस प्रकार व्याधिक्षमत्व का तात्पर्य व्याधि-बल का विरोध शरीरगत बल द्वारा किया जाता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले विभिन्न भावों को दशविधि रोगी परीक्षा के भावों में भी देखा जाता है। उदहारण के लिये व्यक्ति की मूल प्रकृति का बल से सीधा सम्बन्ध होता है। सबसे उत्तम सम प्रकृति (वात-पित्त-कफज) है, परन्तु किसी जनसंख्या में समप्रकृति वाले बहुत कम होते हैं। अतः व्यवहार में कफ प्रकृति वालों को बेहतर बल वाला माना जाता है। इसके साथ ही सार भी बल को प्रभावित करता है। सारयुक्त से तात्पर्य यह है कि व्यक्ति में साररूप धातुओं का नियमित निर्माण होता है। सार धातुओं के सम्यक प्रकार से उत्पन्न होते रहने पर शरीर में व्याधिक्षमत्व बढ़िया बना रहता है। जैसा कि पूर्व में चर्चा की गयी है, बल का मुख्य कारक ओज है जो सभी धातुओं का सार है। साररूप में यह सभी धातुओं में व्याप्त होकर धातुओं की रक्षा करता है। व्याधिक्षमत्व को प्रभावित करने वाले अन्य भावों में सात्म्य, सत्त्व, अग्नि, शारीरिक-शक्ति व वय हैं। अग्निबल को आहार करने की क्षमता से परखा जा सकता है। आहार-शक्ति (आहार की मात्रा) अग्निबल पर आश्रित है। यदि व्यक्ति की आहार शक्ति मज़बूत है तो भोजन का पाचन और धातुओं की पुष्टि यथोचित होने से शरीर मज़बूत रहता है। व्यायाम-शक्ति या शारीरिक रूप से श्रम करने की शक्ति भी बल का संकेतक है। व्यक्ति की वय या उम्र का भी बल से संबंध होता है। युवावस्था में उत्तम बल और जरा या बुढ़ापा आने पर बल कम रहता है।

व्याधिक्षमत्वकारोगों से बचाव और उपचार में अनिवार्यता को देखते हुये यह प्रश्न स्वाभाविक है कि व्याधिक्षमत्व को बढ़ाने के लिये कौन सी युक्ति का क्रियान्वयन किया जाये? व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये बल व ओज की वृद्धि में सहायक द्रव्यों और क्रियाओं का इस प्रकार युक्तिपूर्वक नियमित सेवन करना चाहिये, जिससे व्याधिक्षमत्व का संरक्षण व वृद्धि हो किन्तु प्रकृति, अग्नि, धातुओं व मलक्रिया का समत्व तथा आत्मा, इन्द्रियों व मन की प्रसन्नता यथावत बनी रहे। यह विषय इतना विस्तृत है कि पूरा आयुर्वेद इसमें समाहित है। तथापि संक्षेप में व्याधिक्षमत्व बढ़ाने के लिये सात रक्षा-दीवारों की निरंतर और सम्यक सार-सम्हाल करना आवश्यक है। इनमें (1) आहार या खानपान, (2) विहार या जीवनशैली, (3) स्वस्थवृत्त या व्यक्तिगत स्वास्थ्य विषयक क्रियायें, (4) सद्वृत्त या व्यक्तिगत सदाचरण, (5) पंचकर्म या शारीरिक विषाक्तता को बाहर करने के लिये आयुर्वेद की पांच प्रक्रियायें, (6) रसायन या उम्र-आधारित रोगजनन को रोकने हेतु कायाकल्प उपाय, और अंततः (7) औषधि या चिकित्सा शामिल हैं।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

शराब पीने वाले का दोष या उसके जीन्स?

अशोक कुमार

यह सच है कि कुछ लोगों में आनुवंशिक भिन्नताओं के कारण शराब के प्रति सहनशीलता अधिक होती है। इसका मतलब है कि उन्हें शराब के प्रभाव महसूस करने के लिए अधिक मात्रा में शराब की आवश्यकता होती है। यह स्थिति उन्हें अधिक शराब पीने के लिए प्रेरित कर सकती है, जिससे शराब की लत का खतरा बढ़ जाता है।

शराब के चयापचय में शामिल जीन:–

ADH (Alcohol dehydrogenase): यह एंजाइम शराब को एसिटाल्डिहाइड में परिवर्तित करता है, जो एक विषैला पदार्थ है। कुछ लोगों में ADH जीन के प्रकार के कारण यह प्रक्रिया तेजी से होती है, जिससे एसिटाल्डिहाइड का निर्माण अधिक होता है।

ALDH (Aldehyde dehydrogenase): यह एंजाइम एसिटाल्डिहाइड को एसिटिक एसिड में परिवर्तित करता है, जो कम हानिकारक होता है। कुछ लोगों में ALDH जीन के प्रकार के कारण यह प्रक्रिया धीमी होती है, जिससे शरीर में एसिटाल्डिहाइड जमा होता है। एसिटाल्डिहाइड के कारण मतली, उल्टी और अन्य अप्रिय प्रभाव होते हैं, जो शराब पीने की मात्रा को सीमित कर सकते हैं।

आनुवंशिक कारकों का प्रभाव:–

कुछ लोगों में, इन जीनों में भिन्नता के कारण, शराब का चयापचय धीमा हो सकता है, जिससे वे अधिक शराब पीते हैं और उन्हें कम नशा होता है। यह स्थिति शराब की लत के विकास के जोखिम को बढ़ा सकती है। इसका मतलब है कि उनके शरीर को शराब को संसाधित करने में अधिक समय लगता है, जिससे वे अधिक शराब पी सकते हैं ताकि वे वही प्रभाव महसूस कर सकें जो अन्य लोग कम मात्रा में शराब से महसूस करते हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आनुवंशिकी शराब की लत का एकमात्र कारण नहीं है।

अन्य महत्वपूर्ण कारक:–

पर्यावरण: बचपन के अनुभव, सामाजिक दबाव और तनाव जैसे पर्यावरणीय कारक भी शराब की लत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

व्यक्तिगत विकल्प: व्यक्ति के अपने निर्णय और व्यवहार भी शराब की लत में योगदान करते हैं।

निष्कर्ष:– यह कहना सही नहीं है कि किसी व्यक्ति का शराब के प्रति अधिक सेवन पूरी तरह से उसके जीन्स के कारण होता है। आनुवंशिकी एक भूमिका निभाती है, लेकिन पर्यावरणीय और व्यक्तिगत कारक भी महत्वपूर्ण हैं। शराब की लत एक जटिल स्थिति है जिसके लिए एक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

970 इंग्लिश स्कूलों में संकाय मंजूरी के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश होंगे

कक्षा 11 में संकाय स्वीकृति के लिए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाए

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा निदेशालय ने स्कूलों में संकाय स्वीकृति के प्रस्ताव राज्य सरकार को भेजे राज्य के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया 7 मई से शुरू कर दी गई है, लेकिन प्रदेश के लगभग 970 इंग्लिश स्कूलों में 11वीं कक्षा के प्रवेश की प्रक्रिया संकाय स्वीकृति के बाद शुरू की जाएगी।

जानकारी के अनुसार राज्य सरकार की ओर से शिक्षा सत्र 2021-22 में शुरू किए गए इन स्कूलों में नई शिक्षा सत्र 2025-26 से 11वीं कक्षा शुरू होगी। कक्षा 11 में संकाय स्वीकृति के लिए माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने राज्य सरकार को प्रस्ताव भिजवाए हैं। प्रस्ताव पर स्वीकृति मिलने के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश का विद्यार्थियों को मौका मिलेगा। संभावना जताई जा रही है कि अधिकांश स्कूलों में विज्ञान संकाय की स्वीकृति मिल सकती है।

■ **प्रस्ताव पर स्वीकृति मिलने के बाद 11वीं कक्षा में प्रवेश का विद्यार्थियों को मौका मिलेगा, संभावना जताई जा रही है कि अधिकांश स्कूलों में विज्ञान संकाय की स्वीकृति मिल सकती है**

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों की समीक्षा के लिए गठित कमेटी ने आंकलन किया कि शहर व गांवों में आंकलन के बाद संकाय खोले जाएं। वहीं बच्चों में विज्ञान विषय पढ़ने के प्रति क्रेज और विज्ञान संकाय की न्यूनता को देखते हुए विज्ञान संकाय खोलने की अनुशंसा की है। इसके तहत महात्मा गांधी इंग्लिश स्कूलों में साइंस फैकल्टी खोले जाने की संभावना अधिक है। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया चल रही है अभ्यर्थी 15 जून तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। निर्धारित सीटों से अधिक आवेदन आने पर 17 जून को ऑनलाइन लॉटरी के जरिए अभ्यर्थियों का चयन किया जाएगा।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर ने 12वीं कक्षा के नतीजे गुरुवार को घोषित कर दिए हैं। दसवीं कक्षा का परीक्षा परिणाम भी मई के अंतिम सप्ताह तक घोषित होने की संभावना है। इन 970 स्कूलों से 10वीं कक्षा की परीक्षा में इस साल शामिल हुए अनेक अभ्यर्थी संकाय स्वीकृति होने के बाद इन्हीं स्कूलों आगे का अध्ययन जारी रख सकेंगे।

गंगनहर में पानी की मात्रा बढ़ाई, किसानों को राहत मिलने की उम्मीद

नहर में चल रहा 1750 क्यूसेक पानी, किसानों ने चक्काजाम स्थगित किया

श्रीगंगनगर, (निसं)। जिले में गंगनहर में घटती पानी की आपूर्ति से नाराज किसानों के लिए राहत की खबर है। पिछले दिनों से नहर में हो रही कम पानी की आपूर्ति को लेकर जिलेभर के किसानों में गुस्सा था, जिसके बाद गंगनहर में अब पानी की मात्रा बढ़ाई गई है। इससे किसानों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है।

■ **पिछले दिनों से नहर में हो रही कम पानी की आपूर्ति को लेकर जिलेभर के किसानों में गुस्सा था, जिसके बाद गंगनहर में अब पानी की मात्रा बढ़ाई गई है**

कल दिनभर पानी की आवक में उतार-चढ़ाव रहा। दोपहर तक खखां हैड पर पानी घटकर 1400 क्यूसेक रह गया था। इससे किसानों की चिंता बढ़ गई थी। शाम तक जल संसाधन विभाग के अधिकारियों ने पंजाब के अधिकारियों से बात की। इसके बाद पानी की आवक बढ़कर 1718 क्यूसेक हो गई। इसी बीच संयुक्त किसान मोर्चा के शिष्टमंडल ने जिला कलेक्टर, जल संसाधन विभाग और पुलिस अधिकारियों से मुलाकात की। बैठक में तय हुआ कि गंगनहर में तय हिस्से के अनुसार पानी की आपूर्ति की जाएगी। पंजाब और राजस्थान में नहरों से पानी चोरी रोकी जाएगी। सिंचाई से जुड़ी समस्याओं पर विशेष बैठक होगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुआवजा दिलाया जाएगा। इन सहमतियों के बाद संयुक्त किसान मोर्चा ने आज होने वाला चक्का जाम स्थगित कर दिया। यह कार्यक्रम सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक नेशनल हाईवे पर प्रस्तावित था। किसानों ने प्रशासन को एक सप्ताह का समय दिया है। चेतावनी दी कि तय समय में समाधान नहीं हुआ, तो आंदोलन किया जाएगा। किसानों ने कहा कि खेतों के लिए पूरी मात्रा में पानी और बीमा योजना का लाभ नहीं मिला, तो वे मजबूती से संघर्ष करेंगे।

प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी : 151 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरित की

राजसमंद, (निसं)। जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा के निर्देशन में जिला प्रशासन की पहल प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी शनिवार को साकार हुई। सरकार एवं भामाशाहों के सहयोग से मिले लाभ को पाकर हर एक के चेहरे पर मुस्कान थी और हर कोई जिला प्रशासन की पहल का आभार प्रकट कर रहा था। शहर के सौ फीट रोड स्थित भिक्षु निलयम परिसर में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में सांसद महिमा कुमारी मेवाड़, संभागीय आयुक्त उदयपुर प्रज्ञा केवलरमानी, एनके प्रोटीन्स प्राइवेट लिमिटेड से प्रियांशी पटेल, शुभकाम वेंचर्स की प्रतिनिधि डॉ. विमल कावडिया, भाजपा जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा, एसपी मनीष त्रिपाठी, एडीएम नरेश बुनकर, जिला परिषद सीईओ बृज मोहन बैरवा, एसडीएम बृजेश गुप्ता आदि मौजूद रहे। इस अवसर पर सांसद महिमा कुमारी मेवाड़ ने जिला प्रशासन के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि केंद्र तथा राज्य सरकार की योजनाओं सहित शिक्षा, स्वच्छता एवं हर क्षेत्र में आज राजसमंद अग्रणी है। सम्भागीय आयुक्त केवलरमानी ने प्रशासन के अभियानों और नवाचारों को लेकर प्रशंसा की। भामाशाह प्रियांशी पटेल ने कहा कि उनकी संस्था जनहित के कार्यों में आगे भी प्रतिबद्धता से भागीदारी सुनिश्चित करेंगी।

राजसमंद में आयोजित प्रोजेक्ट दिव्यांग सारथी के जिला स्तरीय कार्यक्रम में दिव्यांगजनों को मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरित की।

प्रोजेक्ट के तहत तीन प्रमुख संस्थाओं एमपी तापड़िया फाउंडेशन जसवंतगढ़ एवं मुंबई, एनके प्रोटीन्स प्राइवेट लिमिटेड अहमदाबाद तथा शुभकाम वेंचर्स (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड लाडनूं एवं मुंबई द्वारा चलन असमर्थता वाले दिव्यांगजन के लिए 151 मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल भेंट की गई, जिनमें से अधिकांश का समारोह में वितरण किया गया। मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल वितरण से पहले सांसद, सम्भागीय आयुक्त, भामाशाहों, जनप्रतिनिधियों ने प्रत्येक दिव्यांग का उपरना ओढाकर सम्मान किया। साथ ही सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की ओर से 22 मस्कुलर डिस्ट्रोफी पीड़ितों को इलेक्ट्रिक व्हीलचेयर वितरित की गई। 52 दिव्यांगजन को मुख्यमंत्री स्वरोजगार ऋण योजना के तहत 44 लाख रुपये के स्वरोजगार ऋण वितरित किया गया, जबकि गत वर्षों में 7 या 8 आवेदन ही प्रतिवर्ष स्वीकृत हुए। इसी तरह 1 जनवरी से अब तक स्वावलंबन योजना के तहत 1474 यूडीआईडी (दिव्यांग कार्ड) जारी किए गए। अभियान अवधि में 142 दिव्यांगजन की पेंशन स्वीकृत हुई तो वहीं एक पात्र जोडे को सुखद दाम्पत्य जीवन योजना का लाभ भी मिल गया।

राशिफल रविवार 25 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, अश्विनी नक्षत्र दिन 11:12 तक, सौभाग्य योग दिन 11:06 तक, वणिज करण दिन 11:12 तक, चन्द्रमा आज मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मेष, मंगल-कर्क, बुध-वृष, गुरू-मिथुन, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:12 तक है। भद्रा दिन 3:52 से रात्रि 2:02 तक है। आज से नौ तपा आरम्भ होगा। आज मास शिवरात्रि, सावित्री चतुरदशी है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 7:20 से 9:01 तक, लाभ अमृत 9:01 से 12:23 तक, शुभ 2:05 से 3:46 तक।

राहूकालः 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:08

मेष

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं। घर-परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष

आज मित्रों/रिश्तेदारों के कारण समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कन्या

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

मिथुन

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

तुला

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आपसी सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

वृश्चिक

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मीन

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सार-समाचार

रैली को लेकर तैयारियां शुरू

झुंझुनूं, (निसं)। सहभागी राजपूत परिवार द्वारा 22 जून को झुंझुनूं में आयोजित होने वाली कथित काल्पनिक झुंझा जाट हटाओ राजस्थान का गौरवमयी इतिहास बचाओ महासभा के प्रचार की शुरुआत झाझड़ पंचायत से इंजीनियर महावीर सिंह शेखावत झाझड़ के कार्यालय से हुई। इसमें हजारों की संख्या में सहभागी समाज शामिल हुआ वक्ताओं ने गांव-गांव जाकर इस मामले पर अलख जगाने की बात कही। उन्होंने कहा कि हमें दलित, वास्तविक पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग, हिंदू, मुस्लिम सभी को साथ लेकर लेना है। क्योंकि राजपूताना के शासक केवल राजपूत और कायमखानी राजपूतों का ही प्रतिनिधित्व करते थे। बल्कि वो समस्त सहभागी समाजों की रक्षा करते थे। दलितों और वंचितों के हर प्रकार के हितों की आवाज उठाने पर भी जोर दिया गया। हमारे पूर्वज भी सबको साथ लेकर चलने की काबलियत रखते थे। इसमें राजपूत समाज नवलगढ़ के अध्यक्ष विक्रम सिंह मझाऊ, सचिव छगनसिंह गोठड़ा, हनुमानसिंह भगेरा, नत्थूसिंह भगेरा, चिराना से डॉ. त्रिलोकसिंह, अमरसिंह चिराना, गोठडा से रामसिंह, सूबेदार मदनसिंह, थानेदार राजेंद्रसिंह, दीनवा लाडखानी से भागीरथसिंह, जसवंतसिंह रेंजर, भैरूसिंह गोडपुरा, करणीसिंह मुकुंदगढ़, चैलासी से अजीज खां, अनीस खां, यूनुस खां, मैनुद्दीन खां नवलगढ़, भगासरा से सबीर खां, इकबाल खां, इकबाल खां, भारू से जहिर खां, आसिफ खां, रज्जाक खां मास्टर सिरियासर, बालसिंह ढ़ाणा, अख्तर अली हांसलसर शामिल हुए। झाझड़ परिवार से रतनसिंह मास्टर, कल्याण सिंह वकील, सवाईसिंह, रामसिंह, रणधीरसिंह, सवाईसिंह राजपूत फंड, हनुवंतसिंह, गौतमसिंह, शोभसिंह पुलिस, शोभसिंह, बजरंगसिंह, महेंद्रसिंह, करणसिंह, निक्कूसिंह, प्रभुसिंह, बजरंगसिंह, गणेशसिंह, उम्मेदसिंह, रणजीतसिंह, गोविंदसिंह, मोनूसिंह, आनंदसिंह, शेरसिंह, दीवानसिंह, धर्मवीरसिंह, महिपालसिंह शामिल हुए। वास्तविक पिछड़ा वर्ग से मनोज सैनी, महावीर सैनी, विनोद सैनी, कालू सैनी, बाबूलाल सैनी, विजय सैन, दलित समाज से महेश केरवाल मैघवाल व छाजू बाल्मिकी मौजूद रहे।

उपकारागृह में पंखे भेंट किए

रतनगढ़ (निसं)। स्थानीय बस स्टैंड स्थित उपकारागृह में कैद बंदियों को भीषण गर्मी से कुछ राहत प्रदान कराने के भाव से सात सीलिंग फैन और तीन एक्जॉस्ट फैन शनिवार सुबह भेंट किए गए। पुरस्कृत शिक्षक फोरम, राजस्थान जिला शाखा चूरू के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुलदीप व्यास के निवेदन पर भंवरलाल विनीता देवी बैद चैरिटेबल ट्रस्ट, दिल्ली के प्रमुख ट्रस्टी समाजसेवी प्रवीन बैद द्वारा उपलब्ध करवाए गए पंखे ट्रस्ट के प्रमुख सहयोगी एवं प्रेरक चतुर्भुज गोस्वामी ने जेलर जितेंद्रसिंह को सौंपते हुए ट्रस्ट द्वारा जेल में कैदियों द्वारा सद् साहित्य अध्ययन हेतु स्थापित पुस्तकालय के उपयोग की भी जानकारी ली। उप कारागृह प्रभारी जितेंद्रसिंह ने फोरम के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कुलदीप व्यास के सदप्रयासों से पूर्व में स्थापित ट्यूबवेल और उपलब्ध करवाए गए बर्तन, फर्नीचर आदि के लिए फोरम का आभार प्रकट किया। फोरम के महासचिव ओमप्रकाश तंवर ने बैद चेरिटेबल ट्रस्ट का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रहरी राकेश मीणा, शीशराम और चालानी गार्ड ईंचार्ज विजयसिंह उपस्थित थे।

'महात्मा ज्योतिबा फुले सदी के महानायक'

झुंझुनूं, (निसं)। झाबरमल काला फाउंडेशन के आर्थिक सहयोग से शनिवार को डिशुम सिनेमा में महात्मा ज्योतिबा फुले फिल्म का शो दिखाया गया। फिल्म देखने आए पिलानी विधायक पितराम सिंह काला ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले 18वीं सदी के महानायक थे। जिन्होंने सदियों से शिक्षा ग्रहण नहीं करने वाले समाज के लिए शिक्षा के द्वार खोले। महिला शिक्षा के लिए उच्च वर्ग से कड़ा संघर्ष किया। कांग्रेस के कार्यकारी जिलाध्यक्ष खलील बुडाना ने फिल्म को देखकर कहा कि शिक्षा के लिए लड़ना और उसके लाभ हमें महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्री बाई फुले के साथ फातिमा शेख से सीखने चाहिए। सरपंच संजय सैनी ने कहा कि 18वीं सदी में लोग तो स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे और फुले सबके लिए शिक्षा की लड़ाई लड रहे थे। फिल्म में बलबीर सिंह काला, छगनलाल धूपिया, विकास काला, सरपंच महावीर प्रसाद, बाघसिंह तोमर, रामस्वरूप सतरावला, पंचायत समिति सदस्य लालचंद सैनी, अनिल कटेवा, विरेंद्र सिंह तंवर, सुनील सैनी नयाबास, दीनदयाल सैनी, संजय सिंगोदिया सहित सैकडों लोग उपस्थित रहे।

रेलवे ट्रैक दोहरीकरण को लेकर 28 मई तक रेलवे फाटक बंद रहेगा

चूरू (निसं)। अग्रसेन नगर रेलवे फाटक पर रेलवे ट्रैक के दोहरीकरण के चलते शुक्रवार रात 10 बजे फाटक बंद कर दिया गया। आपको बता दें कि रेलवे ट्रैक के दोहरीकरण को लेकर रेलवे ने शुक्रवार रात को ही ब्लॉक ले लिया। फाटक पर इस दोहरीकरण के कार्य के चलते शनिवार को अग्रसेन नगर वासियों सहित जयपुर-सीकर, झुंझुनूं, राजगढ़ व हिसार जाने वाले वाहनों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। रेलवे दोहरीकरण कार्य को लेकर दिन भर वाहनों की आवाजाही बंद रही। कर्मचारी दिन भर रेलवे ट्रैक को बिछाने में लगे रहे। ट्रैक दोहरीकरण निर्माण के चलते अग्रसेन नगर में ट्रकों की लाइन लगी हुई थी और ट्रक ड्राईवर वहीं खड़े होकर दोहरीकरण निर्माण कार्य पूरा होने का इंतजार करते रहे। स्टेशन मास्टर सुरेश माथुर ने बताया कि रेलवे ट्रैक के काम के चलते रेलवे फाटक आगामी 28 मई तक बंद रहेगा। जिसके कारण कॉलोनी वासियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। गौरतलब है कि इसके कारण वाहन चालकों को 28 मई तक ओम कॉलोनी रेलवे फाटक से होकर जाना पड़ेगा।

शीतल जल मंदिर का भूमि पूजन संपन्न

झुंझुनूं, (निसं)। स्थानीय गांधी चौक स्थित गांधी पार्क जो कि वर्षों पूर्व नांगलिया परिवार द्वारा बनवाया जाकर नगर परिषद झुंझुनूं को समर्पित किया गया था, में उनके परिवार की ओर से एक शीतल जल मंदिर संचालित था। जिसे कुछ वर्ष पूर्व गांधी पार्क के सौंदर्यीकरण पर हटा दिया गया था। जिसकी नांगलिया परिवार की ओर से श्यामसुंदर अग्रवाल टमकोरिया ने पैरवी करके प्रशासन से पुनर्निर्माण की स्वीकृति प्राप्त कर उनके द्वारा शनिवार को भूमि पूजन विद्वान पंडित संजय शर्मा के आचार्यत्व में विधि विधान के साथ किया गया। जानकारी देते हुए श्यामसुंदर अग्रवाल टमकोरिया ने बताया कि जल्द ही सुंदर तरीके से श्रीमती चंपादेवी नांगलिया धर्मपत्नी स्वर्गीय बल्लभराम नांगलिया की पुण्य स्मृति में एसआर नांगलिया चेरिटेबल ट्रस्ट कोलकाता के सौजन्य से बन रहे शीतल जल मंदिर का निर्माण पूरा होने के पश्चात भव्य रूप से लोकार्पण किया जाएगा।

शिविर में 205 लोग लाभान्वित

झुंझुनूं, (निसं)। महावीर इंटरनेशनल सनराइज एवं आशुतोष होम्योपैथिक औषधालय छावनी बाजार के संयुक्त तत्वावधान में स्वर्गीय केदारमल हलवाई की स्मृति में उनके परिवार द्वारा आयोजित होने वाला निशुल्क चिकित्सा परामर्श शिविर अग्रवाल कटला झुंझुनूं में संपन्न हुआ। शिविर में 205 रोगियों की जांच कर निशुल्क दवाइयां उपलब्ध करवाई गई। कार्यक्रम में रमाकांत हलवाई, डॉ. एसएन शुक्ला, अंतरराष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्यामसुंदर जालान, जोन चेयरमैन नागरमल जांगिड़, रीजन सेक्रेटरी महेश कुमार मूंड, देवेंद्र कुमार गौड, प्रदीप कुमार शुक्ला, कैलाशचंद्र शर्मा, डॉ. मूलसिंह, सहायक प्रमोद कुमार, डॉक्टर्स टीम व काफी संख्या में गणमान्य जन उपस्थित रहे।

स्वर्णकार सेवा दल की बैठक आयोजित

सीकर (निसं)। स्वर्णकार सेवा दल की सीकर जिला कार्यकारणी की आज हुई मीटिंग अधिकार जानकारी देते संस्था की संगठन मंत्री श्री मती सोनू तोषावड ने बताया कि राजस्थान प्रदेश महामंत्री एडवोकेट डिम्पल सोनी के निर्देशानुसार सीकर टीम ने आज मीटिंग रखी जिसमें 1 जून को को जयपुर में संस्था की ओर से 5 साल से 15 साल तक के 51 समाज के बच्चों की डांस प्रतियोगिता होगी जिनमें से तीन विजेता चुने जाएंगे मीटिंग में सीकर जिला अध्यक्ष राधेश्याम रुंडवाल अनिल सुनालिया सुभाष डाबर प्रेम सोनी सोनू सोनी ज्योति सोनी दुर्गा सोनी सत्यनारायण सोनी मौजूद रहे।

नेत्र चिकित्सा शिविर आज

झुंझुनूं, (निसं)। अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन व महावीर इंटरनेशनल सनराइज के संयुक्त तत्वावधान में विशाल नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन चावो दादी मंदिर झुंझुनूं में सुबह नौ से दोपहर 12 बजे तक किया जाएगा। शिविर में आधुनिक मशीनों से आंखों की जांच कर दवाइयां एवं चश्में निशुल्क दिए जाएंगे। चयनित मोतियाबिंद रोगियों के ऑपरेशन रियायती दर पर कराए जाएंगे।

एसीआई के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम के साक्षी बने विद्यार्थी एवं अभिभावक

झुंझुनूं में 12वीं विज्ञान वर्ग के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम में अपनी सफलता का परचम लहराने वाले विद्यार्थियों का अभिनंदन व सम्मान किया।

झुंझुनूं, (निसं)। जिला मुख्यालय स्थित एसआई सीसै स्कूल में 12वीं विज्ञान वर्ग के उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम में अपनी सफलता का परचम लहराने वाले सितारों का संस्था में पधारने पर शानदार अभिनंदन व सम्मान किया।

अभिभावकों, विद्यार्थियों, संस्थान स्टाफ व मैनेजमेंट ने सम्मान समारोह के इस अवसर पर एक दूसरे को माल्यार्पण कर व मिठाई खिलाकर बधाई दी। संस्था प्रबंध निदेशक विकास शर्मा ने परीक्षा परिणाम पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि इस वर्ष बोर्ड परीक्षा में 120 विद्यार्थी प्रविष्ट हुए। जिसमें सभी विद्यार्थी प्रथम श्रेणी के साथ उत्तीर्ण हुए। साथ ही संस्थान के कार्तिक शर्मा पुत्र रोहिताश शर्मा ने 95 प्रतिशत अंक प्राप्त कर संस्थान का सिरमौर बना।

वहीं अमन कुमारी पुत्री विजय कुमार 94.60 प्रतिशत, रजत कुमावत पुत्र कैलाशचंद कुमावत 93.40, रौनक कुमार पुत्र नितेश कुमार 93.40, ज्योति सैनी पुत्री ओमप्रकाश 92.80, निक्की पुत्री भरत सिंह 92.20, सिद्धिमा गौड पुत्री परमेश्वरलाल 92, चंचल पुत्री विजयसिंह 91.40, निकिता पुत्री मदनलाल 90.60, सचिन सैनी पुत्र गुलझारीलाल सैनी 90.40, प्रीतम यादव पुत्र कैलाशचंद यादव 90.40 प्रतिशत के साथ संस्थान के 100 फीसदी छात्रों ने प्रथम श्रेणी व हर दूसरे विद्यार्थी ने 85 प्रतिशत से अधिक प्राप्त किए। वहीं संस्था निदेशक मनोज शर्मा ने अतिथियों व अभिभावकों का अभिनंदन करते हुए कहा कि विद्यार्थी जीवन का एक पडाव पूरा कर चुके है।

अब एक महत्वपूर्ण ज्ञान यात्रा पर आपको आगे बढ़ना है। जिससे आपको अपने कैरियर के साथ व्यक्तित्व का निर्माण भी करना है। आपके अभिभावकों एवं शुभचिंतकों के चेहरे पर सदैव आपकी उपलब्धियों द्वारा खुशी बनी रहे। यही एसीआई परिवार की कामना है। सम्मान समारोह में सम्मानित होने वाला छात्र कार्तिक की माता सुमन देवी ने अपने पुत्र की सफलता का श्रेय संस्थान निदेशक मनोज शर्मा व विकास शर्मा के कुशल मार्गदर्शन, मोटिवेशन एवं संस्थान की परीक्षा प्रणाली, निरंतर अध्ययन को दिया।

वहीं छात्रा चंचल के पिता राजेश कुमार ने कहा कि मेरी बेटी की चाह डॉक्टर बन गरीब असहायों की सेवा करना है। ताकि ईश्वर के इस रूप को यथार्था प्रदान कर सके एवं गुरूजनों, माता-पिता की आकांक्षाओं को फलीभूत करें। सभी टॉपर्स विद्यार्थियों ने एटीएस, एएटीएस, प्री बोर्ड एवं समयबद्ध परीक्षा प्रणाली, प्रबंधन के मार्गदर्शन को सफलता का मूल मंत्र माना। विद्यार्थियों, अभिभावकों व संस्थान स्टाफ ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर व सफलता के गीतों पर झुमकर एक दूसरे के साथ खुशियां व बधाइयां बांटी। इस अवसर पर कैलाशचंद्र कुमार, नितेश कुमार, सुमन सैनी, भरत सिंह, परमेश्वरलाल शर्मा, विजय सिंह, ज्वालाप्रसाद, विकास कुमार शर्मा, शिवराम, खालिदा बानो, बबिता, चंद्रप्रकाश, मनोज गिल, कन्हैयालाल, शकुंतला देवी, सरिता

■ अभिनंदन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन हुआ

देवी, चंदादेवी, स्नेहलता सहित आशातित अभिभावक उपस्थित थे।

संस्था निदेशक विकास शर्मा ने कहा कि इच्छित सफलता प्राप्त करने के लिए मन में एक सुदृढ़ लक्ष्य एवं लक्ष्य के प्रति सच्ची चाहत हो तो लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित हो जाती है। हमारा उद्देश्य केवल अच्छे अंक लाना नहीं बल्कि विद्यार्थियों का समग्र रूप से विकसित करना है। उन्होंने सभी सफल विद्यार्थियों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

इस अवसर पर फाउंडेशन हैड विजय सैनी, सुनिल कुमार, दिनेश वर्मा, अशोक जांगिड, राधेश्याम शर्मा, धर्मेंद्र नागर, हिमांशु शर्मा, दिव्या रोहिला, जयप्रकाश शर्मा, महेंद्रसिंह, राकेश, दिनेश आचार्य, संदीप झाझड़िया, सरिता कुमारी, पूनम जांगिड, दिवेंक शर्मा, नरेश कुमार, आशा शर्मा, प्रियंका शर्मा, सरोज, निशा शर्मा, सुमन चौहान, वैशाली, ऐश्वर्या स्वामी, ऋतिका बहुगुणा, पूनम शर्मा, मोहम्मद बिलाल, हेमंत जांगिड, शिवकुमार पालीवाल, रमेश मील उपस्थित थे।

मिलावटी खाद्य पदार्थ के 12 प्रकरणों में 2 लाख 55 हजार का जुर्माना लगाया

रतनगढ़ (निसं)। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के खाद्य सुरक्षा अनुभाग की ओर से चलाये जा रहे अभियान के तहत मिलावटी खाद्य पदार्थों के 12 प्रकरण का न्यायालय में निस्तारण कर 2 लाख 55 हजार रूपये का जुर्माना लगाया है। नमूनों की प्रयोगशाला जांच से मिली रिपोर्ट के बाद मिलावट के चार नये प्रकरण न्यायालय में पेश किये गये है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि मिलावटी खाद्य पदार्थों के 12 प्रकरणों का न्यायालय द्वारा निस्तारण कर 2 लाख 55 हजार का जुर्माना लगाया है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी मदन लाल बाजिया ने बताया कि मैसर्स बाबा पनीर भंडार राजगढ़ के दो प्रकरणों में 25-25 हजार रूपये, मैसर्स स्वामी मिष्ठान भंडार, भालेरी के 15 हजार रूपये, गणपति टेडिंग कंपनी, सरदारशहर के 5 हजार रूपये, रविन्द्र कुमार लज्जेराम चाहर, लुहारू के 20 हजार रूपये, दीपक कुमार हजारीमल के 80 हजार रूपये, सेठ डेयरी फार्म, चूरू के 5 हजार रूपये, शाहिन होटल रतनगढ़ के 30 हजार रूपये, भवानी मावा भंडार, चूरू के 30 हजार रूपये, सारण डेयरी, चूरू के 5 हजार रूपये जुर्माना लगाया गया। इसके अलावा बालाजी उद्योग, राजलदेसर, राधारानी मार्ट, सरदारशहर, सतवीर कचैरी, राजगढ़ व वीर तेजा मावा भंडार गोगासर के नमूनों की जांच रिपोर्ट प्राप्त होने न्यायालय में प्रकरण पेश किया गया।

मेंटेनेंस के नाम पर हो रही विद्युत कटौती, आमजन परेशान

पाटन (निसं)। एक ओर आसमान से आग बरस रही है, तापमान लगातार 45 डिग्री सेल्सियस के पार चल रहा है, तो वहीं दूसरी ओर विद्युत विभाग द्वारा की जा रही बेतरतीब बिजली कटौती ने आमजन को दोहरी मार झेलने को मजबूर कर दिया है।

बिजली कटौती का कोई निश्चित समय तय नहीं है, जिससे लोगों को दिनभर अनिश्चितता और परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जब इस बारे में विभागीय अधिकारियों से जानकारी ली जाती है, तो जवाब मिलता है - कभी केबल जलने की बात सामने आती है, तो कभी ट्रांसफॉर्मर खराब होने की, लेकिन ऐसी घटनाओं की कोई पुष्टि कहीं से नहीं हो पाई है।ग्रामीणों का कहना है कि यह सिर्फ बहाना बनाकर अनावश्यक कटौती की जा रही है। सरकार जहाँ एक ओर 24 घंटे निर्बाध बिजली आपूर्ति की घोषणाएं करती है, वहीं हकीकत इससे कोसों दूर है। सवाल उठता है कि यदि सरकार 24 घंटे बिजली देने के निर्देश दे रही है, तो फिर यह कटौती किसके आदेश पर हो रही है? क्या विभाग सरकार के निर्देशों की अनदेखी कर रहा है या फिर सरकार की कथनी और करनी में फर्क है। विद्युत विभाग के इस लापरवाह रवैये से आमजन त्रस्त है। छोटे दुकानदारों, छात्र-छात्राओं, बुजुर्गों और बीमार लोगों को खासा दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। पानी की सप्लाई भी प्रभावित हो रही है, जिससे हालात और भी गंभीर हो गए हैं।ऐसे हालात में जरूरी है कि सरकार और संबंधित विभाग इस गंभीर विषय पर ध्यान दें और जनता को राहत प्रदान करें। मेंटेनेंस के नाम पर की जा रही अनियोजित और असमय कटौती को तत्काल रोका जाए और लोगों को मूलभूत सुविधाएं - बिजली और पानी उपलब्ध करवाई जाएं।

सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में क्वालिफाई किया

झुंझुनूं, (निसं)। राष्ट्रीय स्तर की श्रेष्ठतम शिक्षण संस्थान रवि इंडियन पब्लिक सैकंडरी स्कूल झुंझुनूं में 22 मई को नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (एनटीए) की ओर से घोषित अखिल भारतीय सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा परिणाम में अपनी श्रेष्ठता राष्ट्रीय स्तर पर इस बार भी साबित की है।

संस्था के कक्षा छह के लिए 252 और कक्षा नौ के लिए 95 होनहार छात्र एवं छात्राओं ने इस परीक्षा को क्वालिफाइड कर संस्थान का परचम राष्ट्रीय स्तर पर फहराया है। इसके बाद क्वालिफाइड बच्चों का ई-कॉउसलिंग के माध्यम से मैरिट के आधार पर सैनिक स्कूल में प्रवेश दिया जाएगा। इस अवसर पर पूर्व सांसद नरेंद्र कुमार ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह सफलता छात्रों की कडी मेहनत व कुशल अनुभवी टीम के अथक प्रयास से संभव हो सकी। उन्होंने सभी सफल छात्रों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दी।

इन्वेस्टमेंट का झांसा देकर लाखों रुपए की ठगी करने का मामला

सीकर (निसं)। इंडियन गवर्नमेंट की गोल्ड बॉन्ड स्कीम में इन्वेस्टमेंट का झांसा देकर लाखों रुपए की ठगी करने का मामला सामने आया है।

आरोप है कि उत्तरप्रदेश की रहने वाली दंपति ने शिकायतकर्ता को प्रॉफिट का झांसा देकर पैसे हड़प लिए। मामला सीकर जिले के दांतारामगढ़ थाना क्षेत्र का है।

एसीजेएम कोर्ट, दांतारामगढ़ में दी शिकायत में आशीष कुमार शर्मा निवासी दांतारामगढ़ ने बताया कि उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद निवासी दीपक गोविल और उनकी पत्नी ऋतु गोविल से पिछले 8 साल से उसकी जानकारी है।

अगस्त 2024 में दीपक ने फोन कर आशीष को भारत सरकार द्वारा जारी गोल्ड बांड में निवेश का लालच दिया। दीपक ने दावा किया कि इस बांड पर बैंक 80 तक लोन की सुविधा देता है और केवल की फीस के लिए 10-15 लाख रुपए की जरूरत होगी। आशीष ने बैंक से इसकी पुष्टि की, जहां प्रक्रिया को सही बताया गया।

इसके बाद, दीपक के कहने पर आशीष ने 29 अगस्त 2024 को अपने बैंक डीमैट खाते में 2.06 करोड़ रुपए का गोल्ड बांड ट्रांसफर करवाया। आशीष ने फीस के रूप में दीपक को 2 लाख रुपए फोनपे के जरिए, 2 लाख 40 हजार रुपए बैंक खाते में, 2 लाख रुपए कैश और 1.50 लाख रुपए के रूप में भुगतान किया।

दीपक ने आशीष को आश्वासन दिया कि 15 सितंबर 2024 तक बांड का पैसा उनके खाते में आ जाएगा। हालांकि, जब तय तारीख पर कोई भुगतान नहीं हुआ और दीपक ने फोन उठाना बंद कर दिया, तो आशीष को ठगी का अहसास हुआ।

जब आशीष ने बैंक से संपर्क किया, तो बैंक ने बताया कि उनके जैसे कई फर्जी बांड सिस्टम हैक कर चढ़ाए जा रहे हैं, जो वास्तव में रिफलेक्ट नहीं होते। बैंक ने इन्हें फ्लैश बांड करार देते हुए ठगी की आशंका जताई। आशीष ने दीपक और उनकी पत्नी ऋतु से पैसे वापस मांगे, लेकिन दोनों टालमटोल करते रहे।

आशीष ने 4 मई 2025 को दांतारामगढ़ पुलिस थाने में शिकायत दर्ज की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद उन्होंने पुलिस अधीक्षक, सीकर को शिकायत भेजी, फिर भी प्रकरण दर्ज नहीं हुआ।

मजबूरन आशीष ने 19 मई 2025 को एसीजेएम दांतारामगढ़ की अदालत में परिवाद-पत्र दायर किया। इसके बाद कोर्ट के आदेश पर दांतारामगढ़ थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुट गई है। मामले की जांच एसआई सुआलाल कर रहे हैं।

सम्मान समारोह आयोजित

सूरजगढ़, (निसं)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की 12वीं कक्षा के घोषित विज्ञान, वाणिज्य, कृषि विज्ञान तथा कला संकाय के परिणाम में टैगोर चिल्ड्रन एकेडमी सूरजगढ़ के छात्र-छात्राओं ने टैगोर की परंपरा को निभाते हुए सराहनीय परीक्षा परिणाम दिया है। विद्यालय की छात्रा भाविका नेहरा ने 96.8 प्रतिशत, लक्ष्मी सैनी ने 96.6, खुशबू ख्यालिया ने 96, अनु कुमारी ने 95.4, प्रियंका ने 95.4, अंजुल राव ने 95.2, सरिता ने 94.6, जतिन ने 94.2, पुष्पराज ने 94, रक्षा ने 93.6, राहुल भाटिया ने 93.4, खुशबू ने 93.2, आदित्य कुमार ने 93, प्रियांशु ने 93, अमनप्रीत ने 92.8, नितिन कुमार ने 92, चंदन कुमार बुडानिया ने 91.6, हिमांशु ने 91.6, धीरज ने 91.2, करिश्मा ने 91.2, अंशिका ने 91.2, प्रीति ने 91.2, पलक ने 91, शशिकांत ने 91, अंतिमा ने 90.8, मिनाक्षी ने 90.8, प्रियांशु ने 90.6, सुरज बलौदा ने 90.6, साहिल ने 90.4, सुनिल कुमार ने 90.4, निशु ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

'कैच द रेन' अभियान के तहत री-चार्जेबल बोरवेल का निर्माण शुरू

झुंझुनूं, (निसं)। भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय ने पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सहयोग से महत्वाकांक्षी कैच द रेन-2025 अभियान के तहत वर्षा जल संरक्षण के लिए री-चार्जेबल बोरवेल तकनीक द्वारा झुंझुनूं प्रगति संस्थान के द्वारा 100 बोरवेल बनाए जाएंगे। यह अभियान जल संरक्षण और प्रभावी जल प्रबंधन के महत्व को उजागर करता है।

इसके लॉन्च कार्यक्रम में देश के सभी कोनों से दस हजार से अधिक नागरिकों और जल क्षेत्र के अनुभवी पेशेवर व्यक्तियों द्वारा भागीदारी दी गई। इसका शुभारंभ झुंझुनूं एकेडमी विज्डम सिटी प्रांगण से हुआ।जिसमें जल शक्ति अभियान कैच द रेन-2025 के तहत बोरवेल निर्माण कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

जानकारी देते हुए झुंझुनूं प्रगति संस्थान के अध्यक्ष डॉ. दिलीप मोदी ने बताया कि इसी अभियान को आगे बढाते हुए झुंझुनूं एकेडमी विज्डम सिटी ने झुंझुनूं प्रगति संस्थान के साथ कैच द रेन अभियान की सक्रिय रूप से शुरुआत की है।

■ 'री-चार्जेबल बोरवेल तकनीक एक प्रभावी तरीका है'

स्कूल कैम्पस में एकत्रित वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए स्कूल परिसर में एक बोरवेल खोदा गया। जिससे स्थानीय जल संसाधनों को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि यह तकनीक विशेष रूप से उन क्षेत्रों में उपयोगी है, जहां भूजल स्तर गिर रहा है या सूखे की समस्या है।

उन क्षेत्रों में वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए री-चार्जेबल बोरवेल तकनीक एक प्रभावी तरीका है। इसमें वर्षा जल को बोरवेल के माध्यम से जमीन में रिसने दिया जाता है, जिससे भूजल स्तर बढ़ता है।

संस्थान के सचिव एडवोकेट अशोक शर्मा ने इस अभियान कि प्रशंसा करते हुए कहा कि री-चार्जेबल बोरवेल तकनीक एक सरल और प्रभावी तरीका है। वर्षा जल को संरक्षित करने और भूजल स्तर को बढ़ाने के लिए। यह तकनीक विशेष रूप से उपयोगी है। बोरवेल को वाटर रिचार्ज करने का अर्थ है बोरवेल के आसपास पानी के स्त्रोतों से पानी को भूमिगत करके बोरवेल के पानी को फिर से भरना।

ऐसा करने के कई तरीके हैं, जैसे कि वर्षा जल संचयन, रिचार्ज पिट्स, और बोरवेल के पास रिचार्जिंग गड्ढे खोदना। ऐसे कार्यों से हम आने वाली पीढ़ी के लिए जल संरक्षण कर सकते है तथा पर्यावरण को हरा-भरा बना सकते हैं।

संस्थान के उपाध्यक्ष कुरडाराम धींवा ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यह तकनीक भूजल स्तर को बढ़ाने में मदद करती है, सूखे की स्थिति से निपटने में मदद करती है तथा वर्षा जल का बेहतर उपयोग भी सुनिश्चित करती है। आगे आने वाले मानसून में इन बोरवेल्स में वर्षा जल एकत्र होगा। जिससे भूमिगत जल स्तर निश्चित रूप से बढ़ेगा।

झुंझुनूं प्रगति संस्थान कैच द रेन-2025 अभियान सफल बनाने के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध है। मैनेजिंग डायरेक्टर नीरजा मोदी, स्कूल निदेशक आकाश मोदी, गरिमा मोदी, प्राचार्य डॉ. रविशंकर शर्मा, वाइस प्रिंसिपल सरोज सिंह, हैडमिस्ट्रेस उमा शर्मा, एडमिशन डायरेक्टर श्यामसुंदर शर्मा, प्रशासक कमलेश कुलहरि तथा स्टाफ सदस्यों ने जल शक्ति अभियान कैच द रेन-2025 का स्वागत किया।

गर्मी का कहर जारी

चूरू (निसं)। अंचल में भीषण गर्मी का कहर जारी है। शनिवार को गर्मी ने लोगों को परेशान करके रख दिया। दोपहर को तापमान 45 डिग्री तक पहुंच गया। सुबह साढे 11 बजे ही पारा 41 डिग्री के करीब था। नगर परिषद ने आमजन को राहत देने के लिए अनेक प्रयास किये हैं। शहर में चार-पांच स्थानों पर कूलिंग स्टेशन और विश्राम स्थल बनाए गए हैं। नगर परिषद आयुक्त अभिलाषा सिंह ने बताया कि इन स्थानों पर ठंडे पानी के कैंपर, टैंट, कुर्सियां और कूलर की व्यवस्था की गई है। दमकल की गाड़ियों से शहर की सड़कों पर पानी का छिड़काव किया जा रहा है। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के निदेशक राधेश्याम शर्मा ने बताया कि बीकानेर और जोधपुर संभाग में अधिकतम तापमान 46 से 48 डिग्री तक पहुंच सकता है। सीमावर्ती क्षेत्रों में अगले 48 घंटों में तापमान 1-2 डिग्री और बढ़ सकता है। अजमेर, जयपुर और कोटा संभाग में अगले 2-3 दिनों में तापमान 45 से 47 डिग्री रह सकता है। पूर्वी हवाओं के चलते आने वाले 4-5 दिनों में राज्य के कुछ हिस्सों में शाम के समय मेघ गर्जन और 50-60 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से अंधड़ चलने की संभावना है।

बोर्ड परीक्षा के टॉपर्स को सम्मानित किया

झुंझुनूं, (निसं)। जिला मुख्यालय स्थित डिफेंस पब्लिक स्कूल में शनिवार को एक खास समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें इस वर्ष की बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

प्रिंस ग्रुप ऑफ स्कूल्स के चेयरमैन डॉ. जीएल कालेर ने बताया कि इस कार्यक्रम में विद्यालय परिवार, अभिभावकों और विद्यार्थियों ने मिलकर टॉपर्स की उपलब्धियों का उत्सव मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल चेयरमैन डॉ. जीएल कालेर के स्वागत भाषण से हुई।

झुंझुनूं में बोर्ड परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

जिसमें उन्होंने सभी विद्यार्थियों के परिश्रम और अध्यापकों की मेहनत की सराहना की। समारोह में 12वीं बोर्ड के टॉपर्स को विशेष रूप से मंच पर बुलाकर साफा व माला पहनाकर सम्मानित किया गया। विद्यालय की ओर से बताया गया कि इस वर्ष का परीक्षा परिणाम अत्यंत सराहनीय रहा है और कई विद्यार्थियों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए हैं।

कला वर्ग में तनीषा ने 97.20 प्रतिशत अंक प्राप्त कर विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया। वहीं रितिका ने 97 प्रतिशत अंक लेकर दूसरा स्थान प्राप्त किया। कला संकाय में ही तनिष्का 95.80, सादिया 95.40, जैनब 95.20, शिवकुमार 94.40, सना खान 93.40, पलक 93, नवदीप 92.60, प्रीति 92.60, वर्तिका 91.40 दिशु कुमावत 90.60, निहारिका 90.60, प्रिया 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। साथ ही विज्ञान वर्ग में अलशफा 95.40 अजय डागर 94.20, अंशु कुमारी 93.80, रचना चौधरी 91.40, आइशा 91, पीयूष यादव 90.20, पारुल कुमावत ने 90 प्रतिशत अंक लेकर संस्थान व परिवार का मान बढ़ाया। कुछ छात्रों ने जिले और राज्य स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है।

विद्यालय परिसर में जश्न का माहौल था, सभी ने विद्यार्थियों की मेहनत की सराहना की। अंत में संस्थान निदेशक निर्मल कालेर ने टॉपर्स और सभी विद्यार्थियों को भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी व कहा कि यह सफलता आने वाले वर्षों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी। इस अवसर पर महेंद्र सैनी, रामसिंह, पीसीआई हैड अनूप सिंह व सभी स्टाफ सदस्य उपस्थित थे।

कौशल विकास अभिरुचि, हस्तकला लघु उद्योग प्रशिक्षण शिविर आयोजित

सीकर (निसं)। राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय सीकर द्वारा पीएम श्री राधा कृष्ण मारू राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर रोड सीकर में हर वर्ष की भांति ग्रीष्मकालीन कौशल विकास अभिरुचि, हस्तकला लघु उद्योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविर प्रात: 7 बजे से दोपहर 12:30 बजे प्रतिदिन विभिन्न कलाओं सिलाई, बुनाई कढ़ाई, मेहंदी, ब्यूटीशियन, ताइक्वांडो आत्मरक्षा,पेंटिंग, कंप्यूटर स्केटिंग, साज सज्जा नृत्य, इंटीरियर डेकोरेशन, अभिनय नाटक वाद्य यंत्र संगीत सहित अनेक विषयों का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए कोई भी बालक-बालिकाएं,महिलाएं प्रात: 7 बजे से दोपहर 1 बजे के बीच में विद्यालय में पहुंचकर आवेदन कर सकते है। शिविर में बजरंग लाल कैरिंग प्रशिक्षक द्वारा बालक बालिकाओं को पीढ़ा, पलंग,खाट, कुर्सा बुनने का प्रशिक्षण प्रदान किया। शिविर में 12वीं कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने वाले संभागी बालक- बालिकाओं का भी स्काउट गाइड की ओर से सम्मानित किया गया। ब्यूटीशियन कक्षा में ब्यूटीशियन प्रशिक्षण का वर्षा सेन द्वारा बालिकाओं एवं महिलाओं को धागा चलाना, वैक्स करने का अभ्यास व कराया गया। अन्य प्रकार के ब्यूटीशियन की जानकारी प्रदान की गई।

बेदखली सूचना

मनके जयवीर पुत्र श्री उम्मेद आयु 72 वर्ष जाति जाट निवासी सरदारपुरा तहसील राजगढ़ जिला चूरू का हूं जो शपथ पूर्वक बयान करता हूं कि विकास पुत्र जयवीर जाति जाट निवासी सरदारपुरा तहसील राजगढ़ जिला चूरू मेरा पुत्र है व वर्तमान पत्नी विकास मेरी पुत्रवधू है। मेरा पुत्र विकास व पुत्रवधू वर्तमान पिछले करीब एक वर्ष से मेरे और मेरे परिवार से अलग परिवार बनाकर रह रहे हैं। उक्त दोनों ही आवारा व बदमाश प्रवृति के लोगों की संगत में रहते हैं। दोनों ही मेरे, मेरी पत्नी व मेरे पुत्र राजेश के साथ अनावश्यक झगड़ा करते रहते हैं। मेरे परिवार के नाम से परिचितों से सामान व रुपये उधार ले लेते है, मांगने पर झगड़ा करते है और लिया गया सामान व रुपये हमारे द्वारा भुगतान करने का दबाव बनाते है और झगड़ा करता है। इस कारण मैंने आज दिनांक 24.05.2025 को अपने उक्त पुत्र विकास व पुत्रवधु वर्तमान को मेरी चल अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। उक्त दोनों के किसी प्रकार की चल व अचल संपत्ति से कोई वास्ता नहीं है और मेरे चल व अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। सर्वसाधारण को सूचित करता हूं कि विकास व वर्तमान द्वारा किसी प्रकार का लेनदेन किया जायेगा या झगड़ा किया जायेगा तो मेरी व मेरे परिवार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।

शपथग्रहिता-जयवीर

अनियंत्रित बस सड़क पर पलटी, तीन की मौत, 17 यात्री घायल

निजी बस भावा गांव में अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढ़कर पलट गई थी

राजसमंद, (निसं)। कांकरोली थाना क्षेत्र के भावा गांव में उदयपुर-भीलवाड़ा हाइवे पर अनियंत्रित निजी ट्रेवल्स बस के पलटने से तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 17 लोग घायल हो गए, जिनमें से एक गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को उदयपुर रेफर किया गया है। स्थानीय लोगों ने पुलिस की मदद से सभी घायलों को जिला आरके अस्पताल में भर्ती कराया, जबकि मृतकों के शव को आरके अस्पताल की मोर्चरी में रखवाए। घटना की जानकारी मिलते ही जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा, पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी सहित अन्य अधिकारी अस्पताल पहुंचे और घायलों का हालचाल पूछा।

सड़क हादसे में घायलों को आरके चिकित्सालय में उपचार के लिये भर्ती कराया।

- स्थानीय लोगों ने पुलिस की मदद से सभी घायलों को जिला आरके अस्पताल में भर्ती कराया

जानकारी के अनुसार सुबह साढ़े सात बजे करीब निजी बस भावा गांव में अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढ़कर पलट गई। सूचना मिलते ही कांकरोली पुलिस, रूपाखेड़ा टोल रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची और टोल एंबुलेंस और अन्य वाहनों की मदद से घायलों को आरके जिला अस्पताल पहुंचाया गया। इधर, पुलिस ने बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है।

कांकरोली थाना अधिकारी हंसाराम सीरवी ने बताया कि दुर्घटना में गीता अहीर पत्नि रामलाल अहिर निवासी सुरावास पोटला जिला भीलवाड़ा, अखिलेश पंडित (25) पुत्र सिकंदर पंडित निवासी कुणवा, चयनपुर बिहार एवं आसिफ मोहम्मद (27) पुत्र शौकत मोहम्मद, निवासी रामनगर भीलवाड़ा को प्राथमिक उपचार के बाद उदयपुर रेफर कर दिया गया। इसके अलावा मनोज कुमार (32) पुत्र भरोषी राम यादव निवासी चम्पियापुर थाना घोडासाहन जिला मोतिहारी बिहार, अनिल कुमार (26) पुत्र सुरेन्द्र भाई, निवासी गंगोरा थाना बलखरा जिला मोतिहारी बिहार, चन्दन कुमार पुत्र संजीव परी निवासी बिहार, छोटेलाल पुत्र कुमार किशोरी पण्डित निवासी बिहार, राजेश रजक पुत्र बाबूलाल निवासी एमडी जिला राजसमंद, आयुष पुत्र जियान मोहम्मद निवासी भीलवाड़ा, झण्डाराम पुत्र खुमाण कुम्हार निवासी रामनगर भीलवाड़ा, मोहम्मद रईस पुत्र जमील, निवासी पुर जिला भीलवाड़ा, कमलेश पुत्र बंशीलाल सोनी निवासी चित्तौड़गढ़, राजू पुत्र गणेश, निवासी पांचली-चन्देरिया जिला चित्तौड़गढ़, ममता पत्नी देवेन्द्र सिंह राजपूत, हिमांशु पुत्री देवेन्द्र सिंह राजपूत एवं अभिदित्य सिंह, पुत्र देवेन्द्र सिंह राजपूत निवासी जगपुरा गंगापुर जिला भीलवाड़ा, पप्पूलाल पुत्र चुन्नीलाल रेगर एवं उषा रेगर पत्नी पप्पूलाल निवासी चांदरास करेडा जिला भीलवाड़ा घायल हो गए, जिनका आरके अस्पताल में उपचार चल रहा है।

बीकानेर में तापमान 46.4 डिग्री सेल्सियस पहुंचा

बीकानेर, (निसं)। इन दिनों बीकानेर प्रदेश के सबसे गर्म जिलों में एक है। तापमान 46.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया है, जिससे सड़कों पर निकलना मुश्किल है। रविवार से नौतपा शुरू हो रहा है, ऐसे में गर्मी से फिलहाल राहत मिलने की उम्मीद भी नहीं है। आने वाले दिनों में तापमान 47 और 50 डिग्री सेल्सियस के बीच भी रह सकता है। मौसम विभाग के बुलेटिन में भी बीकानेर में पारा पचास डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंचने की आशंका जताई गई है।

- आने वाले दिनों में तापमान 47 और 50 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना जताई

मौसम विभाग की ओर से जारी हीट इंडेक्स में राजस्थान के किसी भी जिले में तापमान चालीस डिग्री सेल्सियस से कम नहीं बताया गया है। सभी जिलों में पारा चालीस के पार है। वहीं बीकानेर सहित कुछ जिलों में पारा अब पचास डिग्री सेल्सियस के आसपास पहुंचने की आशंका है। न सिर्फ अधिकतम बल्कि रात का न्यूनतम तापमान भी बढ़ रहा है। रविवार को बीकानेर में अधिकतम गर्मी रहने की आशंका है।

मौसम विभाग की ओर से जारी चेतावनी में बीकानेर पर रेड स्पॉट दिखाया गया है, जिसका मतलब है कि पारा पचास डिग्री सेल्सियस तक जा सकता है।

मौसम विभाग ने रात में भी लू चलने की प्रबल संभावना बताई है। बीकानेर के साथ ही जोधपुर संभाग और शेखावटी क्षेत्र में भी रात के समय लू चल सकती है। ऐसे में लोगों को घरों में सुरक्षित स्थान पर रहने की अपील की गई है। बार-बार पानी पीने और कूलर, पंखे व एसी में रहने की अपील की जा रही है। उधर, गर्मी के कारण उल्टी दस्त के रोगी भी बढ़ गए हैं। हीट स्ट्रोक के रोगी बढ़ने से पीबीएम अस्पताल में विशेष व्यवस्था की गई है। डॉक्टर्स को अलर्ट रखा गया है।

स्वस्तिधाम दिगंबर जैन मंदिर में हुई करोड़ों की चोरी से जैन समाज में रोष

जैन समाज के लोगों ने प्रदर्शन कर कार्रवाई की मांग की।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के जहाजपुर स्थित स्वस्तिधाम दिगंबर जैन मंदिर में हाल ही में हुई करोड़ों रुपये की चोरी से सम्पूर्ण जैन समाज में भारी रोष व्याप्त है।

भीलवाड़ा जैन समाज ने स्वस्तिधाम में मूलनायक भगवान मुनिसुव्रतनाथजी की प्रतिमा से 1 किलो 300 ग्राम सोने का आभामंडल और 3 किलो चांदी के चरण चिन्ह चोरी होने के मामले में जिला कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में बताया गया कि स्वस्तिधाम मंदिर न केवल सम्पूर्ण जैन समाज की आस्था का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक समरसता का भी उदाहरण रहा है। यह कोई पहली घटना नहीं है। देशभर में जैन मंदिरों में इस प्रकार की चोरियों की घटनाएं समय-समय पर सामने आती रही हैं, लेकिन अब तक इनके स्थायी समाधान की दिशा में कोई ठोस प्रयास नहीं हुआ है। जैन समुदाय, जो अहिंसा और तप का प्रतीक है, लंबे समय से अपने तीर्थस्थलों की उपेक्षा का शिकार है। न तो इन्हें पर्याप्त सुरक्षा मिलती है, न ही सरकार की ओर से किसी विशेष संरक्षण योजना का लाभ। राष्ट्रीय और प्रन्तीय सरकारों को चाहिए कि वे जैन मंदिरों की सुरक्षा के लिए एक स्पष्ट नीति बनाएँ। जिन मंदिरों में बहुमूल्य प्रतिमाएं और आभूषण हैं, वहाँ प्रशिक्षित सुरक्षा गार्ड, सीसीटीवी, अलार्म सिस्टम और रात्रि निगरानी जैसे उपाय अनिवार्य किए जाएं। साथ ही, इन मंदिरों की संपत्तियों का बीमा किया जाए। ज्ञापन में प्रशासन से मांग की है कि जहाजपुर की इस चोरी के असामाजिक तत्वों को शीघ्र गिरफ्तार कर चोरी गया सामान बरामद कर जहाजपुर मन्दिर प्रबंध समिति को सौंपा जाए और समाज की मांगों पर ध्यान देते हुए भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोकने के लिए पुख्ता कदम उठाए जाए।

- 1 किलो 300 ग्राम सोने का आभामंडल और 3 किलो चांदी के चरण चिन्ह चोरी होने के मामले में कलेक्टर कार्यालय पर प्रदर्शन किया

सड़क हादसे में एक ही परिवार के दो युवकों की मौत

चौरु/उनियारा, (निसं)। उनियारा उपखंड क्षेत्र में एनएच 116 टोंक-सवाई माधोपुर गलवा पुलिया के पास ट्रैक्टर और मोटरसाइकिल की टक्कर में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। गंभीर घायल युवक को टोक के सहादत हॉस्पिटल में प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर किया गया है। तीनों युवक बाइक से अलीगढ़ की और सरसों की तूड़ी भरने जा रहे थे।

मृतक दोनों भाइयों के फाइल फोटो।

- एक घायल को जयपुर रेफर किया, दोनों भाइयों का एक ही चिता पर अंतिम संस्कार किया

नियारा थाने के एएसआई रतन लाल मीना ने बताया कि नगरफोर्ट थाना क्षेत्र के हमीरपुरा निवासी नरेंद्र सैनी, विष्णु सैनी और सुमन बाइक पर सवार होकर सुबह अलीगढ़ की ओर जार हे थे। जैसे ही वे उनियारा बाइपास पर पहुंचे तो उनके आगे दौड़ रहे ट्रैक्टर-ट्रॉली के चालक ने अचानक ब्रेक लगा लिया दिया। इससे इनकी बाइक ट्रॉली से जा टकराई। इससे तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और तीनों को 108 से टोंक भिजवाया। जहां उपचार के दौरान कुछ देर में ही नरेंद्र सैनी और विष्णु सैनी की मौत हो गई। तीसरे युवक सुमन की हालत गंभीर है, जिसे प्राथमिक उपचार के बाद जयपुर रेफर कर दिया गया है। पुलिस ने मृतकों के शवों का पोस्टमार्टम करवाकर उन्हें परिजनों को सौंप दिया है।

एएसआई रतन लाल मीणा ने बताया कि उन्हें सुबह सड़क दुर्घटना की सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही वह पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे, जहां ट्रैक्टर और बाइक दोनों क्षतिग्रस्त अवस्था में मिले। पुलिस ने दोनों वाहनों को कब्जे में ले लिया है और मामले की जांच शुरू कर दी है। ट्रैक्टर में भारी मात्रा में पाइप रखे हुए थे और चालक द्वारा अचानक ब्रेक लगाने से यह हादसा हुआ है। प्रारंभिक जांच में यह बात सामने आई है कि ट्रैक्टर चालक ने लापरवाही पूर्वक अचानक ट्रैक्टर के ब्रेक लगा दिए।

10 हजार रुपये की रिश्वत लेते सरपंच गिरफ्तार

सूरतगढ़, (निसं)। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो (एसीबी) की दो टीमों ने सूरतगढ़ में एक बड़ी कार्रवाई करते हुए पंचायत समिति की ग्राम पंचायत मोकलसर के सरपंच गणेशाराम गोदारा को 10 हजार रुपये रिश्वत लेते सूरतगढ़ में पुराना हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित आवास से रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई शनिवार दोपहर को एसीबी चौकी हनुमानगढ़ और बीकानेर की टीमों ने मुख्यालय के निर्देश पर अंजाम दी।

- ग्राम पंचायत मोकलसर सरपंच ने आवास योजना की राशि स्वीकृत कराने के एवज में 12 हजार की रिश्वत मांगी
- सरपंच ने 12 हजार रुपये की रिश्वत राशि में से 2 हजार रुपये सत्यापन के दौरान लिए थे

एसीबी के महानिदेशक (पुलिस) डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि चौकी हनुमानगढ़ को शिकायत मिली थी कि मोकलसर सरपंच गणेशाराम गोदारा पंचायत क्षेत्र के निवासी परिवादी के पिता के लिए प्रधानमंत्री आवास योजना की राशि स्वीकृत करवाने के बदले 12 हजार रुपए रिश्वत मांग रहा था। शिकायत की सत्यता जांचने के बाद एसीबी ने जाल बिछाया। उप महानिरीक्षक पुलिस राजेश सिंह के सुपरविजन और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सुधा पालावत के नेतृत्व में पुलिस निरीक्षक राजेन्द्र सिंह ने ट्रैप की कार्रवाई को अंजाम दिया। इस दौरान गणेशाराम को 10 हजार रुपए रिश्वत लेते मौके पर गिरफ्तार किया गया। महानिदेशक ने बताया कि 12 हजार रुपये की रिश्वत राशि में से 2 हजार रुपये सत्यापन के दौरान लिए थे। जबकि शेष 10 हजार रुपये की राशि लेते आज काबू किया गया। हालांकि अधिकारियों ने परिवादी का नाम उजागर करने से इनकार कर दिया।

इस कार्रवाई में एडिशनल एसपी सुधा पालावत के अलावा हनुमानगढ़ एसीबी के सीआई राजेंद्र सिंह, सीआई शालू बिश्नोई सहित रीडर वरुण सिंह, विजय कुमार, रामजस, गुरप्रीत कौर, अमन भादू, ओम सोनी शामिल रहे, जबकि बीकानेर एसीबी की 5 सदस्यीय टीम का नेतृत्व सीआई आनंद मिश्रा ने किया। आरोपी से पूछताछ जारी है और मामले की गहन जांच की जा रही है। एसीबी ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया है।

लकड़ियों से भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली व पिकअप जब्त

सादुलपुर, (निसं)। तहसील के हमीरवास थाना अन्तर्गत चांदगोठी क्षेत्र में वन विभाग ने कार्रवाई करते हुए 6 पिकअप जीप तथा एक ट्रैक्टर ट्रॉली को जप्त किया है तथा सभी वाहनों में लगभग 183 क्विंटल हरि लकड़ियां भरी हुई थी।

तहसील के गांव नवां से भैंसली सड़क मार्ग पर पिकअप जीप से 25 क्विंटल, भैंसली से रामपुरा सड़क मार्ग पर पिकअप जीप से 25 क्विंटल, जनाऊ से चांदगोठी सडक पर पिकअप जीप से 30 क्विंटल, नवा से भैंसली सड़क पर एक पिकअप जीप से 25 क्विंटल सहित कुल 183 क्विंटल हरि लकड़ियों को बरामद करने की कार्रवाई की गई है।

इसके अलावा सादुलपुर, हमीरवास, सिद्धमुख तारानगर आदि क्षेत्रों में हरे पेड़ों की कटाई कर हरियाणा में कच्चे पक्के रास्तों से एवं मध्य रात्रि के बाद हाइवे से हरियाणा में तस्करी की जा रही है, लेकिन लकड़ी तस्करों को रोकने वाला कोई नहीं है।

फैक्टरी और गोदाम में आग लगी

बीकानेर, (निसं)। यहां के नापासर में अलसुबह पापड़ फैक्टरी और गोदाम में आग लग गई। गोदाम में पड़े करीब 5 क्विंटल पापड़ और मौके पर खड़ी मारुति वैन जल गई। घटना की जानकारी पर पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौके पर पहुंचे। तब तक आग में सब कुछ जल चुका था। आग लगने का कारण सामने नहीं आया है। नगर पालिका के पीछे स्थित पापड़ फैक्टरी से सुबह लोगों को धुआं उठता नजर आया। थोड़ी देर में आग की लपटें नजर आने लगी। मौके पर पहुंचे ग्रामीणों और फैक्टरी मालिक ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस अधिकारी, जवानों और ग्रामीणों ने पानी फेंककर डेढ़ घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। गनीमत रही कि कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ। फिलहाल आग लगने का कारण पता नहीं चला है। अभी तक थाने में इस संबंध में कोई मामला दर्ज नहीं हुआ है। स्थानीय लोगों ने देर रात मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया।

फैक्टरी और गोदाम दोनों आस-पास है। ऐसे में फैक्टरी से आग गोदाम में पहुंच गई। जहां सप्लाई के लिए पापड़ रखे हुए थे। ये सभी पापड़ जलने से लाखों रुपए का नुकसान हुआ है।

हादसे में तीन लोगों की मौत

राजसमंद। कांकरोली थाना क्षेत्र के भावा गांव में उदयपुर-भीलवाडा हाईवे पर अनियंत्रित निजी ट्रैवल्स बस के पलटने से तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि 17 लोग घायल हो गए, जिनमें से एक गंभीर रूप से घायल व्यक्ति को उदयपुर रेफर किया गया है।

स्थानीय लोगों ने पुलिस की मदद से सभी घायलों को जिला आरके अस्पताल में भर्ती कराया। जबकि मृत लोगों के शव को आरके अस्पताल की मोर्चरी में रखवाए। घटना की जानकारी मिलते ही जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा, पुलिस अधीक्षक मनीष त्रिपाठी सहित अन्य अधिकारी अस्पताल पहुंचे और घायलों का हालचाल पूछा। जानकारी के अनुसार सुबह साढे सात बजे करीब निजी बस भावा गांव मे अनियंत्रित होकर डिवाइडर पर चढकर पलट गई। सूचना मिलते ही कांकरोली पुलिस, रूपा खेडा टोल रेस्क्यू टीम मौके पर पहुंची और टोल एंबुलेंस और अन्य वाहनों की मदद से घायलों को आरके जिला अस्पताल पहुंचाया गया। इधर, पुलिस ने बस चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है।

चाकू से प्राणघातक हमला, दो भाई घायल

उदयपुर, (निसं)। शहर के प्रतापनगर थाना पुलिस ने बदमाशों के खिलाफ चाकू से हमला कर दो भाइयों को घायल करने का मामला दर्ज किया।

पीड़ित ओमप्रकाश पुत्र रामलाल मेघवाल निवासी मेघवालों की बस्ती देबारी ने पुलिस थाने में प्रकरण दर्ज करवाया। जिसमें पीड़ित ने बताया कि मेरी राष्ट्रीय राजमार्ग 76 पर भारी वाहनों में ग्रीस लगाने की दुकान है। 22 मई रात में मैं अपने भाई राजु को बाइक पर बिठा कर दुकान से घर लौट रहा था। जहां बीच रास्ते मेघवालों की वैली पर मिले तीन-चार लड़कों से क्षैत्र में चोरी होने एवं रात के समय इधर घूमने के लिए एतराज किया। इस बात को लेकर बहस होने पर बदमाशों ने चाकू से हमला कर दिया। हमलावर फरार हो गए।

एसएमएस अस्पताल लापरवाही का मामला उच्च स्तरीय जांच समिति का गठन

गर्भवती को चढ़ाया गया गलत ब्लड ग्रुप, चिकित्सा मंत्री ने बुलाई आपात बैठक

- तीन दिन में सौंपनी होगी रिपोर्ट, दोषियों पर होगी सख्त कार्रवाई
- अस्पताल प्रशासन की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में हुई पुष्टि

जयपुर। प्रदेश के सबसे बडे सवाई मानसिंह अस्पताल में चिकित्सा लापरवाही का सनसनीखेज मामले में चिकित्सा विभाग में हड़कंप मचा दिया है। एसएमएस की जांच कमेटी ने अपनी जांच में माना है कि लापरवाही के चलते टोंक निवाई से भर्ती एक गर्भवती महिला को इलाज के दौरान गलत ब्लड ग्रुप चढ़ा दिया गया था, वहीं दूसरी ओर अस्पताल प्रशासन अभी इस पर अडा हुआ है कि महिला की स्थिति पहले से ही नाजुक थी, जिसके कारण उसकी मौत हुई है। मामले की गंभीरता को देखते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने शनिवार को एसएमएस मेडिकल कॉलेज में उच्च स्तरीय बैठक बुलाई। बैठक के बाद मंत्री ने पांच सदस्यीय उच्च स्तरीय जांच समिति के गठन की घोषणा की, जो तीन दिन में मामले की विस्तृत रिपोर्ट पेश करेगी।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री खींवसर ने कहा है कि इस संवेदनशील मामले में कोई कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। दोषी पाए जाने वाले अधिकारी-कर्मचारियों के विरुद्ध सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

गौरतलब है कि महिला 9 मई से एसएमएस अस्पताल में भर्ती थी। उसकी हालत पहले से ही गंभीर थी। हीमोग्लोबिन कम, ऑक्सीजन लेवल गिरा हुआ और कई बीमारियों से ग्रसित होने के कारण वेंटीलेटर पर डिलीवरी की गई। इस दौरान ब्लड ट्रांसफ्यूजन के दौरान गलत ब्लड ग्रुप चढ़ाया गया, जिसकी पुष्टि खुद अस्पताल प्रशासन की प्रारंभिक जांच रिपोर्ट में हुई है।

मंत्री खींवसर ने स्पष्ट किया कि अस्पताल की ओर से पहले बनाई गई समिति की रिपोर्ट से संतुष्टि नहीं मिलने पर अब चिकित्सा शिक्षा विभाग के अतिरिक्त निदेशक मुकेश मीणा की अध्यक्षता में नई उच्च स्तरीय कमेटी बनाई गई है। इस समिति में एसएमएस पूर्व अधीक्षक डॉ. नरपत सिंह शेखावत, मेडिसिन विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. सुधीर मेहता, एसएमएस अस्पताल के अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी, राजमेस की उप निदेशक डॉ. वंदना शर्मा शामिल है।

बैठक में चिकित्सा मंत्री ने सभी अधीक्षकों को निर्देशित किया कि आईसीयू, ऑपरेशन थिएटर और क्रिटिकल केयर वार्ड में केवल प्रशिक्षित व अनुभवी स्टाफ को ही ड्यूटी पर लगाया जाए। इसके अलावा चिकित्सकों, नर्सिंग और पैरामेडिकल स्टाफ का नियमित प्रशिक्षण सुनिश्चित किया जाए। इस आपात बैठक में चिकित्सा विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़, आयुक्त इकबाल खान, प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी, अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी सहित चिकित्सा महकमे के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

पुलिस कमिश्नरेट में साइबर सपोर्ट सेंटर की शुरुआत

साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिये राजस्थान पुलिस महानिदेशक यू.आर.साहू और पुलिस महानिदेशक साइबर (अपराध) हेमंत प्रियदर्शी ने साइबर सपोर्ट सेंटर की शुरुआत की।

- ऑनलाइन खतरों की बढ़ती चुनौतियों को निटपने के लिए बनाया सेंटर
- साइबर अपराध से सबसे अधिक दो चार हो रहे हैं बच्चे

जयपुर। साइबर सुरक्षा को सुदृढ़ करने सहित ऑनलाइन खतरों की बढती चुनौनियो को निटपने के लिए जयपुर पुलिस कमिश्नरेट कार्यालय में शनिवार से राजस्थान का पहला साइबर सपोर्ट सेंटर शुरू किया गया है। इस सेंटर में साइबर ठगी के शिकार हुए लोगों की मदद की जाएगी। वहीं साइबर अपराध से कई बार महिलाएं और बच्चे परेशान होकर अवसाद में चले जाते हैं। ऐसे में यह सेंटर इस तरह के पीड़ितों की काउंसलिंग करने में मदद करेगा। साथ ही ट्रोमा से बाहर निकालने में मददगार साबित होगा।

राजस्थान पुलिस महानिदेशक यू आर साहू, पुलिस महानिदेशक साइबर (अपराध) हेमंत प्रियदर्शी ने इस सेंटर की शुरुआत की है। यह सेन्टर मुम्बई स्थित एनजीओ रेस्पोंसिबल नेटिजन्स द्वारा संचालित किया जाएगा और कोगटा फाउंडेशन इसमें आर्थिक सहयोग करेगा। यह सेंटर ऑनलाइन ठगी के शिकार हुए लोगों को मुकाबला करने, साइबर अपराधों के पीड़ितों को तत्काल सहायता प्रदान करने और साइबर सेफ जयपुर अभियान के अंतर्गत साइबर वेलनेस को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किया गया है।

साइबर क्राइम और उससे जुड़े आंकड़ों पर काम कर रही टीम ने बताया कि साइबर स्पेस का उपयोग करने वाले तीन में से एक बच्चे को ऑनलाइन बुलिंग का सामना करना पड़ता है। 70 प्रतिशत बच्चों को साइबर खतरों का हर स्टेज पर सामना करना पड़ा है। साइबर अपराध के 30 प्रतिशत मामले महिलाओं को लक्षित करते हैं। एनसीआरबी. के आंकड़ों के अनुसार फाइनेंस साइबर अपराध के मामलों में 24.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। अकेले साइबर धोखाधड़ी के कारण 2024 में 2054 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ।

राजस्थान में हर साल लगभग 3000 साइबर मामले दर्ज किए जा रहे हैं। इनमें से 47.25 प्रतिशत पैसों से जुड़ा अपराध है। 30.16 प्रतिशत यूपीआई. घोटाले से सम्बन्धित है। 12 प्रतिशत सोशल मीडिया से सम्बन्धित है। 11 प्रतिशत यौन उत्पीड़न से सम्बन्धित है। साइबर अपराधों में लोगों ने पिछले तीन साल में 1581 करोड़ रुपए गवा दिए। समय पर हस्तक्षेप के कारण पुलिस 676 करोड़ रुपए होल्ड करा सकी है। साइबर हेल्पलाइन पर साइबर स्टॉकिंग, साइबर बुलिंग और अन्य प्रकार से परेशान किया जाता है। विशेष रूप से महिलाओं के शिकार होने के बारे में हर दिन लगभग 10/15 कॉल आते है।

साइबर बुलिंग, ट्रोलिंग, साइबर स्टॉकिंग, रिवेंज पोर्न और ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी सहित ऑनलाइन संकट के पीड़ितों को मुफ्त मनोवैज्ञानिक, कानूनी और तकनीकी सहायता प्रदान करना। शिक्षा, प्रशिक्षण और जागरूकता अभियानों के माध्यम से साइबर अपराधों के जोखिम को कम करने के लिए उपाय अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना।

इंटरनेट की लत,ऑनलाइन उत्पीड़न या साइबर अपराधों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों से पीड़ित व्यक्तिओं के लिए उपचार की सेवा प्रदान करना। एक सुरक्षित डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र बनाने के लिए स्कूलों, कॉलेजों, सरकारी एजेंसियों, कानून प्रवर्तन और कॉर्पोरेट क्षेत्र के साथ निरंतर जुड़ाव के माध्यम से साइबर कल्याण की वकालात करना।

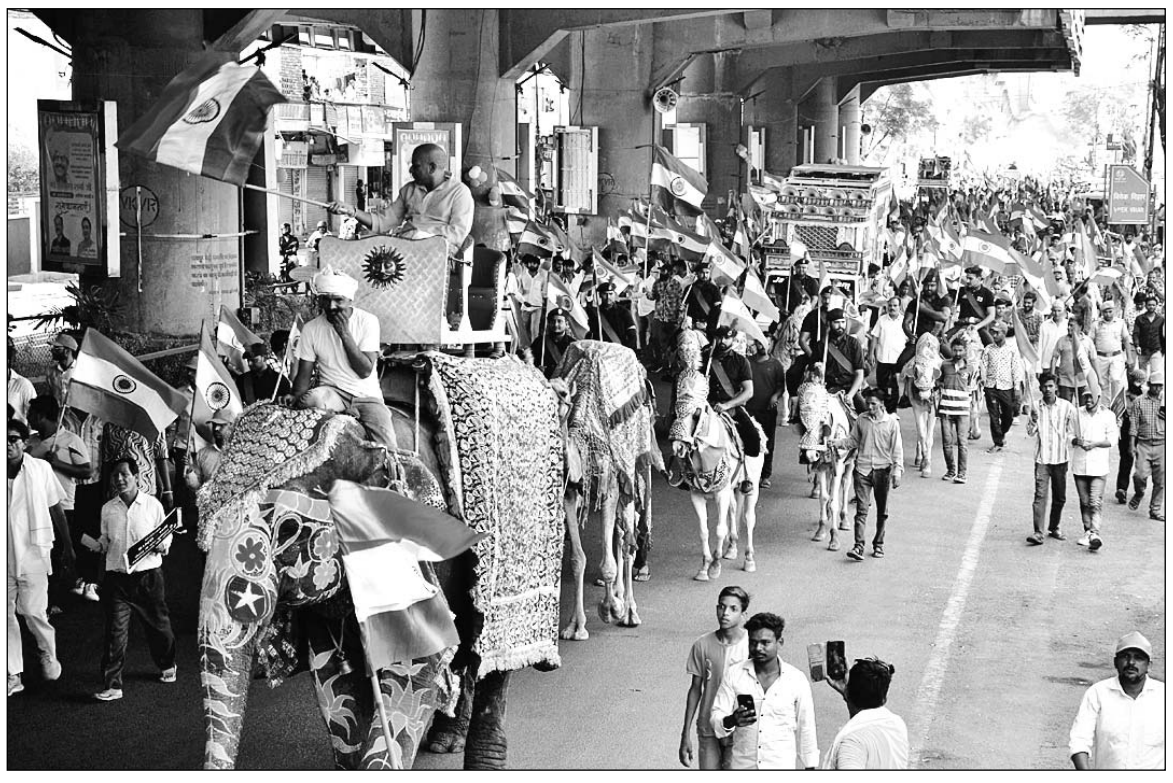

जयपुर में हाथों में तिरंगा थामे हजारों लोग गुर्जर की थड़ी चौराहे से बैकुंठनाथ मंदिर सोडाला तक चिलचिलाती धूप में पैदल चले। प्रचंड गर्मी के बावजूद वे पूरी ताकत से भारत माता की जय, हिंदुस्तान जिंदाबाद, वंदे मातरम के जयघोष लगाते हुए न्यू सांगानेर रोड को गुंजायमान कर रहे थे। यात्रा का नेतृत्व परमवीर चक्र विजेता ब्रिगेडियर होशियार सिंह दहिया और मेजर शैतान सिंह के परिवार ने किया। यात्रा में डीजे पर बजते देश भक्ति तराने युवाओं में जोश और उत्साह का संचार करते हुए थिरकने को मजबूर कर रहे थे। वहीं, भारत माता, जम्मू-कश्मीर में बफीर्ली पहाड़ियों पर सीमा की रक्षार्थ तैनात वीर जवानों और तोप की झांकियां लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी रहीं।

राजापार्क में निकाली तिरंगा यात्रा

जयपुर। देश की सेना और वीर जवानों के सम्मान में आज मालवीय नगर विधानसभा के राजापार्क मंडल में तिरंगा यात्रा को विधायक कालीचरण सराफ ने रवाना किया। मंडल अध्यक्ष मोहित मूलचंदानी ने बताया कि तिरंगा यात्रा राम मंदिर से शुरू होकर पंचवटी सर्किल,राजा पार्क चौराहा होते हुए परनामी मंदिर पर जाकर संपन्न हुई। इस तिरंगा यात्रा में जगह-जगह पर व्यापार मंडल एवं स्थानीय निवासियों द्वारा 20 जगह पर पुष्प वर्षा कर तिरंगा यात्रा का स्वागत किया गया। इस रैली में महिलाओं की भी सक्रिय रूप से भागीदारी रही। इस अवसर पर महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष सुमन शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष अजय पाल सिंह, जसबीर सिंह, जयपुर शहर उपाध्यक्ष ब्रह्माकुमार सैनी, हिमांशु जैन, रमेश गुलाटी,महेश सैनी बच्चू, बलदेव सिंह, लक्ष्मण नूनीवाल, उषा टाटीवाल, कविता कटियार, धनराज महावर,हरीश खड़िया, प्रिया यादव,नरेंद्र कौर, राजेश शर्मा, दीनदयाल सैनी एवं काफी संख्या में भाजपा कार्यकर्ता स्थानीय निवासी एवं व्यापारी बंधु शामिल हुए।

राजस्थान में स्वास्थ्य सेवाओं पर सख्त निगरानी, कोताही पर होगी सख्त कार्रवाई

- प्रदेशभर में स्वास्थ्य सेवाओं को 'पेशेंट फ्रेंडली' बनाने के निर्देश, लू-तापघात प्रबंधन पर विशेष ज़ोर
- सिलिकोसिस पीड़ितों को मिले तत्काल राहत, फर्जीवाड़े पर कड़ी कार्रवाई

जयपुर। राजस्थान सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को लेकर बड़ा फैसला लेते हुए चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग ने साफ कहा है कि सेवाओं में किसी भी तरह की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और ज़रूरतमंदों को समय पर जांच, दवा और उपचार मिलना सुनिश्चित किया जाएगा। प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने शनिवार को स्वास्थ्य भवन में आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंस में सभी जिलों के चिकित्सा अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच राजधानी से गांव-ढाणी तक मजबूत होनी चाहिए। लू-तापघात की स्थिति को देखते हुए तैयारियों को सर्वोच्च प्राथमिकता देने के आदेश दिए गए हैं।

राठौड़ ने निर्देश दिए कि जांच, दवा, उपचार, उपकरणों की उपलब्धता और क्रियाशीलता की नियमित मॉनिटरिंग की जाए। कोई भी मरीज जांच मशीनें खराब होने के कारण परेशान न हो, इसके लिए संस्थानों में समय पर मेंटीनेंस कराया जाए। जांच मशीनें लंबे समय तक अक्रियाशील रहीं तो संस्थान प्रभारी की जिम्मेदारी तय की जाएगी। स्टाफ की कमी होने पर संविदा पर भर्ती कर तत्काल व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

प्रमुख शासन सचिव ने निरामय राजस्थान को मिशन मोड में चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि 30 वर्ष से अधिक आयु के हर नागरिक की एनसीडी स्क्रीनिंग का लक्ष्य समय पर पूरा किया जाए। साथ ही टीबी मुक्त भारत अभियान को और अधिक गति देने की जरूरत बताई गई।

सिलिकोसिस पीड़ितों को योजनाओं का लाभ देने में संवेदनशीलता बरतने के निर्देश दिए गए। लेकिन फर्जी दस्तावेज या जांच रिपोर्ट के ज़रिए लाभ उठाने वालों पर कड़ी कानूनी कार्रवाई की चेतावनी भी दी गई। राज्य के सभी चिकित्सा संस्थानों को फायर सेफ्टी ऑडिट तत्काल कराने, भवनों का समय-समय पर निरीक्षण करने और ज़रूरत पड़ने पर मरम्मत करवाने के निर्देश दिए गए हैं। खाद्य पदार्थों में मिलावट को लेकर जांच अभियान चलाने और स्ट्रीट फूड से लेकर बड़े खाद्य उत्पादकों तक की सख्त निगरानी के आदेश दिए गए हैं। दिव्यांगजन प्रमाण-पत्र के लंबित मामलों को तीन महीने में समाप्त करने की कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए गए। कोई दिव्यांगजन प्रमाण के लिए चक्कर न काटे, यह सुनिश्चित करने को कहा गया।

जोधपुर विश्वविद्यालय में पेंशनर्स को छह माह से पेंशन नहीं

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय पेंशनर्स एसोसिएशन (रूपा) कार्यकारिणी की आज आपातकालीन बैठक विश्वविद्यालय अतिथि गृह में आयोजित की गई, इस बैठक में राज्य पोषित विश्वविद्यालयों,विशेष रूप से जय नारायण विश्वविद्यालय जोधपुर में पिछले 6 माह से विश्वविद्यालय कर्मियों को पेंशन जारी नहीं किए जाने जैसे विषय की गंभीरता से जुड़े विभिन्न आयामों पर विस्तार से चर्चा की गई, वह चर्चा के बाद कार्यकारिणी से जुड़े सदस्यों ने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया , कि इस गंभीर विषय के संबंध में राज्य सरकार का ध्यान आकृष्ट करने के उद्देश्य से एक विशाल धरना 26 मइ को राजस्थान विश्वविद्यालय कुलपति सचिवालय के समक्ष आयोजित किया जाएगा।

धरने में राजस्थान विश्वविद्यालय से जुड़े सभी पेंशनर्स भाग लेंगे। पेंशनर्स एसोसिएशन ने विश्वविद्यालय से जुड़े कर्मियों व सभी पेंशनर्स से यह आग्रह किया है कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस धरने में शामिल हो, जिससे इस स्थिति का भविष्य में किसी को भी सामना नहीं करना पड़े।

चार कैदी चकमा देकर हुए फरार

जेल से इलाज के लिए एसएमएस अस्पताल लेकर आए थे

- कई घंटे के प्रयास के बाद एसएमएस अस्पताल से कैदियों को अलग-अलग जगह से किया गिरफ्तार

जयपुर। जयपुर सेंट्रल जेल से इलाज के लिए एसएमएस अस्पताल लेकर आए चार कैदी पुलिस गार्ड और डॉक्टर को चकमा देकर फरार हो गए। इस सूचना के बाद पुलिस में खलबली मच गई। आनन फानन में पुलिस ने कडी नाका बंदी करवाई।

इस सूचना के बाद पुलिस कमिश्नर सहित अन्य अधिकारियों ने मिलकर सर्च अभियान शुरू किया और कई घंटे के प्रयास के बाद एसएमएस अस्पताल से भागे कैदियों को अलग-अलग जगह से गिरफ्तार कर लिया।

एडिशनल डीसीपी आसाराम ने बताया की शनिवार दोपहर को चार कैदियों को इलाज के लिए एसएमएस अस्पताल लेकर गए थे । जहां से कैदी पुलिस गार्ड और डॉक्टर को चकमा देकर फरार हो गए। कई घंटे तक चल सर्च अभियान के बाद पुलिस ने दो बडियो को जालूपुरा से और दो कैदियों को जयपुर और एयरपोर्ट के नजदीक से पकड लिया। गिरफ्तार करने के बाद कैदियों को लाल कोठी थाने पर लाया गया और उनसे पूछताछ की जा रही है। इस पूरे प्रकरण में पुलिस अस्पताल प्रशासन और गार्डों की मिली भगत सामने आ रही है । कैदियों से पूछताछ के बाद उन्हें वापस जयपुर सेंटर जेल में छोड दिया गया।

चार छात्र फ्रांस में अध्ययन के लिये चयनित

जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय के यूरोपीय भाषाएँ, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन विभाग के एम.ए. फ्रेंच के चार प्रतिभाशाली विद्यार्थियों गौरव गर्ग, पलक शर्मा, पलक तोषावर और भव्य सिंह शेखावत का चयन मेरिट के आधार पर, फ्रांस में एक सेमेस्टर अध्ययन के लिए हुआ है। यह अवसर समझौता ज्ञापन के अंतर्गत संभव हुआ है, जिससे अब तक विभाग के अनेक छात्र-छात्राओं को अंतरराष्ट्रीय शैक्षिणक अनुभव प्राप्त हुआ है। राजस्थान विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. अल्पना काटेजा के नेतृत्व में विश्वविद्यालय ने अंतरराष्ट्रीय शैक्षिणक आदान-प्रदान को सशक्त रूप से बढ़ावा दिया है। विभागाध्यक्ष डॉ. निधि रायसिंघानी के निरंतर मार्गदर्शन और विद्यार्थियों को अंतरराष्ट्रीय मंच से जोड़ने के प्रयास निश्चित रूप से लाभकारी सिद्ध हुए हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय के यूरोपीय भाषाएँ विभाग में स्नातकोत्तर (मास्टर्स) कार्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन करना और साथ ही फ्रांस की प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में एक सेमेस्टर अध्ययन का अवसर प्राप्त होना, इस विभाग में अध्ययन का एक प्रमुख आकर्षण है।

प्रदेश में फिर सिर उठाने लगा करोना

10 नए केस, 7 मरीज मिले जयपुर-जोधपुर से

- ओमिक्रॉन का सब-वैरियंट-1 सक्रिय, चिकित्सा विभाग अलर्ट मोड पर

जयपुर। करोना एक बार फिर राजस्थान में दस्तक देने लगा है। पिछले चार महीने तक जहां कोविड के मामले लगभग नगण्य थे, वहीं मई माह में अब तक 10 नए केस दर्ज हो चुके हैं। बीते 48 घंटे में 7 नए संक्रमित मिले हैं, जिनमें 4 मरीज जोधपुर एम्स और 3 जयपुर के एसएमएस मेडिकल कॉलेज में सामने आए हैं। चिंता की बात ये है कि इन सभी मामलों में करोना के नए सब-वैरियंट-1 की आशंका जताई जा रही है, जो फिलहाल एशियाई देशों में तेजी से फैल रहा है। इसे देखते हुए चिकित्सा विभाग ने जीनोम सीक्वेंसिंग की प्रक्रिया तेज कर दी है और अस्पतालों को अलर्ट मोड में डाल दिया गया है।

अचानक बढ़े मामलों ने बढ़ाई चिंता

करोना के अचानक बढ़े मामलों ने चिंता बढ़ा दी है। वर्ष 2025 के पहले चार महीनों में पूरे राज्य में केवल दो करोना पॉजिटिव केस सामने आए थे। मगर मई की शुरुआत से ही मामले बढ़ने लगे हैं। खासकर बीते दो दिनों में संक्रमितों की संख्या में तीव्र उछाल देखा गया है। जोधपुर एम्स में पाए गए चार संक्रमितों में तीन बच्चे शामिल हैं, जिनकी उम्र 5 महीने से 12 साल के बीच है। चौथा मरीज 38 वर्षीय युवक है। वहीं, जयपुर में तीन नए केस सामने आए हैं।

वैरियंट की पहचान ज़रूरी

चिकित्सा विभाग ने सभी नए संक्रमितों के सैंपल की जीनोम सीक्वेंसिंग शुरू कर दी है। विभाग की प्रमुख शासन सचिव गायत्री राठौड़ ने बताया कि नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल की हालिया बैठक में यह पुष्टि हुई है कि यह नया संक्रमण ओमिक्रॉन के सब-वैरियंट-1 से जुड़ा हो सकता है। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इस वैरियंट से न तो अब तक किसी की मौत हुई है और न ही कोई गंभीर मामला रिपोर्ट हुआ है। मरीज साधारण दवाओं से ठीक हो सकते हैं।

सतर्कता ज़रूरी, डर नहीं

विशेषज्ञों का कहना है कि अभी घबराने की नहीं, बल्कि सतर्क रहने की ज़रूरत है। लक्षण दिखने पर तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें। मास्क और सैनिटाइजर का फिर से उपयोग बढ़ाएं, भीड़भाड़ वाली जगहों में सावधानी बरतें।

ऐसे बढे करोना के केस

मई में अब तक 10 नए करोना केस, जनवरी से अप्रैल तक केवल 2 केस, बीते 48 घंटे में 7 नए केस, 4 जोधपुर, 3 जयपुर के हैं।

इनका कहना है :

एसएमएस मेडिकल कॉलेज में चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने बताया कि अभी तक किसी भी केस में घातक लक्षण सामने नहीं आए हैं। देशभर में पैनिक जैसी कोई स्थिति नहीं है। पर हमने सभी अस्पतालों को निर्देश दे दिए हैं कि यदि कोई संदिग्ध मरीज आता है, तो उसकी तुरंत जांच की जाए।

डबल स्टैंडर्ड की सरकार, जो पक्ष-विपक्ष के लिए चाहती है अलग कानून : डोटासरा

जयपुर। प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने कंवरलाल मीणा मामले में विधानसभा स्पीकर वासुदेव देवनानी और भजनलाल सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि कंवरलाल मीणा की सदस्यता रद्द करने में आखिर 24 दिन की देरी क्यों की गई? इस मामले में जानबूझकर कानून का उल्लंघन किया गया है।

इसी के साथ भाजपा विधायक कंवरलाल मीणा की सदस्यता होने के बाद अब अंता विधानसभा क्षेत्र में होने वाले उपचुनाव को लेकर डोटासरा ने कहा कि अंता उपचुनाव में कांग्रेस की जीत होगी। पिछली बार ही चार से पांच हजार वोटों का अंतर था। जिस व्यक्ति पर 27 मुकदमे दर्ज हों, वहां भाजपा ने बूथ कैप्चरिंग की। कुछ लोगों ने डर की वजह से वोट दे दिए थे, लेकिन अब वहां कांग्रेस की जीत होगी।

प्रदेश मुख्यालय में आयोजित कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से डोटासरा ने कहा कि राज्य सरकार और विधानसभा अध्यक्ष के फैसले से जनता में गलत संदेश गया है। ये कहते हैं कि हम डबल इंजन की सरकार है। यह डबल इंजन की नहीं, डबल स्टैंडर्ड की सरकार हैं जो अपने लिए अलग कानून चाहती है और विपक्ष के लिए अलग कानून चाहती है। जब राहुल गांधी की सदस्यता 24 घंटे के अंदर खत्म कर दी गई थी तो फिर भाजपा विधायक की सदस्यता रद्द करने में 24 दिन का समय क्यों लिया गया?

रात्रि चौपाल में आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निस्तारण हुआ

जयपुर। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर जिले की सभी तहसीलों में रात्रि चौपालों का आयोजन किया जा रहा है। इसी कड़ी में सांगानेर के अजयराजपुरा में रात्रि चौपाल का आयोजन कर आमजन की परिवेदनाओं का प्रभावी एवं त्वरित निरस्तारण किया गया। इस दौरान 100 से अधिक धारा-136 के तहत शुद्धि प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया।

अतिरिक्त जिला कलक्टर जयपुर प्रथम श्रीमती विनीता सिंह की अध्यक्षता में आयोजित रात्रि चौपाल कार्यक्रम में उपखण्ड अधिकारी सांगानेर श्री हिम्मत सिंह एवं पंचायती राज, विधुत विभाग, पीएचईडी, पीडब्ल्यूडी सहित अन्य विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। रात्रि चौपाल में ग्राम पंचायत अजयराजपुरा के अलावा आस-पास के लगभग 10-12 गांव चिरोटा, जगन्नाथपुरा, भांकरोटा खुर्द इत्यादि के लगभग 250 से ज्यादा लोगों ने भाग लेकर अपनी पेयजल, विद्युत समस्या व अन्य समस्या बताई। पेयजल, विद्युत अन्य समस्याओं को संबंधित अधिकारियों को निर्देशित कर तुंरत समाधान करवाया गया।

रात्रि चौपाल में मूल समस्या रिकॉर्ड शुद्धि को लेकर सामने आई जिसे लेकर काफी वर्षों से ग्रामीण लोग परेशान होते चले आ रहे थे। उक्त समस्याओं को मौके पर उपखण्ड अधिकारी हिम्मत सिंह द्वारा सुना गया एवं 100 से अधिक धारा-136 के तहत शुद्धि प्रकरणों का मौके पर ही निस्तारण किया गया।

ग्राम अजयराजपुरा से आये काश्तकार गोपाल पुत्र मोहरिया का जमाबंदी में नाम गलत नाम जिसे गोपाल पुत्र मोहरू कर तुरंत राहत प्रदान की साथ ही ग्राम जगन्नाथपुर के काश्तकार का नाम जमाबंदी में नाम सूरज करण पुत्र नाथू से सूरजमल पुत्र नाथूराम किया गया। मौके पर उपस्थित लोगों में रात्रि चौपाल को लेकर काफी हर्ष की लहर थी।

रात्रि चौपाल में उपखण्ड अधिकारी हिम्मत सिंह के साथ उप तहसीलदार बगरू, पटवारी, गिरदावर व अन्य पटवारीगण की टीम उपस्थित रही। उक्त रात्रि चौपाल कार्यक्रम में ग्रामीणों की समस्याओं के त्वरित निस्तारण की श्रीमती विनीता सिंह (एडीएम प्रथम) द्वारा उपखण्ड अधिकारी व उनकी टीम की सराहना की।

जिला कलेक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी के निर्देश पर सांगानेर के अजयराजपुरा में शनिवार को रात्रि चौपाल का आयोजन किया गया।

डॉक्टर की मौत को लेकर कार्रवाई की मांग, परिजनों ने हंगामा किया

बारां के कोयला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात डॉक्टर का शव नदी में मिलने का मामला

कोटा, (निसं)। बारां जिले की कोयला सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनात डॉ. वैभव चावला की लाश पार्वती नदी में मिली थी। इस मामले में शुरुआत में आत्महत्या करने की बात सामने आई थी लेकिन पुलिस ने उनके पिता की शिकायत पर हत्या का प्रकरण दर्ज किया है। साथ ही इस मामले में दो चिकित्सक और दो स्वास्थ्य कर्मियों के नाम भी मुकदमा दर्ज किया गया है। इस मामले में पुलिस जांच कर रही है।

दूसरी तरफ परिजनों ने शनिवार को कोटा महानिरीक्षक पुलिस कार्यालय के बाहर प्रदर्शन किया। इस दौरान मृतक के परिवार की महिलाएं बेसुध हो गईं। साथ ही कार्यालय में ही धरने पर बैठ गईं। काफी देर चले धरने प्रदर्शन में आईजी कार्यालय में हंगामा होता रहा। मौके पर एडिशनल एसपी बेनी प्रसाद मीणा पहुंचे। बावजूद इसके काफी देर तक लोग नहीं माने। बाद में इन्होंने आईजी को ज्ञापन दिया। साथ ही इस पूरे प्रकरण में सीबीआई जांच की मांग कर दी। इसके अलावा उन्होंने

कोटा आईजी ऑफिस पर मृतक डॉक्टर के परिजनों ने धरना दिया।

हत्या में डॉक्टर और स्टॉफ के शामिल होने का आरोप लगाते हुए उन्हें जल्द गिरफ्तार करने और फांसी की सजा देने की मांग भी की है।

प्रदर्शन कर रहे रोहित आर्य का कहना है कि बारां जिले में 18 मई को डॉ. वैभव चावला का शव कोटडी सूंडा गांव में मिला था। इस मामले को पुलिस ने पहले आत्महत्या माना लेकिन बाद में सीसीटीवी सामने आया था कि घटना के दिन उसे बाइक पर बैठाकर दो अस्पताल कार्मिक लेकर जा रहे थे। दूसरी तरफ डॉ. वैभव चावला तैरना जानते थे। ऐसे में नदी में डूबने की घटना गलत है। जब वह डूब रहे थे तो उन्होंने किसी व्यक्ति की मदद भी नहीं ली। यह भी संशय के घेरे में है। उनका दावा है कि डॉ. वैभव चावला से कई चिकित्सक रंजिश भी रखते थे। इस पूरे मामले की जांच होनी चाहिए।

मृतक के पिता गोपाल लाल आर्य का कहना है कि घटना के समय बाइक, जूते और उसका मोबाइल भी नहीं मिला है। डॉ. वैभव के साथ नदी की तरफ दो अस्पताल के कर्मचारी भी गए थे लेकिन पुलिस ने इस घटनाक्रम में अभी तक कुछ भी नहीं कहा है इसीलिए यह चिंता का विषय है। डॉ. वैभव मूल रूप से कोटा जिले के इटावा निवासी हैं।

बारां के एडिशनल एसपी राजेश चौधरी का कहना है कि प्रकरण में मृतक के पिता गोपाल लाल आर्य की शिकायत के आधार पर ही हत्या की धाराएं जोड़ी गई हैं। इसकी जांच बारां के पुलिस उपअधीक्षक ओमेंद्र सिंह शेखावत कर रहे हैं।

पुलिस उपअधीक्षक ओमेंद्र सिंह शेखावत का कहना है कि मामले में नर्सिंग अधीक्षक, सेक्टर हेल्थ सुपरवाइजर के साथ पूर्व बीसीएमएचओ और पूर्व सीएमएचओ के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। मामले की जांच की जा रही है जिसके बाद ही कुछ कहा जा सकता है।

जमीन विवाद में हत्या करने वाले चार आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। झाड़ोल थाना पुलिस ने जमीन विवाद में प्राणघातक हमला कर व्यक्ति की हत्या करने वाले चार आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

प्रकरण के अनुसार गोपालसिंह पुत्र धनसिंह निवासी बेलनिया झाड़ोल ने 21 मई को पुलिस थाने में रिपोर्ट दी। जिसमें उसने बतायाकि रात में आठ बजे गणपत सिंह, मनोहर सिंह, गजेसिंह व तेजसिंह ने पत्थर व तलवार से हमारे परिवार पर हमला कर दिया, जिससे मेरे पिता धनसिंह, भाई नाहरसिंह तथा मेरे गंभीर चोटें आईं। गंभीर घायल धनसिंह की एमबी चिकित्सालय में उपचार के दौरान मौत हो गई। इस मामले में प्रकरण दर्ज होने पर जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक नेत्रपालसिंह के सुपरविजन में फलासिया थानाधिकारी सीताराम के नेतृत्व में गठित दल ने मिले साक्ष्यों के आधार पर हत्या के आरोपी गणपतसिंह पुत्र कुबेरसिंह, मनोहरसिंह पुत्र कुबेरसिंह, तेजसिंह पुत्र कुबेरसिंह तथा गजेसिंह पुत्र मनोहरसिंह निवासी वेलनिया झाड़ोल को पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया। प्रारंभिक पूछताछ में पता चला कि धनसिंह को अपनी काकी के गोल लिया हुआ था उसके बाद से धनसिंह को ढाई बीघा जमीन खेती करने के लिए दे रखी थी। लेकिन जमीन का इन्द्राज धनसिंह के नाम नहीं हुआ। इसी कारण गणपत सिंह द्वारा उक्त सामलाती जमीन के कुछ हिस्से को खातेदारों से खरीद कर गणपतसिंह के नाम करा दी व उक्त खेत की जुताई कर दी। इस बात को लेकर दोनों पक्षों के बीच झगड़ा हुआ, जिसके चलते धनतसिंह की मौत हो गई।

चांदगोठी के मोहल्ला अम्बेडकर में पेयजल संकट गहराया

सादुलपुर, (निसं)। ग्राम चांदगोठी के मोहल्ला अम्बेडकर में पानी की सप्लाई दो-तीन दिनों के बाद अर्थात् चार-चार दिनों से होने के कारण मोहल्ला में पेयजल संकट गहराया हुआ है।

मोहल्लेवासियों ने बताया कि पेयजल सप्लाई दो-तीन दिनों के अन्तराल से होने के कारण गर्मी के मौसम में पीने के पानी की किल्लत चल रही है। अमर सिंह मिरासी ने बताया कि चांदगोठी के मोहल्ला अम्बेडकर में मेघवाल, धानक एवं मिरासी समाज के परिवार निवास करते हैं और यह मोहल्ला गांव में पानी की लाइन के अंतिम छोर पर है, इसलिए इस मोहल्ले में पानी पहुंचते-पहुंचते बीच रास्ते में ही खत्म हो जाता है।

इस संबन्ध में ग्रामीणों ने सांसद राहुल कस्वां, विधायक मनोज कुमार न्यांगली, विनोदजी प्रधान पंचायत समिति राजगढ़ जिला चूरू, सुमित्रा भाजपा प्रत्याशी, पूर्व विधायक डॉ. कृष्णा पूनियां, भरथ सिंह सरपंच ग्राम पंचायत चांदगोठी, डॉ. सतपाल चाहर जिला पार्षद, कृष्णा पूनिया पंचायत समिति सदस्य, अधीक्षण अभियन्ता जलदाय विभाग चूरू, सहायक अभियंता जलदाय विभाग राजगढ़, कनिष्ठ अभियंता जलदाय विभाग चांदगोठी सभी से करबद निवेदन कर पेयजल संकट से राहत प्रदान करवाने की मांग की है।

जमीन विवाद की रंजिश के चलते रास्ते में गाड़ी रुकवाकर मारपीट की

हनुमानगढ़, (निसं)। जमीन विवाद की रंजिश के चलते रास्ते में गाड़ी रुकवाकर मारपीट करने, लट्ठ मारकर गाड़ी के शीशे तोड़ने, नकदी भरा पर्स व सोने का ताबीज छीनने का मामला सामने आया है। इस संबंध में सदर पुलिस थाना में मुकदमा दर्ज करवाया गया है।

- **गाड़ी के शीशे तोड़ने, नकदी भरा पर्स व सोने का ताबीज छीनने का आरोप**

पुलिस के अनुसार गिरधारी लाल (45) पुत्र कुरड़ाराम मेघवाल निवासी चक 37 एसएसडब्ल्यू, सहजीपुरा ने लिखित रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि देवीलाल, वीरू, विनोद पुत्र भादरराम, बलवंत, भादरराम पुत्र लिछमण राम, अनिल पुत्र भागीरथ, हंसराज पुत्र सोहनलाल, नितेश पुत्र हंसराज निवासी सहजीपुरा उसके साथ जमीन विवाद के चलते रंजिश रखते हैं और उसे एवं उसके परिवार को जान-माल की क्षति कारित करने की फिराक में रहते हैं। इसके लिए उसने पूर्व में इन लोगों को पाबंद करने के लिए प्रार्थना पत्र एवं एसडीएम के समक्ष इस्तगासा प्रस्तुत किया हुआ है। वह, विमला देवी, कमला देवी, ताराचंद, गिरधारी, कृष्णलाल अपने खेत में बनी ढाणी से किसी कार्य से हनुमानगढ़ आ रहे थे। गाड़ी ताराचंद चला रहा था। जब वे गांव के पास पहुंचे तो उक्त लोगों के अलावा मदनलाल पुत्र गोकलराम नायक, सोनू पुत्र सेवा सिंह बावरी निवासी सहजीपुरा व 7-8 अन्य लोग गांव सहजीपुरा से पहले हड्डा रोड़ी के पास हाथ में लाठी, गंडासी व पत्थर के टुकड़े लेकर खड़े मिले। इन लोगों ने गाड़ी रूकवा ली। हंसराज व अनिल ने ताराचंद का गला पकड़ नीचे पटकने का प्रयास किया। हंसराज व अनिल ने ताराचंद की जेब में से पर्स निकाल लिया, जिसमें दस हजार रुपए थे। देवीलाल व विनोद ने विमला के सिर में लट्ठ मारने के लिए पहले शीशे पर वार किया। शीशा टूटने पर दूसरी बार कमला व विमला पर किया और थाप-मुक्कों से मारपीट की। विमला ने गाड़ी की सीट के नीचे घुसकर अपनी जान बचाई। पीछे खड़े भादरराम, मदनलाल व सोनू ने गाड़ी के पिछले शीशे लट्ठ मारकर तोड़ दिए।

शीशे टूटते ही मदनलाल, सोनू तथा वीरू ने कमला को खींचकर नीचे पटकना चाहा। इन लोगों ने कमला के गले में पहना सोने का ताबीज निकाल लिया। गाड़ी तेज होने पर इन लोगों ने उन्हें जान से मारने के लिए पीछे से पत्थर फेंके। कमला व गिरधारी के कंधे पर पत्थर लगने से चोट लगी। हंसराज व भादर ने गालियां निकाली। पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान एएसआई कुलदीप मीणा के सुपुर्द किया है।

बीकानेर के यात्रियों के दल के लोगों से केदारनाथ में मारपीट

बीकानेर, (निसं)। देश के विख्यात पर्वतारोही मगन बिस्सा की पत्नी सुषमा बिस्सा और उनके परिवार के साथ केदारनाथ में कुछ लोगों ने मारपीट की है। इसके बाद वहां हंगामा हो गया। घटनाक्रम की शिकायत मौके पर तैनात सुरक्षा बलों से भी की गई। हालांकि इसके बाद भी सुरक्षा के इंतजाम नहीं हुए। सुषमा बिस्सा स्वयं देश की विख्यात महिला पर्वतारोही है।

- **बीकानेर से 35 यात्रियों का एक दल गया हुआ था, दर्शन करने को लेकर झगड़ा हुआ**

जानकारी के अनुसार बीकानेर से करीब 35 यात्रियों का एक दल केदारनाथ और बद्रीनाथ के लिए रवाना हुआ था। इसमें पर्वतारोही सुषमा बिस्सा और उनके परिवार के सदस्य भी शामिल थे। सुषमा के बेटे रोहिताश बिस्सा ने केदारनाथ से फोन पर बताया कि 35 लोगों का ग्रुप केदारनाथ आया था। इस ग्रुप के कुछ सदस्यों ने रुपए देकर वीआईपी दर्शन कर लिए, लेकिन सुषमा बिस्सा ने रुपए नहीं दिए। सुबह साढ़े तीन बजे लाइन में लगी। करीब दस घंटे की मशक्कत के बाद मंदिर के पास पहुंचते ही पट बंद हो गए। रोहिताश बिस्सा ने बताया कि आमतौर पर दो घंटे में नंबर आ जाता है लेकिन यहां लोगों को अवैध तरीके से लाइन तोड़कर दर्शन के लिए आगे बढ़ाया जा रहा था। इसका विरोध करने पर स्थानीय लोगों ने मारपीट शुरू कर दी। सुषमा बिस्सा के साथ सबसे पहले मारपीट की गई। बीच-बचाव करने गए रोहिताश के साथ भी मारपीट की। रोहिताश के एक हाथ की अंगुली पर चोट लगी, जिससे खून बहने लगा, जिस मोबाइल से मारपीट करते हुए का वीडियो बनाया गया, उसे भी तोड़ दिया गया। वीडियो छीनकर सुषमा बिस्सा के मुंह पर मारा गया, जिससे उन्हें चोट लगी। मौके पर आए सुरक्षा बलों ने बीच बचाव किया लेकिन तब तक स्थानीय लोग मारपीट करते रहे। इस दौरान एक युवक को पकड़कर सुरक्षा बलों को सौंपा गया लेकिन वो वहां फरार हो गया। केदारनाथ ट्रस्ट से जुड़े अधिकारियों और सुरक्षा बलों को शिकायत के बाद भी कोई ठोस कार्रवाई इन बदमाशों पर नहीं हुई।

देश के विख्यात पर्वतारोही दिवंगत मगन बिस्सा का ये पूरा परिवार ही पर्वतारोही है। सुषमा बिस्सा स्वयं बच्छेंद्री पाल के साथ एवरेस्ट पर चढ़ाई कर चुकी है। इसके अलावा उनके बेटे रोहिताश बिस्सा भी पर्वतारोही है और लोगों को पर्वतारोहण का प्रशिक्षण देते हैं।

कुएं में ब्लास्ट कर मछलियां मारने का आरोप

पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की

उदयपुर, (निसं)। जिले के सायरा क्षेत्र में शनिवार को एक कुएं में मछलियां मरी हुई मिली। रोजाना की तरह ही आज सुबह ग्रामीण कुएं पर पहुंचे थे। वहां पर कुएं के बाहर मछलियां तड़प रही और कुछ मर चुकी थी। ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि किसी असामाजिक तत्व ने ब्लास्ट कर मछलियों का मार दिया। घटना सायरा से करीब दो किलोमीटर दूर ब्राह्मणों का कलवाना गांव की है।

ग्रामीणों ने बताया कि प्रथम दृष्टया मौके की स्थिति से लग रहा है कि किसी असामाजिक तत्व ने कुएं के वहां पर ब्लास्ट किया और मछलियों का मार दिया। गांव के लाला भाई ने बताया कि पूरे गांव के लिए यह कुआं पनिहारी का काम करता है। गांव में जिनके नल कनेक्शन नहीं है वे सब यहीं से पानी भरकर लाते हैं। इसके अलावा सिंचाई के लिए भी इसी पानी का उपयोग करते हैं। उन्होंने बताया कि एक हजार की आबादी वाले इस गांव में बड़ी संख्या में लोग इस कुएं का उपयोग करते हैं।

सूचना मिलते ही सायरा थाने के एएसआई भंवर सिंह राजपूत पुलिस जाब्ते के साथ मौके पर पहुंचे और हालात का जायजा लिया। मामले की गंभीरता को देखते हुए फॉरेंसिक टीम को भी सूचना दी गई है। पुलिस ने अज्ञात बदमाशों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं ग्रामीणों की मांग है कि जल्द से जल्द दोषियों को गिरफ्तार करे और कुएं के पानी की वैज्ञानिक जांच करवाई जाए ताकि किसी बड़ी अनहोनी से बचा जा सके। पुलिस ने ग्रामीणों से अपील की है कि जब तक पानी की जांच रिपोर्ट नहीं आवे तब तक इसे पीने में काम नहीं लेवें।

बजरी माफिया ने युवक को क्रेन से उल्टा लटकाकर मारा

ब्यावर, (निसं)। बजरी माफिया द्वारा युवक को क्रेन से उल्टा लटकाकर मारने का मामला सामने आया है। पिछले दिनों रायपुर में यह घटना घटित हुई। युवक पर डीजल चोरी करने का आरोप था जिस पर उसे अमानवीय तरिके से मारपीट की गई।

- **युवक को बेल्ट से मारने का वीडिओ सोशल मीडिया पर वायरल हुआ**

प्राप्त जानकारी के अनुसार उसे की घंटो तक ऐसी सज़ा दी गई जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया जिसे राजकीय अमृतकौर चिकित्सालय में भर्ती करवाया गया है। घटनाक्रम का वीडियो वहां किसी ने बना लिया था। हालांकि वीडिओ दो दिनों बाद सोशल मीडिया पर आया लेकिन युवक के अस्पताल में भर्ती हो जाने से भी जानकारी सामने आने लगी थी। क्रेन पर उल्टा लटकाकर बेल्ट से मारने का वीडिओ सोशल मीडिया पर वायरल होते ही पुलिस प्रशासन हरकत में आया। पुलिस ने गुड़िया ग्राम से आरोपी तेजपाल और परमेश्वर को राउंडअप किया है। पीड़ित याकूब को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है जबकि पुलिस ने पांच आरोपियों को नामजद किया है। बताया जा रहा है की आरोपी पहले से ही हिस्ट्रीशीटर है। पीड़ित के बयान के बाद, काठात समाज और आमजन की मांग पर जांच कार्यवाही तेजी से जारी है। यह भी जानकारी में आया है कि मामले को दबाने के काफी प्रयास किये गए।

विदेशी करेंसी का लालच देकर कारोबारी से 3.50 लाख की ठगी

अजमेर, (कासं)। अलवर गेट थाना क्षेत्र में रहने वाले एक कारोबारी को शातिर ठगों द्वारा विदेशी करेंसी दिरहम आधी कीमत पर देने का लालच देकर करीब साढ़े तीन लाख रुपए की ठगी कर शिकार बनाने का मामला सामने आया है। शातिर ठग कारोबारी को नकली विदेशी करेंसी के नाम पर कागज की गड्डियां थमाकर फरार हो गए। पीड़ित ने पुलिस को अज्ञात शातिर ठगों के खिलाफ शिकायत देते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर सीसीटीवी फुटेज के आधार पर ठगों की तलाश शुरू कर दी है।

- **शातिर ठग कारोबारी को नकली विदेशी करेंसी के नाम पर कागज की गड्डियां थमाकर फरार हो गए**

अलवर गेट थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित कड़ैल निवासी ऑप्टिकल कारोबारी शमशुद्दीन ने पुलिस को दी रिपोर्ट में बताया कि उसकी दुकान पर एक महिला दो युवकों के साथ खरीदारी करने आई थी।

महिला ने यूएई की करेंसी दिरहम दिखाते हुए कहा कि वह आधी कीमत पर बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा दे सकती है। कारोबारी ने शक जाहिर किया तो महिला ने कहा कि वह जांच करवा सकता है। पुष्कर में मुद्रा विशेषज्ञों से पुष्टि कराने पर नोट असली निकला, जिससे कारोबारी शमशुद्दीन ने उन पर भरोसा कर लिया और इसके बाद महिला ने कारोबारी को अजमेर बुलाया और वह साढ़े तीन लाख रुपए लेकर नसीराबाद रोड स्थित नगरा पहुंचा, जहां उसे दो युवक मिले जिन्होंने खुद को महिला का सहयोगी बताया। युवकों ने बैग में दिरहम की गड्डियां दिखाईं और जल्दबाजी में रकम लेकर पास की खालसा गली में चले गए। जब कारोबारी ने बैग की जांच की, तो उसमें कागज की गड्डियां निकली। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस सक्रिय हो गई और सीसीटीवी कैमरों की मदद से संदिग्धों की पहचान कर जांच शुरू कर दी गई है।

चार नकाबपोश बदमाशों ने जेवरात व्यवसायी को लूटा

नोखा, (निसं)। कस्बे में देर रात एक जेवरात व्यापारी अपनी दुकान बंद कर घर जा रहा था। तभी बाइपास सड़क पर अज्ञात बदमाशों ने उस पर हमला कर दिया और सोने-चांदी से भरा बैग छीनकर फरार हो गए।

- **35 ग्राम सोना और ढाई किलो चांदी के जेवर से भरा बैग छीनकर फरार हुए**

जानकारी के अनुसार हियांदेसर गांव निवासी देवीलाल सोनी की जेवरात की दुकान नोखा गांव से बाइपास को जोड़ने वाले सड़क मार्ग पर स्थित है। वह हमेशा की तरह रात दुकान बंद कर गांव की ओर रवाना हुआ। इसी दौरान बाइपास सड़क मार्ग पर दो बाइकों पर सवार चार युवक आए, जिनके मुंह कपड़े से ढके हुए थे। उन्होंने देवीलाल को धक्का देकर गिरा दिया और सोने-चांदी से भरा बैग छीनकर फरार हो गए। अब तक मिली जानकारी के अनुसार, बैग में 35 ग्राम सोना और ढाई किलो चांदी के जेवरात थे, जिनकी कीमत लगभग 8 से 10 लाख रुपए बताई जा रही है। घटना की जानकारी मिलने पर नोखा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और अज्ञात लुटेरों की तलाश शुरू कर दी गई है। पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच प्रारंभ की है। थाना अधिकारी अमित स्वामी ने बताया कि लूट की सूचना मिली है और मामले की जांच की जा रही है।

खेत की कंटीली बाड़ में आग लगी

राजसमंद, (निसं)। कुंवारिया थाना क्षेत्र के फियावडी पंचायत के गांडरियावास गांव में एक खेत की कंटीली बाड़ में आग लगने से किसानों में अफरा-तफरी मच गई। यह घटना बालूराम और रामलाल गाडरी के खेत में हुई, जहां लगभग 300 फीट लंबी कंटीली बाड़ जलकर राख हो गई। जानकारी के अनुसार, शनिवार सुबह किसान अपने खेत पर काम कर रहे थे तभी अचानक बाड में आग लग गई। आग इतनी तेजी से फैली कि बाड़ के पास खड़े अंग्रेजी बबूल के पेड़ भी इसकी चपेट में आ गए। इतना ही नहीं, नीलगायों से फसल बचाने के लिए खेत के आगे लगाई गई लोहे की जाली भी आग की भेंट चढ़ गई, जिससे किसानों को नुकसान हुआ।

पिस्टल लेकर घूम रहा युवक गिरफ्तार

पुलिस की नाकाबंदी देख भागने लगा, घेराबंदी कर पकड़ा

पुलिस ने पिस्टल लेकर घूम रहे युवक को गिरफ्तार किया।

कपासन, (निसं)। कपासन में पुलिस ने अवैध हथियार तस्करी के खिलाफ चल रहे विशेष अभियान में एक युवक को पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया है। एसपी सुधीर जोशी के निर्देशन में चलाए जा रहे इस अभियान के तहत ये कार्रवाई की गई।

एएसपी सरिता सिंह और डीएसपी हरजीलाल यादव के सुपरविजन में मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने कार्रवाई की। सूचना थी कि एक युवक अवैध हथियार लेकर कपासन से सणयारड़ा रोड की तरफ जा रहा है। पुलिस ने तालाब की पाल पर नाकाबंदी कर दी। नाकाबंदी के दौरान युवक पैदल आता दिखा। पुलिस को देखकर वो भागने लगा। पुलिस ने घेराबंदी कर मोमिन मोहल्ला, कपासन निवासी शबीर अंसारी (21) को गिरफ्तार कर लिया है। पूछताछ में शबीर संतोषजनक जवाब नहीं दे सका। तलाशी में उसके पास से एक पिस्टल बरामद हुई। उसके पास पिस्टल रखने के वैध दस्तावेज नहीं मिले। पुलिस ने पिस्टल जब्त कर शबीर को गिरफ्तार कर लिया। थाना कपासन में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी गई है। इस कार्रवाई में शंकर लाल, लक्ष्मीनारायण, रामपाल, देवीलाल, युवराज सिंह और जितेन्द्र की विशेष भूमिका रही।

अवैध पत्थर परिवहन करते तीन ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

सांभरझील, (निसं)। उप महानिरीक्षक आनन्द शर्मा की निर्देशानुसार थानाधिकारी नरायना धर्म सिंह के नेतृत्व में पुलिस टीम का गठन कर अवैध पत्थर परिवहन करने वालों के खिलाफ ठोस कदम उठाते हुए शिकंजा कसा। पुलिस ने बताया कि कार्रवाई करते हुए साखुन चौकी के पास सिपुरा रोड़ से अवैध पत्थर भरकर परिवहन कर रहे तीन ट्रैक्टर-ट्रॉली को पत्थरों सहित जब्त किया। चालक को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए साखून से हटपुरा रोड़से अवैध पत्थर भर कर परिवहन कर रहे एक बिना नम्बरी ट्रैक्टर ट्रोली को जब्त किया गया व चालक को गिरफ्तार किया गया है। वहीं नरैना में पुलिया के पास अवैध शराब का बेचान करते एक आरोपी को गिरफ्तार कर कब्जे से 48 पव्वे देशी शराब के जब्त किए गए हैं। गिरफ्तार किए गए आरोपी नानूराम पुत्र पांचूराम माली, रामकुंवार पुत्र कल्याण बागरिया, राकेश पुत्र रामचन्द बागरिया, किशनलाल पुत्र भैरुराम हैं।

नकबजनी मामले में वांटेड गिरफ्तार, 37 तोला सोने के जेवरात बरामद

उदयपुर, (निसं)। सविना थाना पुलिस ने फ्लेट में नकबजनी करने के मामले में फरार आरोपी को गिरफ्तार किया है।

प्रकरण के अनुसार पीड़ित मुकेश पुत्र मांगीलाल चौधरी निवासी पीपलखेडा डूंगला चित्तौड़गढ़ हॉल फ्लेट नं. 401 बी ब्लॉक कृष्णांगन अपार्टमेंट न्यू विद्यानगर सेक्टर 4 हिरणमगरी ने हिरणमगरी पुलिस थाने पर रिपोर्ट दी, जिसमें उसने बताया कि 20 मई 2023 को मेरी पत्नी बच्चों सहित मेरे ससुराल धुणीमाता डबोक चले गए एवं 28 मई को मैं आवश्यक कार्य होने से जयपुर चला गया। 29 को सांय मेरे आफिस स्टाफ जितेन्द्र सिरवी को फ्लेट देखने भेजा था। 30 मई को दूध देने वाले रामलाल ने फोन कर मकान का ताला टूटा होने की सूचना दी। इस पर पत्नी दिपिका को वहां भेजा तो ताला टूटा हुआ एवं कमरों में सामान बिखरा पड़ा था। अलमारी से मेरे सात लाख तथा मित्रों से कारोबार के लिए उधार लिए 33 लाख कुल 40 लाख नकदी व 37 तोला सोने के जेवरात गायब थे। इस मामले में पुलिस ने चार आरोपियों को पूर्व में गिरफ्तार कर जेल भिजवाया था। इस मामले में जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक छगन पुरोहित के सुपरविजन में सविना थानाधिकारी राव अजयसिंह के नेतृत्व गिरफ्तार आरोपियों से की गई पूछताछ में पता चला कि शातिर नकबजन रमेश उर्फ रम्मू उर्फ रामू ने प्रकरण का माल गौरव जैन को बेचना बताया। इस पर शातिर अभियुक्त गौरव जैन पुत्र गजेन्द्र जैन निवासी बोरी अलीराजपुरा एमपी हॉल जगदम्बा नगर डी गिरधारीपुरा सांगानेर जयपुर को केन्द्रीय कारागृह विशाखापट्टनम आंध्रप्रदेश से जरिये प्रोडेक्शन वारंट गिरफ्तार कर 37 तोला सोने के जेवरात बरामद किए। आरोपी के खिलाफ कई जगहों से चोरी का माल खरीदने के प्रकरण दर्ज हैं। जिसकी पुलिस तलाश में थी। इस मामले में अब तक चोरी किए 37 तोला सोने के जेवरात व 20 लाख रूपये नकदी बरामद हो चुकी है।

भीड़ ने पिकअप वाहन में आग लगाई

भीलवाड़ा, (निसं)। मांडल थाना क्षेत्र में गोरक्षा के नाम पर हिंसा की एक गंभीर घटना सामने आई है। बीती रात को फुलिया खुर्द गांव निवासी राजू लुहार, नाहर मोहम्मद (प्रतापगढ़ निवासी), और गोपाल रैगर (पिकअप चालक) हमीरगढ़ क्षेत्र से दो जर्सी गाय और एक बछड़ा खरीदकर पिकअप वाहन में लेकर फुलिया खुर्द लौट रहे थे। इसी दौरान मांडल पुलिस चौकी के पास कुछ लोगों ने उनकी पिकअप को जबरन रुकवा लिया। पिकअप में सवार लोगों ने उन लोगों को समझाने की कोशिश की कि उन्होंने पशुओं को कानूनी तरीके से खरीदा है और किसी प्रकार की अवैध गतिविधि नहीं हो रही है। बावजूद इसके, भीड़ ने उनकी बात नहीं मानी। जब स्थिति तनावपूर्ण होती गई, तब सवार लोगों ने स्वयं ही नजदीकी मांडल पुलिस चौकी जाकर मामले की जानकारी दी।

चौकी पर मौजूद पुलिसकर्मियों ने पूरी स्थिति की जांच कर पशुओं की खरीद की जानकारी ली और यह स्पष्ट किया कि सभी गतिविधियां वैध हैं। इसके बाद पुलिस ने पिकअप को आगे बढ़ने की अनुमति दे दी। हालांकि, चौकी से कुछ ही दूरी पर एक बार फिर भीड़ इकट्ठा हो गई और उन्होंने पिकअप को दोबारा रोक लिया। इसके बाद स्थिति हिंसक हो गई। भीड़ ने वाहन में सवार तीनों लोगों को नीचे उतारकर पिकअप वाहन में आग लगा दी।

ईशान किशन ने 18वें ओवर की पांचवीं बॉल पर एक हाथ से सिक्स लगा दिया। भुवनेश्वर ने गेंद मिडिल स्टंप की ओर आती एक लो फुल टॉस फेंकी। ईशान किशन घुटनों पर आकर खेले और बल्ले से उनका हाथ तक छूट गया।

भारतीय बल्लेबाज, मैच के दौरान एक हाथ से सिक्स लगाया।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शुभमन गिल

बल्लेबाज शुभमन गिल भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान बनाए गए हैं। ऋषभ पंत उप-कप्तान चुने गए हैं। ने शनिवार को मुंबई में हुई मीटिंग में इसका ऐलान किया। साथ ही इंग्लैंड दौरे के लिए 18 सदस्यीय टीम की घोषणा भी हुई। 20 जून से शुरू हो रहे इंग्लैंड दौरे में भारत को 5 टेस्ट खेलने हैं। विराट कोहली और रोहित शर्मा के रिटायरमेंट के बाद टीम में साई सुदर्शन और करुण नायर को जगह मिली है। वहीं शार्दुल ठाकुर की टीम में वापसी हुई है।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिस्टियानो रोनाल्डो और लियोनेल मेसी पुरुषों के फुटबॉल में शीर्ष दो सक्रिय अंतरराष्ट्रीय गोल स्कोरर हैं।

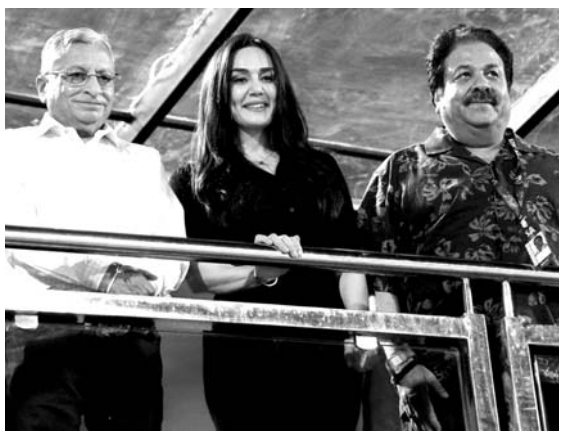

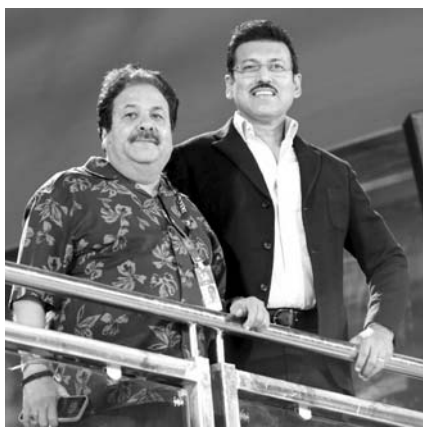

दिल्ली ने पंजाब को 6 विकेट से हराया

टॉप-2 फिनिश की उम्मीदें कम, रिजवी ने फिफ्टी लगाई, मुस्तफिजुर को तीन विकेट

जयपुर, 24 मई। दिल्ली कैपिटल्स ने के 66वें मैच में पंजाब किंग्स को 6 विकेट से हरा दिया। इस हार ने प्लेऑफ में पहुंच चुकी का टॉप-2 में फिनिश करना मुश्किल कर दिया। वहीं दिल्ली ने 15 पॉइंट्स के साथ 5वें नंबर पर रहकर अपना लीग स्टेज फिनिश किया। टीम प्लेऑफ में जगह नहीं बना सकी।

जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में शनिवार को दिल्ली ने बॉलिंग चुनी। पंजाब ने 8 विकेट खोकर 206 रन बनाए। श्रेयस अय्यर ने 53 और मार्कस स्टोयनिस ने 46 रन बनाए। दिल्ली ने 19.3 ओवर में 4 विकेट खोकर टारगेट हासिल कर लिया। समीर रिजवी ने फिफ्टी लगाई। करुण नायर ने 44 रन बनाए। टीम से मुस्तफिजुर रहमान को 3 विकेट मिले।

20वें ओवर की तीसरी गेंद पर समीर रिजवी ने मार्कस स्टोयनिस के खिलाफ छक्का लगाया और टीम को 6 विकेट से जीत दिला दी। रिजवी ने 5 छक्के लगाकर 58 रन बनाए।

19वें ओवर में समीर रिजवी ने अर्शदीप सिंह के खिलाफ सिंगल लिया और 22 गेंद पर अपनी पहली फिफ्टी पूरी कर ली। उन्होंने अपनी पारी में 3 चौके और 4 छक्के लगाए।दिल्ली ने 15वें ओवर में पांचवां विकेट गंवाया। ओवर की आखिरी बॉल हरप्रीत बरार ने यॉर्कर फेंकी, करुण नायर स्वीप शॉट खेलने गए, लेकिन बोल्ड हो गए। उन्होंने 44 रन बनाए।

करुण नायर और समीर रिजवी ने 14वें ओवर में चौथे विकेट के लिए फिफ्टी पार्टनरशिप कर ली। दिल्ली ने 93 रन के स्कोर पर तीसरा विकेट गंवाया था। टीम ने 15वें ओवर में 150 रन भी पूरे कर लिए।

इंगलिश, स्टोइनिस की पंजाब किंग्स में वापसी, दिल्ली करेगी गेंदबाजी

नई दिल्ली, 24 मई। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 66वें मैच में शनिवार को दिल्ली कैपिटल्स ने टॉस जीतकर पंजाब किंग्स के खिलाफ पहले

क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। जोश इंगलिस और मार्कस स्टोइनिस की पंजाब किंग्स के अंतिम एकादश में वापसी हुई है। सवाई मानसिंह स्टेडियम में ऑस्ट्रेलियाई जोड़ी की वापसी का स्वागत करते हुए कप्तान श्रेयस अय्यर ने कहा टीम लीग के अंतिम चरण में लय बनाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। हम यहां से लय बनाना चाहते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन कर रहा है। इस बीच, दिल्ली के कप्तान फाफ डु प्लेसिस ने अपने सीजन के उतार-चढ़ाव को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, हम गेंदबाजी करेंगे। हम एक अतिरिक्त बल्लेबाज खेल रहे हैं। इससे लक्ष्य का पीछा करने में मदद मिलती है। हमने अच्छी शुरुआत की, फिर उतार-चढ़ाव भरे दौर से गुज़रे। पंजाब की नज़र शीर्ष दो में जगह बनाने पर है और दिल्ली पांचवें स्थान पर जगह बनाने की कोशिश कर रही है।

शुभमन गिल पंजाब से भारत टेस्ट टीम के तीसरे कप्तान बने

स्कूल की प्रिंसिपल बोली- शुभमन गिल 40 मिनट के पीरियड में आउट नहीं होता था

नई दिल्ली, 24 मई। पंजाब के फाजिल्का के शुभमन गिल भारतीय टेस्ट टीम के नए कप्तान बनाए गए हैं। करीब 47 साल के बाद पंजाब के क्रिकेटर को ये कमान सौंपी गई है। 25 साल के शुभमन गिल जून में होने वाले इंग्लैंड दौरे में कप्तानी करेंगे। वे पंजाब से बनाए गए तीसरे कप्तान बने। उनसे पहले लाला अमरनाथ और बिशन सिंह बेदी टेस्ट में कप्तानी कर चुके हैं। गिल के कप्तान बनने के बाद उनके पैतृक गांव जैमल सिंह वाला और मोहाली के जिस स्कूल में पढ़े, वहां जश्न का माहौल है। गिल ने मोहाली के फेज-10 में स्थित क्रिकेट स्टेडियम से मात्र 500 मीटर की दूरी पर स्थित मानव मंगल स्मार्ट स्कूल में दूसरी से लेकर दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की।

प्रिंसिपल और शिक्षकों ने कहा कि चौथी कक्षा से गिल ने क्रिकेट खेलना शुरू किया। 40 मिनट का स्पोर्ट्स पीरियड होता था और इस दौरान वह आउट नहीं होता था। गिल के कोच ने कहा कि उसे क्रिकेट से बहुत लगाव है। वह कभी प्रैक्टिस से छुट्टी नहीं लेता था। प्रिंसिपल बोलीं- चौथी कक्षा से शुरू किया था क्रिकेट प्रिंसिपल कविता मलिक ने बताया कि शुभमन गिल चौथी कक्षा से ही क्रिकेट खेलने लगा था। 40 मिनट का स्पोर्ट्स पीरियड होता था और इस दौरान वह आउट नहीं होता था। उसका यही शौक आज उसे इंडिया टीम में कैप्टन के पद पर ले आया। जिस समय शुभमन गिल इंडिया टीम में सिलेक्ट हुआ था, तब भी वह खुद और स्कूल स्टाफ उसके घर जाकर शुभकामनाएं देकर आए थे। अब इंडिया टीम का कप्तान बनने के बाद स्कूल के साथ इंडिया का नाम भी शुभमन गिल रोशन करेगा।

क्लास टीचर बोलीं- पढ़ाई में बहुत ही अच्छा रहा गिल शुभमन गिल की 10वीं कक्षा की टीचर शैलेंद्र कौर ने बताया कि वह पढ़ाई में बहुत ही अच्छा रहा और किसी भी तरह की कोई शरारत नहीं करता था। वह क्लास का होनहार स्टूडेंट था। शुभमन क्रिकेट के साथ-साथ पढ़ाई में पूरी मेहनत करता था। गिल ने आज पंजाब ही नहीं देश का नाम भी रोशन किया है। कोच बोले- गिल ने एक भी दिन छुट्टी नहीं की वहीं गिल के कोच दिनेश ने कहा कि वह उनके पास पीसीए स्टेडियम में अंडर-14 में खेलने के लिए आया था। वह बैटिंग सबसे ज्यादा करता था। उसमें क्रिकेट को लेकर काफी ज्यादा लगाव है। प्रैक्टिस के दौरान एक दिन भी छुट्टी नहीं की। रोजाना ग्राउंड पर आता था और पूरी प्रैक्टिस करता था।

क्रिकेट मैच के दौरान मैदान में एसआई भर्ती रद्द करने के नारे लगे

प्रीति जिंटा ने दर्शकों पर फेंकी पंजाब किंग्स की टी-शर्ट

जयपुर, 24 मई। सवाई मानसिंह स्टेडियम में रोचक नजारा देखने को मिला जब हनुमान बेनीवाल के समर्थक एसआई भर्ती रद्द करने के नारे लगाने लगे। अचानक हुए इस घटनाक्रम से दर्शकों के साथ ही पुलिसकर्मी भी हरकत में आ गए और बडी मुश्किल से उन समर्थकों को शांत करवाया। पंजाब किंग्स के मालकिन प्रीति जिंटा पूरे समय मैदान के बाहर दर्शक दीर्घा में मौजूद थी। उन्होंने दशकों की खूब हौसला अफजाई की । कुछ मौका ऐसे आए जब उन्होंने पंजाब किंग्स की टी-शर्ट दर्शकों में फेंकी जिसको लेने को लेकर युवा वर्ग में खासा उत्साह नजर आया। पंजाब किंग्स ने इस बार अपना होम ठाउंड जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम को बना लिया था। इसको देखते हुए इस बार स्टेडियम का रंग रूप ही बदला बदला सा नजर आया। सभी जगह पंजाब किंग्स के बैनर और होर्डिंग नजर आ रहे थे। राजस्थान रॉयल्स इस मैच का हिस्सा नहीं था लेकिन फिर भी दर्शकों में काफी उत्साह था। हालांकि ईस्ट और वेस्ट के स्टैंड्स की काफी सीटें खाली पड़ी थी। मुकाबले में युवा और खेल मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड भी पूरे समय मौजूद थे।

पाटीदार और कमिंस पर धीमी ओवर गति के लिए जुर्माना

लखनऊ, 24 मई। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के कप्तान रजत पाटीदार पर सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के मैच में धीमी ओवर गति के लिये जुर्माना लगाया गया है। शुक्रवार रात भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी एकाना क्रिकेट स्टेडियम के मैच नंबर 65 के दौरान हैदराबाद के खिलाफ आरसीबी पर धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिये यह जुर्माना लगाया गया है। आईपीएल की आचार संहिता के तहत न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित उनकी टीम का सीजन का दूसरा अपराध था, इसलिए पाटीदार पर 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। इम्पैक्ट प्लेयर समेत प्लेइंग इलेवन के बाकी सदस्यों पर व्यक्तिगत रूप से छह लाख रुपये या उनकी संबंधित मैच फीस का 25 प्रतिशत, जो भी कम हो, का जुर्माना लगाया गया। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस पर उनकी टीम की धीमी ओवर गति के कारण जुर्माना लगाया गया है।यह आईपीएल आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत उनकी टीम का इस सीजन का पहला अपराध था।

जालोर के छह खिलाड़ी राष्ट्रीय सब जूनियर वुशू प्रतियोगिता के लिए हुए रवाना

जालोर, 24 मई। तमिनलाडू के नमक्कल जिले में आयोजित होने वाली 25वीं राष्ट्रीय सब जूनियर वुशू प्रतियोगिता के लिए जालोर के 6 खिलाडी शनिवार को रवाना हुए। भारतीय वुशू संघ के तत्वावधान में राष्ट्रीय प्रतियोगिता 26 से 31 मई तक केएसआर इंजीनियरिंग कॉलेज, नमक्कल जिले में आयोजित की जाएगी।जहां भारत के सभी राज्यों से चयनित वुशू खिलाडी भाग लेंगे। जिला वुशू संघ के महासचिव कन्हैयालाल मिश्रा व अध्यक्ष शिवदत्त आर्य ने बताया कि जालोर के मयंक भादरु बालकों के 24 किलो भारवर्ग में, रुद्राक्ष 36 किलो भारवर्ग में, प्रियांशु गहलोत 39 किलो भारवर्ग में भाग लेंगे। वहीं बालिकाओं में काव्या गुप्ता 22 किलो,आराध्या सुंदेशा 26 किलो व वैष्णवी सिंह 34 किलो भारवर्ग में राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेंगी। गौरतलब है कि राष्ट्रीय वुशू प्रतियोगिता में चयनित सभी खिलाडी आर्य वीर दल व वीर वीरमदेव स्पोर्ट्स एकेडमी में वुशू कोच देवेश आर्य व प्रितम सिंह राठौड के सानिध्य में नियमित अभ्यास करते हैं।

एक-दो सीरीज के लिए कप्तान नहीं चुनते, हमें उम्मीद हमने सही खिलाड़ी को चुना : अगरकर

नई दिल्ली, 24 मई। अजीत अगरकर ने शनिवार को इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टीम की घोषणा की। रोहित के टेस्ट से संन्यास लेने के बाद शुभमन गिल टीम के नए कप्तान और ऋषभ पंत उप-कप्तान चुने गए हैं।

हेड क्वार्टर में टीम का चयन करने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में अगरकर ने रोहित शर्मा-विराट कोहली के संन्यास, मोहम्मद शमी की फिटनेस और जसप्रीत बुमराह के चयन को लेकर बात की।

हमने हर ऑप्शन पर चर्चा की शुभमन के कप्तान चुने जाने पर उन्होंने कहा, हमने हर ऑप्शन पर चर्चा की है। हमें उम्मीद है कि हमने सही खिलाड़ी को चुना है। वह एक शानदार खिलाड़ी हैं और

उन्हें शुभकामनाएं। उन्होंने आगे कहा, आप 1-2 सीरीज के लिए कप्तान नहीं चुनते हैं। आप ऐसी चीज में निवेश करना चाहते हैं जो हमें आगे बढ़ने में मदद करे। पिछले साल से हमने शुभमन को देखा है। हमने ड्रेसिंग रूम से भी फीडबैक लिया है। हम बहुत आश्वस्त हैं और यही कारण है कि हम उन्हें चुने हैं।

कोहली ने अप्रैल में ही बना लिया था मन रोहित शर्मा ने 7 मई और विराट कोहली ने 12 मई को टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया था। विराट के रिटायरमेंट पर बात करते हुए अगरकर ने कहा, विराट ने अप्रैल की शुरुआत में हमसे संपर्क किया और कहा कि उन्होंने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने का मन बना लिया है। उन्होंने रोहित के लिए कहा, रोहित शर्मा पिछले कुछ सालों से भारत के कप्तान रहे हैं। वह भारतीय क्रिकेट के दिग्गज हैं। हम टेस्ट क्रिकेट में उनकी कमी महसूस करेंगे।

शानदार तरीके से अभियान का समापन करने उतरेगी केकेआर और एसआरएच

नई दिल्ली, 24 मई। सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) रविवार को यहां अरुण जेटली स्टेडियम में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 सीजन के अपने अंतिम ग्रुप स्टेज मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से भिड़ेगी। दोनो ही टीमे प्लेऑफ के लिए दावेदार नहीं है, जिससे मैच नंबर 68 प्रतिष्ठा की लड़ाई बन गया है।

हालांकि, दोनों फ्रेंचाइजी इस साल के टूर्नामेंट में विपरीत प्रदर्शन के बावजूद सकारात्मक प्रदर्शन के साथ अभियान को समाप्त करना चाहेंगी। सनराइजर्स हैदराबाद ने खराब शुरुआत के बावजूद अपने पिछले चार मैचों में से तीन में जीत के साथ शानदार प्रदर्शन किया है अपने पिछले मैच में, हैदराबाद ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु पर 42 रनों की शानदार जीत दर्ज की, जिसमें ईशान किशन की 48 गेंदों पर 94 रनों की तूफानी पारी शामिल थी। सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के धमाकेदार फॉर्म ने टीम की वापसी में अहम भूमिका निभाई है, जिन्होंने 193 के स्ट्राइक रेट से 12 पारियों में 407 रन बनाए हैं। इस बीच, गत चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) इस सीजन में लय हासिल करने में विफल रही है और 13 मैचों में से पांच जीत के साथ अंक तालिका में सातवें स्थान पर है।

आरसीबी के खिलाफ उनका सबसे हालिया मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया, जिससे उनकी प्लेऑफ की उम्मीदें खत्म हो गईं। अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे 375 रनों के साथ केकेआर के मुख्य खिलाड़ी रहे हैं, जबकि आंद्रे रसेल ने लगातार प्रभावशाली पारियों के साथ फॉर्म की झलक दिखाई है। हालांकि, बल्लेबाजी और डेथ बॉलिंग दोनों में असंगतता ने पूरे सीजन में नाइट राइडर्स को नुकसान पहुंचाया है। अरुण जेटली स्टेडियम में बल्लेबाजों को ज़्यादा मदद मिलने की उम्मीद है। इस मैदान पर पिछले दो आईपीएल 2025 मुकाबलों में 199 और 187 रनों का स्कोर आसानी से हासिल किया गया था, जो टॉस जीतने पर पहले गेंदबाज़ी करने की प्राथमिकता को दर्शाता है। रविवार का मौसम गर्म और नम रहने का पूर्वानुमान है, बारिश की कोई आशंका नहीं है।

आंकड़ों के अनुसार, केकेआर ने पिछले छह मुकाबलों में से चार में जीत हासिल करते हुए हाल के रिकॉर्ड पर अपना दबदबा बनाया है। हालांकि, एसआरएच इस समय बेहतर स्थिति में दिख रहा है, क्योंकि उसके खिलाड़ी फॉर्म में हैं और जीत की लय उनके पीछे है। विश्लेषकों का मानना है कि एसआरएच अपने अभियान का अंत शानदार तरीके से करेगा।

रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता शुरू, 52 व्यापारिक टीमों के होंगे मैच

उदयपुर, 24 मई। चैंबर ऑफ कॉमर्स, उदयपुर डिवीजन द्वारा शहर में आयोजित रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता का शनिवार को शुभारंभ हुआ। प्रतियोगिता 24 मई से 31 मई तक फील्डक्लब मैदान पर होगी। जिसमें उदयपुर के विभिन्न व्यापारिक संगठनों की कुल 52 टीमें भाग ले रही हैं।

क्रिकेट प्रतियोगिता संयोजक संजय भंडारी ने बताया कि प्रतियोगिता का शुभारंभ अंतराष्ट्रीय अंपायर रघुवीर सिंह राठौड़, चित्तौड़गढ़ सांसद सी.पी. जोशी, राजपरिवार सदस्य डॉ. लक्ष्यराज सिंह मेवाड़, चैंबर ऑफ कॉमर्स अध्यक्ष पारस सिंघवी द्वारा गुब्बारे उड़ाकर किया। इस दौरान राज्यसभा सांसद चुन्नीलाल गरासिया, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा, उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन, भाजपा शहर जिलाध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़, कांग्रेस जिलाध्यक्ष फतह सिंह राठौड़, चैंबर के कार्यकारी अध्यक्ष हिम्मत बड़ाला, महासचिव राजमल जैन सहित शहर के कई प्रतिष्ठित गणमान्य, व्यापारीगण आदि उपस्थित रहे। चैंबर के कार्यकारी अध्यक्ष हिम्मत बड़ाला ने बताया कि प्रतियोगिता शाम 6 बजे शुरू होकर देर रात 1 बजे तक चलेंगे। प्रचार प्रसार मंत्री राकेश जैन ने बताया कि 24 मई को प्रतियोगिता की शुरुआत बेहद रोमांचक मुकाबलों के साथ हुई। पहला मैच शाम 6 बजे टिंबर एंड प्लाईवुड मर्चेंट वेलफेयर सोसाइटी बनाम सिंधी बाजार व्यापार मंडल के बीच खेला गया। दूसरा मैच 7 बजे सैनिटरी डीलर्स एसोसिएशन बनाम होटल एसोसिएशन, तीसरा मैच 8 बजे उदयपुर स्टेशनर्स एंड बुक सेलर्स एसोसिएशन बनाम उदयपुर कंप्यूटर ट्रेडर्स एसोसिएशन (बी) के बीच हुआ। रात 9 बजे उदयपुर इलेक्ट्रिकल एसोसिएशन बनाम होजरी एसोसिएशन,10 बजे उदयपुर ऑटोमोबाइल डीलर एसोसिएशन बनाम पारस आत्मीयजन, और अंतिम मैच रात 11 बजे न्यू उदयपुर मार्केट एसोसिएशन बनाम उदयपुर जिला केमिस्ट ऑर्गेनाइजेशन के बीच खेला गया।

हरियाणा ने कबड्डी में पुरुष और महिला दोनों वर्गों में जीते स्वर्ण पदक

दीव, 23 मई। खेलो इंडिया बीच गेम्स 2025 शुक्रवार को खेले गए कबड्डी फाइनल मुकाबलों हरियाणा की महिला और पुरुष वर्ग की टीमों ने स्वर्ण पदक जीते। आज सुबह घोघला बीच पर खेले पुरुष वर्ग के फाइनल में हरियाणा के कप्तान मोनू हुड्डा की अगुवाई में टीम ने राजस्थान पर पूरी तरह से दबदबा बनाते हुए 48-29 से एकतरफा जीत दर्ज की।

इस हार के साथ राजस्थान को रजत पदक से संतोष करना पड़ा। महाराष्ट्र को दोनों वर्गों में कांस्य पदक मिला। दो सीजन तक प्रो कबड्डी में हरियाणा स्टीलर्स की ओर से खेल चुके 23 वर्षीय मोनू हुड्डावर्तमान में साईसोनीपत में प्रशिक्षण ले रहे हैं। मोनू ने मैच के बाद साई मीडिया से कहा, यहां और मैट पर खेलने में तकनीकी अंतर है। यहां हर रेड 'डू ऑर डाई' होती है और हमें रस्सी पार नहीं करनी होती। हमें अंदर ही रहना होता है। उन्होंने कहा, यह हमारे लिए गर्व की बात है कि हमें यहां खेलने का मौका मिला और हम स्वर्ण पदक जीत पाए।

बीरेन्द्र लाकड़ा बने भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम में सहायक कोच

नई दिल्ली, 24 मई। पूर्व दिग्गज खिलाड़ी बीरेंद्र लाकड़ा को भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम में सहायक कोच के रूप में शामिल किया गया है। वह दिग्गज गोलकीपर और मौजूदा कोच पीआर श्रीजेश के साथ मिलकर काम करेंगे। 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक चेन्नई और मदुरै में होने वाली एफआईएच हॉकी पुरुष जूनियर विश्व कप 2025 से पहले लाकड़ा की नियुक्ति महत्वपूर्ण है। लाकड़ा ने 2010 में भारत के लिए पदार्पण किया और देश के सबसे विश्वसनीय डिफेंडरों में से एक बन गए। उन्होंने दो ओलंपिक खेलों लंदन 2012 और टोक्यो 2020 में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ भारत ने ऐतिहासिक कांस्य पदक जीता।

एक दशक से अधिक के शानदार करियर में, लाकड़ा ने विश्व कप, एशियाई खेलों, राष्ट्रमंडल खेलों और अन्य प्रमुख टूर्नामेंटों में भारत के अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके शानदार करियर की उपलब्धियों में 2014 एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक, 2018 में कांस्य पदक, 2013 एशिया कप में रजत पदक, 2014 राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक और 2018 चैंपियंस ट्रॉफी में रजत पदक शामिल हैं। वह 2015 में विश्व लीग फाइनल (रायपुर और भुवनेश्वर) में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम का भी हिस्सा थे।

ओडिशा में जन्मे लाकड़ा ने हीरो हॉकी इंडिया लीग 2024-25 में टीम गोनासिका के लिए खेलते हुए अपनी फिटनेस और जोश का प्रदर्शन किया। अपनी नई भूमिका के बारे में बात करते हुए, बीरेंद्र लाकड़ा ने कहा, ऐसे महत्वपूर्ण समय में भारतीय जूनियर पुरुष टीम का हिस्सा बनना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। मुझे पता है कि भारत की जर्सी पहनने के लिए क्या करना पड़ता है।

27वीं नवीन-नफीस ईनामी राशि लीग कम नॉकआउट क्रिकेट प्रतियोगिता

लोकेन चौधरी, आदित्य भाट, आदित्य चौधरी की शानदार गेंदबाजी से भदौरिया एकेडमी की आसान जीत

जयपुर, 24 मई। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वी नवीन नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज भदौरिया क्रिकेट ग्राउण्ड, सिरसी ग्राम, जयपुर पर खेले गये पूल बी के अन्तिम मैच में भदौरिया क्रिकेट एकेडमी के लोकेन्द्र चौधरी 4 ओवरो में 20 रन पर 3 विकेट, आदित्य भाट 35 रन पर 3 विकेट आदित्य चौधरी 4 ओवर में 1 मेडन 8 रन 2 विकेट निक्की चौहान 28 रन पर 2 विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत दी न्यू जयपुर स्पोर्ट्स एकेडमी को 7 विकेट से हराकर 2 अंक अर्जित किये। टॉस जीतकर दी न्यू जयपुर स्पोर्ट्स एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये अजय शर्मा 44 रन आदित्य छाबड़ा 26 रन लोकेश सैनी 15 रन की मदद से ऑलआउट होने से पूर्व 19 ओवर में 129 रन बनाए। भदौरिया क्रिकेट

एकेडमी के लोकेन्द्र चौधरी 4 ओवरो में 20 रन पर 3 विकेट, आदित्य भाट 35 रन पर 3 विकेट आदित्य चौधरी 4 ओवर में 1 मेडन 8 रन 2 विकेट निक्की चौहान 28 रन पर 2 विकेट ने शानदार गेंदबाजी करने हुए 19 ओवर में पूरी टीम समेट दी। 130 रन के विजय लक्ष्य को लेकर खेलने उतरी भदौरिया एकेडमी ने भवानी सुथार 37 रन, जयेश पंडिता 32 रन नाबाद, अविनाश शर्मा 27 रन, तन्मय तिवाड़ी 18 रन की मदद से विजय लक्ष्य 130 रन 3 विकेट खोकर 14.3 ओवर में हासिल कर 7 विकेट से आसान जीत दर्ज कर ली। गेंदबाजी में दी न्यू जयपुर स्पोर्ट्स एकेडमी की ओर से सुशील सिंघानिया 31 रन पर 2 विकेट आशीष शर्मा 13 रन पर 1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। मैच का मेन ऑफ दी मैच लोकेन्द्र चौधरी भदौरिया एकेडमी रहे।

अरावली क्रिकेट क्लब ने इलेवन स्टार क्रिकेट क्लब को हराया

शोभित मिश्रा का नाबाद शतक

जयपुर, 24 मई । जयपुर जिला क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित अनुराग मिश्रा स्मृति बी डिवीजन लीग के नॉक आउट मुकाबले में आज के एल सैनी स्टेडियम पर दूसरे क्वार्टर फाइनल मैच में अरावली क्रिकेट क्लब ने इलेवन स्टार क्रिकेट क्लब को 10 विकेट से हराकर सेमी फाइनल में प्रवेश किया।

इलेवन स्टार क्रिकेट क्लब ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए गौरव तोड़ावत के 69 रन, क्षितिज शेखावत के 17 रन, हर्षित गौर के 17 रन जुनेद खान के 21 रन से 30.1 ओवर में 154 रनों पर सिमट गई। अरावली क्रिकेट क्लब के लिए हंसराज रोलानिया ने 44 पर 3, जुनेद अगवान ने 1 पर 3, देवेंद्र शर्मा ने 38 पर 2 विकेट लिए।

जवाबी पारी में अरावली क्रिकेट क्लब ने शोभित मिश्रा के 125 रन नाबाद (13 बॉल, 13 चौके व 10 छक्के) व आर्यन भारद्वाज के नाबाद 23 रनों से 15.2 ओवर में बिना विकेट 156 रन बनाकर मैच जीत लिया। तीसरा क्वॉर्टर फाइनल मैच स्टार क्रिकेट एकेडमी व यूनियन क्रिकेट क्लब के मध्य खेला जाएगा।

सायबर ठगी में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जस्टिस अनूप कुमार ढंड की एकलपीठ ने यह आदेश कल्याण मोटर्स की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता भूपेन्द्र पारीक ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता वाहन बेचने और उनकी सर्विस करने वाली फर्म है। याचिकाकर्ता ने पिछले साल दो वाहनों की सर्विस की थी, जिसके बदले वाहन मालिक ने उसके खाते में 55,141 रुपए का भुगतान किया था। वहीं, गत जनवरी माह में बैंक ने पश्चिम बंगाल पुलिस की शिकायत पर उसके चालू खाते को यह कहते हुए फ्रीज कर दिया कि 55,141 रुपए की राशि साइबर ठगी से होते हुए पांचवें बैंक खाते से उसे मिली है। याचिका में कहा गया कि यह राशि उसे सर्विस के बदले अज्ञात व्यक्ति ने दी थी। उसे साइबर ठगी की कोई जानकारी भी नहीं है। वहीं, खाते में आई राशि को फ्रीज करने के बजाए पूरे बैंक खाते को ही फ्रीज करना गलत है। खाता फ्रीज करने के चलते वह अपने कर्मचारियों को वेतन सहित दैनिक खर्चों को नहीं कर पा रहा है और इससे उसका व्यापार पूरी तरह ठप हो गया है। ऐसे में बैंक प्रबंधन को निर्देश दिए जाएं कि वह उसका बैंक खाता डीफ्रीज करे। याचिका पर सुनवाई करते हुए अदालत ने याचिकाकर्ता का बैंक खाता डीफ्रीज करने के आदेश देते हुए, सिर्फ विवादित राशि ही फ्रीज करने को कहा है।

यू-ट्यूबर ज्योति की बांग्लादेश यात्रा पर जाँच एजेन्सियों की नजर

जांच का विषय है: किसके कहने से ज्योति बांग्लादेश गई तथा क्या वहाँ से भी दानिश के सम्पर्क में थी

हिसार, 24 मई। यूट्यूबर ज्योति को बीते दिनों पुलिस ने पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया था। अब हरियाणा पुलिस और केंद्रीय जांच एजेंसियों ने ज्योति मल्होत्रा के बांग्लादेश दौरे को भी जांच के दायरे में ले लिया है। इन्वेस्टिगेशन एजेंसियों के सूत्रों के मुताबिक अब जांच एजेंसियां इस एंगल पर भी जांच कर रही है कि ज्योति किसके कहने पर बांग्लादेश गई थी। क्या ज्योति के बांग्लादेश दौरे पर जाने के पीछे भी पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारी दानिश की साजिश है? जांच एजेंसियां इस बात की भी तस्दीक करने में जुटी हैं कि ज्योति जब बांग्लादेश गई, तब क्या वो पाकिस्तानी दूतावास के अधिकारी दानिश के संपर्क में थी? क्या ज्योति ने बांग्लादेश से दानिश से बात की थी?

ज्योति के बांग्लादेश दौरे की खास बात ये है कि उसने बांग्लादेश की जिस ढाका यूनिवर्सिटी के वीडियो बनाए थे, उसी ढाका यूनिवर्सिटी के छात्रों से अपने वीडियो में ज्योति मल्होत्रा बात करते हुए भी नजर आ रही है। बता दें कि ज्योति साल 2024 के फरवरी महीने में बांग्लादेश गई थी और अगस्त 2024 में बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार का तख्ता पलट हो गया था। बांग्लादेश की शेख हसीना सरकार का तख्ता पलटने में ढाका यूनिवर्सिटी के छात्रों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। दरअसल अब जांच एजेंसियां ज्योति से ये पता लगाने में जुटी हैं कि बांग्लादेश में हुए तख्तापलट में पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी की क्या भूमिका थी और यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को इस बारे में कुछ पता था ?

- ज्योति ने ढाका यूनिवर्सिटी के वीडियो बनाये थे जहाँ के छात्रों ने शेख हसीना की सरकार का तख्ता पलटने में बढ़-चढ़ कर भाग लिया था।

जस्टिस नागरत्ना सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम की सदस्य बनेंगी

नई दिल्ली, 24 मई। भारत की पहली महिला मुख्य न्यायाधीश बनने की दौड़ में शामिल न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना का न्यायमूर्ति अभय एस ओका की सेवानिवृत्ति के बाद सुप्रीम कोर्ट के कोलीजियम का सदस्य बनना तय हो गया है।देश की पांचवीं सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश होने के नाते, न्यायमूर्ति नागरत्ना 25 मई को आधिकारिक रूप से कोलीजियम में शामिल हो जाएंगी।

राहुल गांधी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भारत ने जवाबी कार्रवाई में पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत जम्मू-कश्मीर में आतंकवादी ठिकानों पर सटीक निशाने साधकर हमले किए। इसके बाद पाकिस्तानी सेना ने स्थिति को और उग्र बनाते हुए नागरिक इलाकों और सैन्य ठिकानों पर ड्रोन और मिसाइल हमले शुरू कर दिए। हालांकि भारतीय हवाई सुरक्षा प्रणालियों ने पाकिस्तानी हवाई हमलों को प्रभावी रूप से निष्क्रिय कर दिया, लेकिन पुंछ में पाकिस्तानी सैनिकों की सीमा पार से की गई गोलाबारी में कम से कम 13 निर्दोष नागरिक मारे गए और कई घर क्षतिग्रस्त हुए।

अपनी यात्रा के दौरान, राहुल गांधी ने उन परिवारों से मुलाकात की, जिन्होंने अपने प्रियजनों को इस गोलीबारी में खोया है।

उनके दौरे से पहले, कांग्रेस सांसद और जम्मू-कश्मीर मामलों के एआईसीसी महासचिव सैयद नसीर हुसैन ने कहा, "पाकिस्तान ने जिस तरह से नागरिकों पर हमला किया, उसमें 13 लोगों की मौत हुई और बहुत से लोग घायल हुए, काफी नुकसान हुआ है। इसी कारण राहुल गांधी आज यहां लोगों से मिलने आ रहे हैं। हम चाहते थे कि वे पहले ही आ जाते, लेकिन उन्हें अनुमति नहीं मिल रही थी।"

22 अप्रैल को पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले के बाद भी, राहुल गांधी मृतकों के परिजनों से मिले थे।

सवाई माधोपुर जिला परिवहन अधिकारी गिरफ्तार

जयपुर, 24 मई। एसीबी जयपुर ने 19 मई को सवाईमाधोपुर एसीबी प्रभारी सुरेन्द्र कुमार शर्मा एएसपी एवं दो दलालों को रिश्वत प्रकरण में गिरफ्तार किया गया था। इस प्रकरण में नेतृत्व में कार्रवाई करते हुए जिला परिवहन अधिकारी सवाईमाधोपुर पुन्याराम मीणा को सीबीआई फाटक जगतपुरा से दस्तयाब किया गया। अनुसंधान में, आरोपी की संलिप्तता

- एंटी करप्शन ब्यूरो के ए.एस.पी. सुरेन्द्र शर्मा के मामले में जाँच पड़ताल के बाद जिला परिवहन अधिकारी पुन्या राम मीणा को गिरफ्तार किया गया।

कार्यवाही करते हुये, जिला परिवहन अधिकारी सवाईमाधोपुर आरोपी पुन्याराम मीणा को जांच पड़ताल के पश्चात गिरफ्तार किया गया है।

भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो पुलिस महानिदेशक डॉ. रवि प्रकाश मेहरडा ने बताया कि 19 मई को सवाईमाधोपुर एसीबी के पूर्व प्रभारी और एएसपी सुरेन्द्र कुमार शर्मा एवं दो दलालों को रिश्वत प्रकरण में गिरफ्तार किया गया था। जिसके अनुसरण में, परिवहन विभाग एवं अन्य विभागों के अधिकारी,कर्मचारियों की संलिप्तता की जांच की जा रही है।

जिस पर एसीबी के उपमहानिरीक्षक पुलिस राजेश सिह के पुख्ता साक्ष्य पाये जाने पर उसे गिरफ्तार किया है। आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

नाबालिग से ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किया था। वहीं, करीब पांच माह पहले वह शौच के लिए गई थी, तब अभियुक्त दीपक ने उसका बलात्कार किया, जिससे वह गर्भवती हो गई। रिपोर्ट पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अभियुक्तों को गिरफ्तार कर अदालत में आरोप पत्र पेश किया। इसके साथ ही, पुलिस ने एक महिला सहित, अन्य के खिलाफ जांच लंबित रखी। अदालत में पीड़िता ने बयानों में अपनी कहानी दोहराई। वहीं, अभियुक्तों की ओर से कहा गया कि उनका पीड़िता के परिवार वालों से रुपए के लेनदेन को लेकर झगड़ा था। पीडिता के किसी अन्य व्यक्ति से संबंध थे और उससे वह गर्भवती हो गई थी, जिसे छिपाने के लिए उन पर आरोप लगाया गया है। दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद अदालत ने दोनों अभियुक्तों को सजा और जुर्माने से दंडित किया है।

गाँव को नगर पालिका की...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सुनवाई करते हुए दिए। याचिका में अधिवक्ता तन्मय ढंड ने अदालत को बताया कि राज्य सरकार ने 24 मार्च, 2021 को एक अधिसूचना जारी कर तोडिया का बास गांव को बानसूर नगर पालिका में शामिल किया था। वहीं, अब गत 27 मार्च को बिना कारण इस गांव को नगर पालिका की सीमा से बाहर कर दिया गया। याचिका में कहा गया कि किसी भी ग्राम को एक बार नगर पालिका की सीमा में शामिल करने के बाद उसे नगर पालिका की सीमा से अलग करने की शक्ति, नगर पालिका अधिनियम सहित, अन्य किसी कानून में नहीं है। ऐसे में तोडिया का बास को बानसूर नगर पालिका से बाहर करने वाला राज्य सरकार का आदेश मनमाना और अवैध है। ऐसे में इस आदेश की क्रियान्विति पर रोक लगाकर उसे अवैध घोषित किया जाए।

थरूर विवाद पीछा नहीं...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाहिर करने की शर्त पर, स्वीकार किया कि थरूर की गतिविधियों ने बिहार विधानसभा चुनाव से पहले मोदी की छवि को चुनौती देने की कांग्रेस पार्टी की रणनीति को बाधित किया है, जबकि प्रधानमंत्री मोदी बिहार में "ऑपरेशन सिंदूर" को चुनावी अभियान के रूप में पेश करने जा रहे हैं।

उन्होंने कहा, "जब भाजपा राहुल गांधी का मजाक उड़ा रही है कि वह पहलगाम जैसे गंभीर मुद्दों पर केन्द्र से सवाल कर रहे हैं, ऐसे समय में थरूर का सरकार से मेल खाना सीधे तौर पर भाजपा को ही लाभ पहुँचाता है।"

यह विवाद ऐसे संवेदनशील समय पर खड़ा हुआ है, जब मोदी सरकार "ऑपरेशन सिंदूर" को बिहार में अपने चुनावी समीकरण मजबूत करने के लिए आक्रामक तरीके से प्रमोट कर रही है। जबकि विपक्ष भाजपा के ऊपर राष्ट्रीय सुरक्षा और शासन से जुड़े गंभीर सवालों से बचने का आरोप लगा रहा है।

थरूर ने अब तक इस आंतरिक आलोचना पर कूटनीतिक चुप्पी बनाए रखी है। हालांकि, उनके करीबी सूत्रों का कहना है कि वे इस मिशन में अपनी भूमिका को गैर-राजनीतिक और देशहित से प्रेरित मानते हैं।

पार्टी के अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि यह प्रकरण कांग्रेस के भीतर एक गहरे वैचारिक और पीढ़ीगत अंतर को दर्शाता है। कुछ लोग थरूर की वैश्विक सोच और प्रभाव को पार्टी की ताकत मानते हैं, वहीं, अन्य इसे पार्टी की पारंपरिक संरचना के लिए चुनौती मानते हैं।

कांग्रेस पार्टी इस समय आंतरिक असंतोष और आक्रामक भारतीय जनता पार्टी से जूझ रही है, ऐसे में देखना यह है कि वह किस तरीके से थरूर विवाद को सुलझाएगी, क्योंकि यह तरीका ही आगामी महीनों में पार्टी की एकता और उसकी सार्वजनिक छवि को काफी हद तक प्रभावित कर सकता है।

हार्वर्ड युनिवर्सिटी को अस्थायी ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विश्वविद्यालय के पास मानव स्रोत सामग्री और नमूनों का एक अनमोल भंडार है, जिसे दशकों में संजोया गया है। यह भंडार कई बीमारियों और उनके इलाज पर क्रांतिकारी शोधों के लिए इस्तेमाल हुआ है।

इन नमूनों को लिक्विड नाइट्रोजन फ्रीज़रों में संरक्षित किया गया है और केवल इन्हें सुरक्षित रखने पर ही करोड़ों डॉलर खर्च होते हैं। अब अमेरिकी संघीय सरकार ने इन शोध परियोजनाओं की फंडिंग में कटौती की धमकी दी है, जिससे इन नमूनों को संरक्षित रखना कठिन हो जाएगा।

एक उदाहरण में, दशकों से हार्वर्ड के पब्लिक हेल्थ स्कूल में रक्त, मूत्र और डीएनए के नमूने एकत्र किए गए हैं। नर्सों और अन्य स्वयंसेवकों ने वर्षों तक अपने नमूने दिए हैं, और इस तरह का संग्रह दुनिया में और कहीं नहीं है।

अब इन सभी मानव नमूनों को खतरा है। एक अन्य परियोजना में, कैंसर रोगियों से वर्षों तक ऐसे ही नमूने एकत्र किए गए हैं, जो दशकों और पीढ़ियों के दौरान शरीर की क्रियाविधियों की गहन जानकारी प्रदान करते हैं। इनसे रोगों के व्यवहार को समझने में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

शोधकर्ता बताते हैं कि जहां पहले इन नमूनों से लाभ हुआ था, वहीं, अब नई तकनीकों, जैसे आर्टिफिशल इंटैलिजैंस और उन्नत डेटा विश्लेषण विधियों से इनकी उपयोगिता और बढ़ गई है।

हैल्थ और मैडिकल स्टडीज़ के अलावा, अमेरिकी विश्वविद्यालयों ने भौतिक विज्ञान, रसायन और अन्य विषयों में दीर्घकालिक अनुसंधान परियोजनाएं चलाई हैं।

रिपोर्टों के अनुसार, आधुनिक विज्ञान अब "बड़ी परियोजना" बन चुका है, जिसे केवल कलम और कागज़ से नहीं चलाया जा सकता। बुनियादी शोध अब अत्यधिक महंगा हो चुका है और इसे चलाने के लिए अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं की आवश्यकता होती है। यदि संघीय सरकार द्वारा दी जाने वाली फंडिंग में कटौती की जाती है, तो इन शोध परियोजनाओं को गंभीर नुकसान पहुँचेगा

संभावना है कि ये परियोजनाएं अब अन्य देशों और संस्थानों की ओर पलायन कर जाएँगी। इससे अमेरिका की बुनियादी विज्ञान में गिरावट आना तय माना जा रहा है।

सेवारत कोटे से पीजी करने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आवंटित हुआ। इसमें याचिकाकर्ता दिसंबर 2023 से ही पोस्ट एमबीबीएस डिप्लोमा शिशु रोग की ट्रेनिंग कर रहा है। इसकी सूचना उसने 2 जनवरी 2024 को ही कार्यकारी निदेशक, नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जाम मेडिकल साइंस को दे दी थी, लेकिन 4 मार्च 2025 को उसे एक मैसेज मिला कि उसे वेबसाइट पर पीजी जॉइनिंग अपडेट करनी है। उसने उसी दिन अपनी ज्वाइनिंग को अपडेट करने की प्रक्रिया की, लेकिन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई। कई बार प्रयास करने के बाद भी बिना किसी कारण उसका रजिस्ट्रेशन नहीं किया गया। इससे वह फाइनल एग्जाम का फॉर्म भरने से भी वंचित हो रहा है। याचिका पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

'विकसित राजस्थान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपने हिस्से का पूर्ण जल प्राप्त हो सके। साथ ही, उन्होंने 51.5 किलोमीटर लंबी फिरोजपुर फीडर की लाइनिंग हेतु स्वीकृति शीघ्र प्रदान करने का भी आग्रह किया।

शर्मा ने आग्रह किया कि कालीसिंध और छबड़ा थर्मल परियोजनाओं में अतिरिक्त इकाइयों एवं 3200 मेगावाट की नई थर्मल इकाई की पिट हैड से 500 किलोमीटर से अधिक दूरी होने के कारण राज्य में स्थापना हेतु शिथिलन प्रदान की जाए। साथ ही, उन्होंने साउथ ईस्टर्न कोल फील्ड से दिए जा रहे 20 लाख मीट्रिक टन कोयले को नॉर्दन कोलफील्ड से उपलब्ध करवाने का भी अनुरोध किया।

मुख्यमंत्री ने राज्य में ऊर्जा सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि पीएम कुसुम योजना के कंपोनेंट-ए के तहत राज्य को 5000 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन तथा बैट्री स्टोरेज के लिए 5000 मेगावाट आवर का अतिरिक्त लक्ष्य आवंटित किया जाए। साथ ही, उन्होंने राजस्थान को आवंटित 115 गीगावाट बिजली उत्पादन के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु 40 गीगावाट अतिरिक्त ऊर्जा के इवेक्युएशन हेतु प्लान तत्काल बनाने का अनुरोध किया।

शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व से हमें गहरी प्रेरणा मिली है तथा राज्य स्तर पर हम राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी सभी पहलों को पूरा समर्थन देने के लिए और भी अधिक दृढ़ संकल्पित हुए हैं। शर्मा ने कहा कि दो दिन पहले 22 मई को प्रधानमंत्री के सीमावर्ती बीकानेर जिले में संबोधन के समय जनसाधारण में जो अद्भुत उत्साह एवं राष्ट्रभक्ति का जज्बा देखने को मिला, वैसा भावुक दृश्य मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखा। ये जनता का प्रधानमंत्री के प्रति अटूट विश्वास दर्शाता है।

`राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2009/28296 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600